जयतु जानकी

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

जयतु जानकी

(E version)

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-341-1008-1

दाम : 50 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2024

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र

House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

Jayatu Janakee; A Maithili Novel by Shri.

Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि । काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि ।

जयतु जानकी

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

समर्पण

समस्त मिथिलावासीकेँ

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक

विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

<u>प्रकाशन वर्ष:2021</u>

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

<u>प्रकाशन वर्ष:2022</u>

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2023

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2024

२८ माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९ जयतु जानकी(उपन्यास) ३० यज्ञसेनी(उपन्यास)
प्रकाशन वर्षः२०२५
३१.कथा अखन बाँकी अछि(संस्मरण) ३२. गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह) ३३.सूर्यपुत्र(उपन्यास)
प्रकाशन वर्ष ;२०२६
बिसरि जाएब जरूरी छै(कविता संग्रह)

In English: -

Year of publication:2018

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

3.The Ganges Whispers (English translation of my Maithili Novel,Ham Aabi Rahal Chhee (हम आबि रहल छी)

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्षः२०१९

१.न्याय की गुहार

जयतु जानकी ,उपन्यास साहित्यिक कृति थिक। एहि उपन्यासमे उद्धृत कैकटा प्रसंग,कथानक जनश्रुतिपर आधारित अछि, जकर ऐतिहासिकता प्रमाणित नहि कएल जा सकैत अछि। एहिमे लेल गेल कैकटा नाम,ठाम आ कथानक काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

जयतु जानकी

१

लंका विजयक बाद राम जानकी,लक्ष्मण,हनुमान,विभीषण ,अंगद,सहित अनेक योद्धालोकनिक संग अयोध्या वापस आबि गेल रहथि। तकर बाद हुनकर राज तिलक समारोहपूर्वक संपन्न भेलनि । लंकासँ रामक संगे आएल विभीषण ,अंगद,सहित अनेक योद्धालोकनि क्रमशः अपन-अपन देश वापस चलि गेलथि। हनुमान आग्रहपूर्वक अयोध्यामे रहि गेलथि। ओ रामसँ विरत हेबाक लेल तैयार नहि भेलथि। राम हुनकर मोनक बात मानि लेलखिन। बहुत दिनक बाद जानकी रामक संग आनन्दक संग समय बिता रहल छलीह। अयोध्याक शासन बहुत नीकसँ चलि रहल छल। चारूकात हर्षक वातावरण छल। जाहिठाम राजाराम सन शासक होथि तकर जनता किएक ने सुखी रहत?

राज्यारोहणक बाद राजाराम निरंतर अपन प्रजाक सुधि लैत रहैत छलाह। हुनकर सुख-दुखक जानकारी भेटैत रहनि ताहि हेतु ओ राज्यभरिमे अपन गुप्तचर पठबैत रहैत छलाह। लोक की कहि रहल अछि,राजाक प्रतिए ओकर सभक की भाव छैक,ओकरासभकेँ कोनो परेसानी तँ नहि छैक? एहिसभ विषयक जानकारी गुप्तचरसभ राजारामकेँ दैत रहैत छलनि। ओकरासभसँ प्राप्त जानकारीक आधारपर ओ आवश्यक कारवाइ करैत रहैत छलाह। एकहुटा प्रजा दुखी नहि रहए,ककरो बातकेँ अनदेखी नहि कएल जाए।सभ महत्वपूर्ण अछि ,केओ छोट-पैघ नहि,रामराज्यमे सभकेँ अपन-अपन महत्व छलैक,सभकेँ अपन-अपन स्थान छलैक। लोकसभ रामराज्यमे सभ तरहेँ सुखी आ संपन्न छल। किएक ने रहैत? जखन राजा स्वयं लोककल्याण हेतु दिन-राति लागल रहत तखन परिणाम तँ नीक हेबे करितैक।

रामराज्याभिषेकक बाद जानकीक समय आनन्दमय बीति रहल छलनि। ओ एकदिन एहिना रामक संग आपसी गप्प-सप्पमे गंगाक कातमे बसल ऋषि आश्रमसभकेँ देखबाक इच्छा व्यक्त केलनि।

“किएक ने। बहुत जल्दीए अहाँक इच्छानुसार कार्यक्रम बनाओल जाएत।“

बात आएल-गेल। जानकी अपन काजमे लागि गेलथि। ओमहर राजाराम राज-काजमे व्यस्त भए गेलाह। एकदिन सायं काल जनतासभसँ संवाद कए रहल छलाह । अयोध्याक प्रमुखलोकसभ ओतए उपस्थित रहथि। राम हुनकासभकेँ पुछलखिन-

“अहाँलोकनि कोना छी? अहाँसभकेँ कोनो परेसानी तँ नहि अछि?”

“अपने ई की बजलहुँ श्री मान्? जाहि राजक राजा अपने सन महान होअए,जे दिन-राति अपन जनताक कल्याण लेल सर्वस्व त्याग कए देने होअए,जकर मोनमे सदति न्यायक भावना भरल होइक,ताहिठामक लोक सुखी कोना ने रहत?”

“ई तँ नहि भेल। हम अपन प्रशंसा सुनबाक हेतु ई प्रश्न अपनेसभसँ नहि केलहुँ अछि। हम तँ अहाँकेँ अपन परिवारे बुझैत छी आ तेँ अपेक्षा करैत छी जे अपन दुख-सुख सही मानेमे हमरा कहब,संकोच नहि करब। तखने ने हम तकर समाधान कए सकब। अस्तु,हमर निवेदन अछि जे अपने सभ बात हमरा निःसंकोच कही,मोनमे रखने नहि रहि जाइ।”

राजारामक स्पष्ट आदेश सुनि हुनकर गुप्तचर भद्र बाजल-

“महराज ओना तँ सभ किछु ठीके अछि ,मुदा ... ”

“मुदा की? संकोच नहि करह। स्पष्ट बाजह जे जनता की बाजि रहल छथि,हुनकर रामराज्यक बारेमे धारणा केहन छनि,केओ हमर निर्णयसँ दुखी तँ नहि छथि?”

“महाराज! दुर्भाग्यवश जानकीक अपहरण रावण द्वारा भेलनि। अपने अपन पुरुषार्थसँ रावणक हत्या कए देलहुँ,युद्धमे ओकर संपूर्ण परिवार सहित अनेक सैनिकसभ मारल गेल। अंततोगत्वा,अहाँ विजयी भेलहुँ। अहींक इच्छासँ विभीषण लंका नरेश बनाओल गेलाह। सभ किछु नीके भेल। मुदा ... ”

“फेर ओएह बात। मुदा, मुदा, की कए रहल छह? अपन बात स्पष्ट रूपसँ राखह।”

“चाहैत तँ सएह छी महाराज! मुदा बाजल नहि भए रहल अछि। तथापि,अहाँक आज्ञा मानि बाजहि पड़त। रावण द्वारा जानकीक बलपूर्वक हरण केलाक बाद ओ रावणक अधीन छलीह। ओकरे राज्यमे कतेको दिन रहलीह। मानलहु जे एहिमे हुनकर कोनो दोष नहि छलनि,जे भेल से बिना हुनकर सहमतिक भेल,मुदा ओ छलीह तँ रावणक अधीने। अपने निस्सन्देह हुनका संगे वापस अनबासँ पूर्व हुनकर अग्निपरीक्षा लेलहुँ,मुदा अयोध्याक जनता एकरा स्वीकार नहि कए पाबि रहल अछि। लोकमे ई चर्चाक विषय बनि गेल अछि। लोकसभ बजैत सुनल जा रहल अछि जे राजाराम जे केलथि से उचित नहि केलथि,नीक नहि केलथि। एहिसँ तँ समाज बिगड़ि जाएत। जखन राजा स्वयं एहन आचरण करत तखन जनताक तँ भगवाने मालिक ।”

राजाराम ई बातसभ सुनि कए दुखी भए गेलाह । कनी काल लेल तँ माथा सुन्न भए गेलनि। बुझेबे नहि करनि जे की करथि? हुनकर पारिवारिक जीवनमे महासंकट उत्पन्न भए गेलनि। ओ तुरंत ओहि बैसारकेँ विसर्जित केलाह आ अपन भवन वापस बिदा भए गेलाह।

राजाराम ओहि सभागारसँ अपन कक्ष धरि कोना पहुँचलाह से किछु नहि बुझि सकलाह। हुनकर माथामे विचारक समुद्र उफना रहल छलनि,लागि रहल छलनि जेना चारूकात अन्हड़ उठि गेल होइक आ ओ हबाक तीव्र वेगमे उधिआ रहल होथि। ओ स्वयंसँ प्रश्न-प्रतिप्रश्न कए रहल छलाह। कोठरीमे पहुँचि ओ अपन पलंगपर धराम दए खसलाह आ पता नहि कोन दुनिआमे चलि गेलाह।

“तूही हँ,हँ तूही ने जानकीक प्रथम दर्शनपर बेसुध भए गेल छलह। बिना पिताक जनतबकेँ विश्वामित्रक संगे जानकी स्वयंवरमे भाग लेने रहह। जानकीसँ बिआह करबाक लेल शिवजीक धनुष तोड़ि देने छलह। तकर बाद तूँ कतेक प्रसन्न भेल रहह,से मोन छह कि बिसरि गेलह। तकर बाद तोहर पिता सदल-बल जनकपुर पहुँचल रहथि। एक्के संगे तोहर चारू भाएक बिआह ओही परिवारक कन्यासँ भेल रहए। तखन केओ सपनोमे नहि सोचि सकैत छल जे एहन अटूट बिआह बंधनकेँ ओएह राम एहि हालतिमे पहुँचैत देखताह आ से बरदासो करताह। हे राम! तूँही कहह जे ई

कोन न्याय भेल जे एकटा गर्भिणी स्त्रीकेँ ,जे तोहर संतानक माए बनए जा रहल छलीह,अनाथ बना देल जाए,हुनका जंगलमे छोड़ि देबाक एकतरफा आदेश दए देल जाए?”

“हम की करी?हम तँ स्वयं घोर धर्मसंकटमे छी। की करी की नहि करी किछु फुरा नहि रहल अछि। एक दिस हमर व्यक्तिगत इच्छा अछि,जानकीक आत्मसम्मान अछि,बेरि-बेरि हुनका द्वारा स्वयंकेँ निर्दोष सिद्ध कए देब अछि आ दोसर दिस एकटा राजाक कर्तव्य थिक। राजा अपन जनताक हेतु आदर्श होइत अछि। आइ जखन समस्त जनतामे जानकीक ऊपर आक्षेप उठि रहल अछि तखन हम मूकदर्शक बनि कोना रहि सकैत छी? कोना हुनका अपन महलमे अपना संगे रहि सकैत छी? हम जनैत छी जे जानकी निर्दोष छथि। कतहुसँ ओ हमरा छोड़ि ककरो स्वीकार नहि केलनि,कइए नहि सकैत छलीह,परंतु... ।”

“परंतु,परंतु,परंतु ... ई की होइत अछि। जे कर्तव्य एकटा पतिक अछि से केओ आर नहि कए सकैत अछि। तूँ जानकीक पति छह,हुनकर भावी संतानक पिता छह,हुनकर दुख-सुखक सभ दिनक संगी छह। कोना हुनकर संग छोड़ि सकैत छहुन। एहिसँ तँ बहुत बढ़िआँ होइत जे तू राजाक पदो त्याग कए दितह,छोड़ि दितह अयोध्याक राज-पाट,जानकीकेँ संग करितह आ चलि जइतह अयोध्याक सीमाक ओहिपार। तखन आ तखने होइत मर्यादाक रक्षा। आखिर अपन पिताक कहलापर आ हुनकर बात रखबाक लेल तूँ चौदह वर्ष वनबास चलि गेलह की नहि? असलमे तोहर ओएह निर्णय जानकीक बरबादीक कारण बनल। ने तूँ वनबास जइतह ,ने जानकी तोहर संगे जंगल मे रहितथि,ने रावण एहन कुकर्म करबाक अवसर पबैत। ओ तँ बहुत दिनसँ चोटाएल छलहे। जानकी स्वयंवरमे रावणक अपमान भेल छल से बात तँ तोरा बुझले छह। एहन प्रतापी राजा आ विद्वान रहितहुँ रावणक घोर अपमान भेल रहए । संभवतः ओ एहि बातकेँ कहिओ बिसरि नहि सकल आ अवसर भेटितहि तकर प्रतिकार केलक। जनक कहिओ नहि सोचने हेताह जे जानकीकेँ एहन दिन देखए पड़तनि। जे ओ महारानी बनबाक पात्रता रखितहु जंगले-जंगल बौआइत रहतीह । तकर जिम्मेदार के छल? तूँ कहि सकैत छह जे जानकी स्वेच्छासँ तोरा संगे जंगल चलि गेलथि। ओ की करितथि? हुनकर पतिव्रता हुनका अयोध्याक राज

छोड़ि तोरा संगे जेबाक लेल विवश कए देलकनि। ई छलनि हुनकर महानता। जंगलमे छलपूर्वक रावण द्वारा हरण कए लेलाक बाद ओ की करितथि? तोरा प्रतिए तन-मन-सँ निरंतर समर्पित रहलीह आ ताहि लेल प्राण पर्यन्त त्याग कए देबए चाहलीह। ताहि जानकीकेँ एहि हालपर तूँ पहुँचा देलह? हद भए गेल। जे भेल से भेल। बातसभ सलटि गेल। आबो तँ हुनका बकसि दहुन।

"हे राजाराम! ई की करए जा रहल छह तूँ? एहिसँ बहुत नीक होइत जे जानकीकेँ अयोध्या अनबे नहि करितह। से तूँ नहि केलह। मात्र अपन आहत अहंकारक वशीभूत आ मलिन भेल प्रतिष्ठाक पुनर्प्राप्ति लेल जानकीकेँ रावणसँ जितलह। रावणकेँ मारि देलह,ओकर घरहंज भए गेल। मुदा फएदा की भेल? केओ किछु बाजि देलक आ भए गेल जानकीक सत्यानाश। कहीं तोरा मोनमे पहिनेसँ संका तँ विद्यमान नहि छल? कहीं तूँ स्वयं दुबिधामे तँ नहि छलह। अन्यथा अग्निपरीक्षाक जरुरति कोन छल?जानकी सेहो केलनि। ओहूमे निर्दोष सिद्ध भेलथि। ओहि समयमे समस्त आदरणीयलोकसभक उपस्थितिमे तूँ जानकीकेँ पुनः स्वीकार केलह। अपना संगे अयोध्या अनलहुन, संगे रखलहुन। तकर बाद ओ संतानवती होमए बाली छथि। आब केओ किछु बाजि देत आ तूँ हुनका छोड़ि देबहुन। अनर्थ,महाअनर्थ होएत से। लोक तखनहु प्रश्न करतह,करबे करतह। ककरा-ककरा तूँ संतुष्ट कए सकबह। बाजह ने ,चुप्प किएक भए गेलह?की तोहर मोनमे जानकी लेल सचमुचकेँ प्रेम बाँचल रहि गेल छलह? की सभटा नाटके भए रहल छल?"

मोनमे उठैत प्रश्न-प्रतिप्रश्न सँ राजाराम बहुत आहत भए गेल छलाह। बड़ी काल धरि ओछाओनपर एहि करोटसँ ओहि करोट करैत रहलाह। फेर अकस्मात उठि बैसलाह। बाहर ठाढ़ अरदलीकेँ बजओलखिन।

"आज्ञा श्रीमान् !"

"तूँ भरत,लक्ष्मण आ शत्रुघ्नकेँ तुरंत बजा आनह।"

"जे आज्ञा श्रीमान्"

अरदली अपन काजपर चलि गेल। एमहर राजाराम ओहि कोठरीमे बताह जकाँ एहि कोन सँ ओहि कोन धरि घुमैत रहलाह,बड़बड़ाइत रहलाह।

२

राजारामक आदेश सुनलाक बाद अरदली हड़बड़ा गेल। ओ राजारामक मुँहे देखैत रहि गेल। ओ बहुत परेसानीमे बुझाइत छलाह। हुनकर मुँह मलिन लागि रहल छलनि। हुनकर आँखि नोरसँ डबडबाएल छल।

"एहन तँ ओ कहिओ नहि रहैत छलाह?"- ओ मोने-मोन सोचि रहल छल। ओ धरफराएल लक्ष्मणक महल लग पहुँचले होएत की वर्षा जोर-सोरसँ होमए लगलैक । बीच-बीचमे बिजलौका से चमकि रहल छल। अकस्मात चारूकात अन्हार भए गेल। लगैत छल जेना समस्त अयोध्या भयाओन अन्हारमे डुबि गेल अछि। तेहने समयमे अरदली लक्ष्मणक भवनक मुख्यद्वारि लग पहुँचि जाइत अछि। राजारामक अरदली ,ओहो एहन समयमे? के रोकि सकैत छल ओकरा? ओ धराधर भीतर महलमे लक्ष्मण लग पहुँचि जाइत अछि। लक्ष्मण भोजन कए पान-सुपारी खा रहल छलाह । सामनेमे राजारामक अरदलीकेँ करबद्ध ठाढ़ भेल देखि पुछलथि-

"तूँ एहन समयमे?"

"जी श्री मान् !राजारामक आदेश छनि। "

लक्ष्मण ओकरा बीचेमे टोकि देलथि-

" सभ किछु ठीक तँ अछि ने? "

"की जाने गेलिऐक?"

"पहिने तूँ अपन बात बाजह, फेर आर किछु।"

"राजाराम अहाँकेँ तुरंत अपन महलमे बजा रहल छथि।"

"एतेक रातिमे अचानक बजेबाक कारण?"

"हमरा आर किछु ने कहलाह,ने हमरा बुझल अछि।"

"ठीक छैक । हम तुरंत ओतए पहुँचैत छी।"

अरदली समाद कहि कए ओहिठामसँ चलि गेल । लक्ष्मण बहुत हड़बड़ा गेल रहथि। जहिना छलाह तहिना तुरंत पैरे-पैरे राजारामक महल दिस बिदा भए जाइत छथि,चिंतित,उदास आ व्याकुल।

अरदली बाजि तँ गेल कारण ओकरा बजबेक रहैक,राजारामक आदेशकेँ निस्सृत करबेक रहैक। मुदा लक्ष्मण ओकर बात सुनि एना

व्याकुल भए जेताह जे अपन भवनसँ पैरे-पैरे राजारामक महल दिस दौड़ि जेताह ओ नहि सोचि सकैत छल। खैर,ओ अपन काज केलक आ अगिला पड़ाव दिस बढ़ल । ओहिठामसँ थोड़बे फटकी छल भरतक राजमहल । ओहि समयमे भरत महलक ओसारापर भोजनोपरांत टहलि रहल छलाह।

"राजारामक अरदली,ओहो एहि समयमे?"ओ तुरंत ठमकि जाइत छथि । अरदली हुनका देखितहु दंडवत प्रणाम करैत अछि।

"की बात?"

"राजाराम अपनेकेँ तुरंत बजाओलनि अछि।"

"किछु विशेष बात की?"

"किछु नहि कहि सकैत छी। मुदा राजाराम बहुत उदास बुझाइत छलाह,हुनकर आभा बिला गेल छलनि। ओ हमरा अपन आदेश सुनबैतो काल सामान्य नहि लागि रहल छलाह। एहन हालतिमे हम हुनका की पुछितिअनि? हुनकर आदेश सुनि ओहिठामसँ चुपचाप बिदा भए गेलहुँ।"

भरत तुरंत बिदा होइत छथि। थोड़बे काल पहिने अन्हड़ आएल रहैक,तखनहिसँ वर्षा भए रहल छल। कनी काल पहिने वर्षा कम जरूर भए गेल रहए,मुदा पानि टिपिर-टिपिर खसिए रहल छल। हड़बड़ीमे ओ छत्ता सेहो नहि लए सकलाह। ओहिना भिजैत-तितैत राजारामक महल दिस बढ़ि गेलाह। ओ चारिए डेग बढ़ल हेताह कि पिछड़ि कए मुँहे भरे खसलाह। भरतक पिछड़ि कए खसैत देखि अरदली देखलक। ओ शत्रुघ्नक महल दिस जा रहल छल। ओतहिसँ हल्ला केलक-

"केओ छह? केओ छह?"

चारूकातसँ प्रहरीसभ दौड़ल। ककरो हाथमे लाठी,ककरो हाथमे भाला,तँ ककरो हाथमे तरुआरि छल। एकगोटेक हाथमे विशेष प्रकारक लालटेन छल जे केहनो अन्हड़मे,वर्षा पानिमे मिझाइत नहि छल। ओ सभ भरत लग पहुँचल। हुनका माटिपरसँ उठओलक। भरत बहुत अपसिआँत छलाह। ओ हकमि रहल छलाह। हुनका किछु बाजल नहि होनि। हुनकर एहन परिस्थिति देखि प्रहरीसभ परेसान भए गेल। बुझेबे नहि करैक जे एहन बेकाल समयमे भरत एकसर कतए आ किएक जा रहल छथि। ताबतमे राजारामक अरदली दौड़ल ओहिठाम आबि गेल। ओ प्रहरीसभकेँ बुझबैत अछि-

“हिनका राजारामक महल जेबाक छलनि। राजाराम बजओने छथिन।”

ताबे एकटा प्रहरी भरतक महलक लगीचसँ भरतक रथ आनि लेलक। भरत आब साकंछ भए गेल छलाह। ओ रथपर सबार भए राजारामक महल दिस बिदा भए जाइत छथि। हुनकर देहमे कैकठाम पानि-कादो लागि गेल छलनि। मुदा हुनका तँ कथुक होसे नहि रहनि। बस एतबे सोचाइनि –

“पता नहि राजारामकेँ की भए गेलनि? ओ एतेक रातिमे सभ भाइकेँ किएक बजा रहल छथि? कही किछु अनिष्ट तँ नहि भए गेल? कहीं कोनो दुष्ट राजा अयोध्यापर आक्रमण तँ नहि कए देलक?”

तरह-तरहक प्रश्नसभ हुनकर मोनमे उचरि रहल छलनि। उत्तर तँ राजा रामे दए सकितथि। ताहि लेल ओतए शीघ्र पहुँचब जरूरी छलनि।

ओमहर राजारामक अरदली आब शत्रुघ्न लग पहुँचल अछि। शत्रुघ्नक मोन ठीक नहि छलनि। भोरेसँ पेट गड़बड़ चलि रहल छलनि। कनी-कनी बोखारो छलनि। तेँ सुस्त भेल ओछाओनपर पड़ल रहथि। एहनेमे राजारामक अरदली हुनकर महलक मुख्यद्वारि लग पहुँचि गेल छल। मुदा प्रहरी ओकरा आगू बढ़बासँ मना कए देलकैक।

“शत्रुघ्न ठीक नहि छथि। हुनका बोखार छनि,पेट से झड़ रहल छनि। एहन हालतिमे ककरो हुनका लग जेबाक अनुमति नहि अछि।”

“मुदा हमरा तँ राजारामक बहुत जरूरी आदेश हुनका कहबाक अछि।”

“ठीक छैक। हम भीतर समाद पठा रहल छी। तूँ एतहि प्रतीक्षा करह।”

“कोनो हरजा नहि । मुदा देरी नहि हेबाक चाही। कारण लक्ष्मण आ भरत ओतए पहुँचि चुकल छथि। हिनकर प्रतीक्षा भए रहल हेतनि।”

शत्रुघ्नकेँ सभ समाचार भेटलनि।

“राजारामक अरदलीकेँ तूँसभ बाटेमे रोकि देलहक? अनर्थ करैत गेलह। ओकरा तुरंत भीतर आनह।”

शत्रुघ्नकेँ तमसाइत देखि ककरो आर किछु कहबाक साहस नहि भेलैक। ओ सभ दौड़ल बाहर गेल आ अरदलीकेँ शत्रुघ्न लग पठा देलक। ओकरा देखितहि शत्रुघ्न पुछि देलखिन-

“राजाराम ठीक छथि ने? की आदेश छनि हुनकर जल्दी सुनाबह।”

“ओ अहाँ तीनू भाइकेँ तुरंत बजओलनि अछि।”

“लक्ष्मण आ भरत कतए छथि? हुनकासभकेँ समाद भेटलनि कि नहि?”

“ओ सभ तँ जा चुकल छथि। आब पहुँचिओ गेल हेताह।”

“हमहूँ पहुँचिए रहल छी।”

शत्रुघ्न तुरंत रथपर चढ़ि राजारामक महल दिस बिदा होइत छथि। घरसँ बाहर निकलैत काल तरह-तरहक अपशकुन होइत छनि। बिलाड़ि रस्ता काटि दैत छनि। बामाँ आँखि फरकि रहल छनि।

“पता नहि की होमए बला अछि? ऊपरसँ मौसम से एहन खराप भेल अछि।”

३

शत्रुघ्न जखन राजारामक भवनमे पहुँचलाह ताधरि लक्ष्मण आ भरत ओतए पहुँचि गेल रहथि। राजाराम हुनकासभसँ किछु-किछु गप्प कए रहल छलाह। हुनकर ठोरपर फिफरी पड़ल छलनि। अबाजमे दम नहि बुझा रहल छलनि। रहि-रहि कए आँखिसँ नोर खसि रहल छलनि। शत्रुघ्नकेँ देखिते ओ गुम भए गेलाह। भरत आ लक्ष्मण एक्के संग बाजि उठैत छथि-

“आबह,आबह । तोहर मोन तँ खराप छलह। आब कोना छह? ”

“जाए दिअ। हमरा की भेल अछि। कनी-मनी सर्दी-बोखार तँ होइते रहैत छैक। अहाँकेँ सौंसे देहमे थाल कोना लागि गेल?”

भरतकेँ आब होस अएलनि। ओ बाजि उठलाह-

“अबैत काल पिछड़ि गेल रही। हम एकरा बदलने अबैत छी।”

भरत शौचालय जा कए अपन वस्त्र बदलैत छथि। फेर तुरंत वापस आबि जाइत छथि।

ताबे राजाराम कोठरीमे एमहर-ओमहर घुमैत रहलाह। तीनू भाई हुनकासँ की पुछितथि? हुनकासभकेँ उम्मीद रहनि जे ओ स्वयं किछु कहताह।

तीनू भाइकेँ आएल देखि राजाराम पलंगपर सँ उठि गेलाह। हुनकासभकेँ बैसबाक हेतु इसारा करैत छथि,मुदा ओ सभ ठाढ़े रहि जाइत छथि। राजाराम बहुत उदास छलाह,हुनकर मुँहपर विषाद झलकि रहल छलनि। ओ किछु बाजए चाहि रहल छलाह। परंतु बाजल नहि होनि। भरत हुनकर मनोदशा देखि पुछैत छथि-

“अहाँ एतेक उदास किएक छी? की कोनो शत्रु देशक आक्रमणक सूचना अछि?की माता कौशल्याक स्वास्थ्य खराप भए गेलनि अछि?”

“से सभ किछु नहि भेल अछि।”

“तखन अहाँ एतेक परेसान किएक छी?”-लक्ष्मण बजलाह।

“परेसानीक तँ बात अछिए।”

“अहाँ सन प्रतापी आ शक्तिशाली राजाक सामने कोन परेसानी रहि सकैत अछि। हमरा आदेश दिअ , ओकरा तुरंत नष्ट कए देबैक। मुदा अहाँ एना उदास,चिंतित नहि रहू। हमरासभक अछैत यदि अहाँ दुखी रहब,चिंता करब ,किंवा स्वयंके राजसुखसँ वंचित राखब तखन हमरालोकनिक जीवनक की अर्थ होएत?कहबाक प्रयोजन नहि अछि जे हमसभ अहाँक आदेशपर सर्वस्व समर्पण करबाक हेतु तत्पर छी। अहाँ एकबेर अपन बात कहियौक तँ।”-लक्ष्मण बजलाह।

शत्रुघ्न चुपचाप भाइलोकनिक वार्तालाप सुनैत रहलाह। एतबा तँ हुनको बुझा रहल छलनि जे राजारामक मोनमे किछु असाधारण बात घुमि रहल छनि। ओ कोनो सामान्य व्यक्ति नहि छथि,ने ओ कनी-मनी किछु भेलासँ परेसान कएल जा सकैत छथि । ओ तँ परेसान तहिओ नहि भेलथि जहिआ ओतेक शक्तिसंपन्न रावणसँ युद्ध करए जा रहल छलाह। ओहि समयमे हुनकर संगे के छलनि? ओ कहाँ कनीको घबड़ेलथि। रावणक समस्त परिवार नष्ट भए गेलैक। अपनो मारल गेल। जानकी सम्मानपूर्वक अपन पतिक लग वापस अएलीह। निसस्न्देह ओ घटना ककरो विचलित कए सकैत छल? राम सन वीर , प्रतापी व्यक्तिक लेल ओ समय केहन रहल होएत जखन हुनका जानकीक रावण द्वारा हरणक जनतब भेटल हेतनि?

मुदा ओ सभ सहलनि,धैर्य रखने रहलथि। केना-ने-केना एतेक भारी सेना ठाढ़ कए लेलनि आ राबण सन शक्तिशाली राजापर विजय प्राप्त केलथि। से राम आइ एतेक आहत छथि। किछु बुझा नहि रहल अछि जे सही बात की अछि?

राजाराम अचानक गंभीर भए गेलाह। हम एहिठाम तोरा लोकनिक भाषण सुनबाक हेतु नहि बजओलहुँ अछि। हम राजकाजसँ संबंधित गंभीर समस्याक बारेमे किछु निर्णय लेलहुँ अछि। तकरे कार्यान्ययन हेतु तोरासभकेँ अचानक एहि समयमे बजबए पड़ल अछि। निश्चय हम एहि निर्णयसँ सुखी नहि छी,भइओ नहि सकैत छी,मुदा राजाक कर्तव्यक आगू एक व्यक्तिक सुख-दुख कोनो माने नहि रखैत अछि। हमसभ आइ छी,काल्हि नहि रहब। मुदा हमरा लोकनिक द्वारा कएल गेल काज,कहल गेल बात समाजक सामनेमे दृष्टान्त बनि कए लोककेँ जुग-जुग धरि प्रभावित करैत रहत। तेँ पैघ उद्येश्यक सामनेमे व्यक्तिगत हितकेँ गौण करहि पड़ैत छैक। समयक आघात-प्रघात सहि हमसभ आइ एतए पहुँचि गेल छी। अयोध्याक राजा बनब हमर कहिओ लक्ष्य नहि छल। तेँ पिता जखनहि हमरा भरतकेँ राजा बनेबाक आदेश देलनि हम ओकरा सहर्ष मानि लेलहुँ । ततबे नहि हुनकर दोसर आदेश जे चौदह वर्ष धरि हमर वनबासक छल से आरो सहजतासँ मानि लेलहुँ। मुदा अफसोच जे हमरा कारण जानकीकेँ जंगलमे रहए पड़लनि। लक्ष्मणकेँ हमरा संग देबाक कारण घोर कष्टक समय बितबए पड़लनि। मुदा हम की करितहुँ? भावी प्रबल होइत अछि से मानहि पड़त। हमरो जीवन समयक अधीन नदीमे तीब्र बायुक प्रवाहसँ भसिआइत नाह जकाँ सदिखन डगमगाइते रहि गेल । आब जखन किछु दिन निचेनसँ रहि सकैत छलहुँ तखन फेरसँ नवसंकट आबि गेल। मुदा तकर की? मूल बात ई अछि जे राजारामकेँ जे कर्तव्य करबाक छनि से तँ करबे करताह। “

“एहिमे कोन सक? मुदा भेलैक की से तँ कहियौक।”-लक्ष्मण बजलाह।

“तोरामे इएह गड़बड़ी छह। तूँ चुप रहिए नहि सकैत छह। भेलैक ई जे जानकीकेँ लंकासँ वापसीक बाद हमरा संगे रहब बहुत गोटेकेँ पसिंद नहि छनि। अयोध्यावासीसभमे ई चर्चाक विषय बनि गेल अछि। सभ एतबे बजैत अछि जे राजाराम एकटा गलत दृष्टान्त बना गेलाह अछि। पता नहि ओ लोकनि अपन परिवार कोना सुरक्षित राखि सकताह? कोना बचतनि

हुनकर सभक परिवार? काल्हि जा कए ककरो पत्नी कतहु जा कए रहि जाएत आ जखन मोन हेतैक जानकीक उदाहरण दए वापस अपन पति लग आबि जाएत । केहन होएत ओ समाज?की बाजत पतिसभ?”

“खबरदार भैया! जे बाजि लेलहुँ से बाजि लेलहुँ। जानकीक विषयमे आब एकशब्द नहि निकालब। नहि तँ...। जानकी मात्र अहाँक पत्नीएटा नहि छथि। ओ हमर भौजी सेहो छथि,माता समान छथि। अयोध्या राजक रानी छथि,मिथिला नरेश जनकक कन्या छथि। ततबे नहि,ओ समस्त मिथिला आ अयोध्याक हेतु पूजनीया छथि। केओ किछु बाजि देत आ ओ अपमानित कए अयोध्यासँ निर्वासित कए देल जेतीह? ई कोन न्याय भेल? एहि मामिलामे जखन अहाँ स्वयं एकटा पक्ष छी,तखन अहाँ न्यायाधीश कोना भए सकैत छी? ई तँ सरासर बैमानी थिक। आखिर अयोध्या जनताक विचार यदि जानबेक अछि तखन स्पष्ट रूपसँ मत सर्वेक्षण होउक,सभक विचार लेल जाउक। ई कोन बात भेलैक जे जखन अहाँक मोन भेल ,हुनका लंकासँ संगे लए अनलिअनि आ जखन मोन बदलि गेल तँ अयोध्यामे अपन घरोसँ निर्वासित करबाक निर्णय लए लेलहुँ। एकटा सामान्यसँ सामान्य स्त्रीकेँ जे अधिकार छैक जे ओ अपन घरमे मर्यादापूर्वक रहि सकैत अछि ताहूसँ हुनका वंचित कएल जा रहल छनि। हमरा जीबैत ई नहि भए सकत। हमर प्राण रहए की जाए,मुदा हम एहन अन्याय नहि होमए देब।”-लक्ष्मण चिकरलाह।

लक्ष्मणकेँ बीचेमे रोकैत भरत बजैत छथि-

“एतेक उत्तेजित नहि होअ लक्ष्मण । राजारामक उपरोक्त निर्णयसँ हमहूँ सहमत नहि छी। हुनका कोनो कारणसँ अयोध्यासँ निर्वासित करब सरासर अन्याय होएत। जानकीक जीवन महत्वपूर्ण छनि। हुनकर प्रतिष्ठा आ गरिमाक रक्षा करब हमरासभक कर्तव्य थिक। एहि बातकेँ एतेक हल्लुक नहि बनाओल जा सकैत अछि जे हमसभ सड़कपर चर्चाक विषय बनि जाइ। हमरा विचारसँ तँ ओहि व्यक्तिकेँ तुरंत प्राणदण्ड देल जाए। जकरा कारणसँ जानकीक ऊपर एहन संकट आबि गेल अछि ,जकरा कहला पर राजाराम एतेक दुखी भए गेल छथि ताहि व्यक्तिकेँ जीबित रहबाक कोनो अधिकार नहि अछि। सही मानेमे आजुक निर्णय इएह हेबाक चाही। जानकी अयोध्याक रानी छथि , रहबे करतीह। फेर बिना हुनका

पुछने,बिना हुनका अपन बात कहबाक उचित अवसर देने एकतरफा एहन कठोर निर्णय केना लेल जा सकैत अछि?यदि कोनो बात भेबे कएल अछि ,यदि कतहुसँ जानकीक गलती छनिहे तँ हुनका अपन बात कहबाक अवसर तँ देल जानि। हमरा विश्वास अछि जे राजाराम अपन निर्णयपर अबस्स पुनर्विचार करताह।”

तकर बाद शत्रुघ्न बजलाह-

“हमहूँ लक्ष्मण आ भरतक विचारसँ सहमत छी। लंकामे जे किछु भेल, जाहि हालतिमे जानकीक रावण द्वारा हरण भेलनि, केना राम-रावण युद्ध भेल आ अंततोगत्वा रावणक विनाश भेल से सर्वविदित अछि। यदि रावण द्वारा बंदी बना लेलाक बाद जानकी दोषी छलीह तखन अग्निपरीक्षाक की औचित्य छल? यदि अग्निपरीक्षा सही छल तखन जानकीकेँ ओहिमे निर्दोष पओलाक बाद फेर-फेर ओहने प्रश्न किएक उठाओल जा रहल अछि? यदि केओ किछु गलत बाजि रहल अछि तखन राजा ओकरा दंड दितथि,मुदा एहिठाम तँ उल्टे हबा बहि रहल अछि। केओ किछु बाजल आ राजाराम ओकरा कहलापर जानकीकेँ एहि हद धरि दंडित करए बिदा भए गेलाह जे ओ अयोध्या राजक सीमासँ सभ किछु छोड़ि बाहर भए जाथु। अन्याय, अत्याचारक पराकाष्ठा थिक ई। एकर अबस्स विरोध हेबाक चाही। राजाराम यद्यपि हमरासभक आदरणीय छथि,हमसभ हुनका लेल अपन प्राणो उत्सर्ग करबाक लेल तैयार छी,मुदा जानकीओ तँ पूजनीया छथि,माता समान छथि,अयोध्याक रानी छथि। हुनका संगे एहन अन्याय कोना बरदास कएल जाएत?”

राजाराम अपन भाइ लोकनिक विरोध देखि चकित रहथि। ओ सपनोमे नहि सोचने रहथि जे लक्ष्मण एना बजताह। भरत आ शत्रुघ्न सेहो विरोधेमे ठाढ़ भए जएताह। तथापि राजाराम अडिग छलाह। ओ अपन निर्णय फेर दोहरबैत छथि-

“हम एहिसभ बातपर पहिने बहुत गंभीरतापूर्वक विचार कए लेने छी। यदि हम राजा रहब तँ ई निर्णय लागू हेबे करत। मुदा यदि तोरा लोकनिक इच्छा छह तँ हम तुरंत राजाक पदसँ त्यागपत्र लेल तैयार छी। तकर बाद तूँसभ अपना हिसाबे जे ठीक बुझाह से करियह । मुदा ई बात साफ-साफ सुनि लएह-

“हम राजा रही वा हटि जाइ मुदा जानकीक परित्याग हेबे करतनि। ओ आब हमरा संगे नहि रहि सकतीह। प्रश्न हमरेटा नहि अछि,ई तत्कालीन समाजक समस्यासँ जुड़ल प्रश्न अछि। एकर समाधान व्यक्तिगत सुख-दुख किंवा पारिवारिक मान-मर्यादासँ ऊपर उठि कए करबाक हेतैक ।”

“हम अहाँक बात नहि बुझि पाबि रहल छी। अहाँ अपन पतिक दायित्वसँ कोना बाँचि सकैत छी?”

“हम अपन बात कहि चुकल छी।”

“हम मारल जाएब तखनहि जानकी एहिठामसँ बिदा कएल जा सकतीह।”-

लक्ष्मणक बात सुनि सभ सन्न छल। राजाराम तामसे आगि भए गेल छलाह। लागि रहल छल जे कोनो क्षण अनर्थ भए जाएत।

“सभ गोटे शांत होउ। हमरा विचारसँ ई गंभीर विषय थिक। सभक भावना नीके अछि। संगे हमसभ अपन-अपन कर्तव्यसँ बान्हल छी। अंतिम निर्णय राजा रामेक हेतनि। मुदा हमसभ तत्काल एहि बैसारकेँ स्थगित करी । मोनकेँ शांत करी। घंटा भरि बाद फेर हमसभ एतहि उपस्थित होएब। बढ़िआँ होएत जे जानकीक पक्ष सेहो सुनल जानि। अस्तु,हुनको तखन एतइ बजा सकैत छिअनि।”-भरतक एहि तरहेँ बजलाक बाद बैसार तत्काल स्थगित भए गेल।

४

एमहर राजाराम अपन तीनू भाइक संगे विचार-विमर्श कए रहल छलाह,ओमहर जानकी शयनकक्षमे छटपट कए रहल छलीह। कतबो प्रयास करथि ,हुनका निन्न हेबे नहि करनि। कैक बेर उठैत,बैसथि,पानि पिबथि आ फेर सुतबाक प्रयास करथि। राजारामक शयनक तँ कोनो समय रहबे नहि करनि। ओ तँ दिन-राति राज-काजमे व्यस्त रहैत छलाह। कैकबेर तँ ओछाओनपर पड़ि रहलाक बादो उठि जइतथि,आगन्तुकक कष्टहरणक प्रयास करितथि। तखन कखनहु तीन बजे, कखनहु चारि बजे रातिमे सुतए अबितथि। कैक दिन तँ कौआ डाक दए दितए,तैओ राजाराम नहि सुति पाबथि,काजे करैत रहि जाथि । जानकी हुनकर प्रतीक्षामे राति भरि जगले रहि जइतथि। एहि करोटसँ ओहि करोट बदलैत रहितथि। की करितथि?

स्त्रीक कर्तव्य निर्वाह तँ करबेक रहनि। हुनका नीकसँ बुझल रहनि जे बिना विशेष कारणकेँ सूर्यास्तक बाद राजाराम अन्यत्र रहिए नहि सकैत छलाह। अयोध्या सन विशाल राज आ तकर तरह- तरहक समस्यासभ सदिखन मुँह बौने रहैत छल। सही मानेमे कहल जाए तँ जानकीक व्यक्तिगत जीवन अखनहु तपस्ये बनि कए रहि गेल छलनि।

“लगैत अछि राजाराम आइओ नहि आबि सकताह। की करू किछु नहि बुझा रहल अछि। ई राज-काज तँ हमर सौतिनि बनि गेल अछि। ने राजाराम एहि झंझटि सभमे फँसितथि ने हमर ई हाल रहैत। अछैते पतिकेँ हम नितान्त एसगरि जीबाक हेति विवश छी। एहिमे हुनकर कोनो दोष नहि छनि। ई हमरे अभाग थिक। हमरे कर्मक फल थिक। लगमे सभ किछु अछि तथापि जीवन एहन एकान्त भए गेल अछि। आखिर किएक? निश्चय एहिमे हमरे पापक भोग थिक। नहि तँ राजाराम सन पतिक पत्नी हेबाक गौरव होइतहुँ हम एहन हालमे पड़ल छी। जखन कखनहु हुनका कनीको अवसर भेटैत छनि ,ओ हमरा प्रसन्न करबाक प्रयत्नमे लागि जाइत छथि। कहि नहि ओ एक्को क्षण अपना लेल जीबैत छथि कि नहि? प्रायः नहि। ओ अपन जीवनक सर्वस्व अयोधयावासीक लेल समर्पित कए चुकल छथि।”

जानकी इएह सभ सोचैत पलंगपर पड़ल-पड़ल करोट बदलि रहल छलीह। अचानक जेना कोठरी प्रकाशसँ भरि गेल। जानकीक देहसँ एकटा प्रकाशपुंज बहार भेल आ सोझे राजारामक मंत्रणा भवनमे विद्यमान राजाराम आ हुनकर तीनू भाइ लग पहुँचि गेल। मंत्रणा भवनमे अचानक चारूकात इजोते-इजोत पसरि गेल। राजाराम आ हुनकर भाइ लोकनि गहन विचार विमर्शक बाद कनी विश्राम कए रहल छलाह। ओतेक रातिओमे सेवक सभ हुनका सभकेँ अपन-अपन मनोनुकूल पेय दए रहल छलखिन । एतबेमे ओ कोठरी जगमगा उठल। सभक हाथ-पैर जेना हरा गेलैक। सभ तँ पहिनेसँ असोथकित छलाहे। आब ई की भेल?

ओमहर राजारामकेँ तँ जेना लकबा मारि देलकनि। सौंसे देह शक्तिहीन भए गेलनि। पलंगपर कहुना कए करोट लागि गेलाह। हुनकर तीनू भाई लोकनिकेँ सेहो जेना करेंट लागि गेल होनि। जे जहिना छलाह ,तहिना रहि गेलाह।

फेर ओ प्रकाशपुंज स्वयं अपन परिचय दैत अछि-

“हम छी रामक शक्ति, शक्तिस्वरुपा । हम सदिखन जानकीक रूपमे हुनका लग विद्यमान रहैत छी। हमरा पता चलि गेल अछि जे राजाराम कोनो अनर्थ करबाक लेल सोचि रहल छथि। से हुनका चेतौनी देबाक हेतु हमरा एहिठाम आबए पड़ल अछि। हे राजाराम! अहाँ नीकसँ सुनि लिअ। जाबे हम अहाँ लग छी ताबते अहाँ शक्तिवान छी। हमरासँ फराक होइतहि अहाँक हालति ओहिना होएत जेना बिना करेंटकेँ बिजलीक तारक। अहाँ जन-जनमे लोकप्रिय छी तकर पाछू हमर शक्ति अछि,हमर त्याग अछि,हमर अहाँक लेल अनंत सिनेह अछि। नहि तँ कहि नहि अहाँक की हाल रहैत ,अहाँ कोन हालतिमे पहुँचि गेल रहितहुँ। सोचि लिअ आबो। हम अन्त-अन्त धरि अहाँक संग देबाक लेल आतुर छी। मुदा अहाँ ओहि मूर्ख जकाँ काज करए जा रहल छी जे ओही गाछकेँ काटि रहल होअए जकर डारिपर ओ स्वयं बैसल अछि। आगू अहाँक मरजी।श्रीहीन,शक्तिहीन राजा लोकक सेवा केना आ कतेक दिन कए सकत? नीकसँ सोचि लिअ।”

एहिसँ पहिने कि राजाराम किछु सोचि सकितथि,हुनकर भाइलोकनि किछु बुझि सकितथि ओ प्रकाशपुंज अचानक तेजस्वितासँ परिपूर्ण स्त्रीक रूप ग्रहण कए लेलक। ओकरा सामने एना देखि राजाराम बेहोस भए गेलाह। हुनकर भाइ लोकनि हाँइ-हाँइ हुनकापर शीतल जलक फुहारा केलथि,बिअनिसँ ठंढा हबा केलनि। तखन जा कए राजाराम आँखि खोललनि,तथापि ओ एकदम निस्तेज लागि रहल छलाह। हुनकर हालति देखि तीनूभाइ कल जोड़ि कए ठाड़ भए गेलाह।

“क्षमा कएल जाए राजाराम। हमसभ अपनेसँ जे किछु बजलहुँ से हमरसभक हृदयमे तत्काल उत्पन्न भावनाक अभिव्यक्ति मात्र छल। हमसभ नहि रोकि सकलहुँ अपना-आपकेँ। नहि सोचि सकलहुँ जे हमर सभक एना बाजब अहाँकेँ कतेक मर्माहत करत। आब तँ बाजि चुकल छी,जे शब्द निकलि गेल,सही-की गलत ओ वापस तँ नहि होएत। मुदा ई कहबाक काज नहि जे अंततः हमसभ अहाँक आदेशक पालन करबाक लेल कृतसंकल्प छी। हम सभ ओएह करब जे अहाँक आदेश करब। राजा अहीं छी आ अहीं रहब। एहि विषयपर भूतकालमे बहुत घमरथन भए चुकल अछि। आब फेर ओहि अध्यायकेँ नहि खोलबाक अछि। एहीमे सभक कल्याण थिक।”

“तखन देरी की थिक? हमर आदेशानुसार लक्ष्मण काल्हि भोरे जानकीकेँ रथसँ अयोध्याक सीमाक पार गंगाक पार वाल्मीकि आश्रम लग पहुँचा आबथि।”-एतबा बाजि राजाराम ओछाओनपर पड़ि गेलाह।

अचानक शक्तिस्वरुपा बिलीन भए गेलथि। चारू दिस अन्हार पसरि गेल। ओ कोठरी जेना सुन्न भए गेल।

५

एमहर राम बिछाओन धेने छलाह। ओमहर जानकी रामक बाट तकैत-तकैत थाकि गेल रहथि। शक्तिस्वरुपाक अचानक रामक विमर्श भवनमे प्रकट होएब आ थोड़बे कालमे विलीन भए जाएब, एकटा रहस्य बनि कए रहि गेल छल। ने राजाराम ने हुनकर भाए लोकनि शक्तिस्वरुपाकेँ चिन्हि सकलथि,किंवा यदि चिन्हिओ गेल होथि तँ किछु कहि नहि सकलथि। ओ सभ तँ स्वयं परेसान रहथि। ई तँ स्पष्टे छल जे तीनू भाइ जानकीक निर्वासनक समर्थनमे नहि रहथि। से बात ओ अपना भरि राजारामकेँ कहबो केलखिन। कहबेटा नहि केलखिन,विरोधो केलखिन। मुदा जखन हुनका सभकेँ बुझेलनि जे राजाराम निर्णय लए चुकल छथि ,ओ अपन बातपर अडिग छथि, तखन ओ सभ करबे की करितथि? ओ सभ नहि चाहथि जे राजाराम संगे सामना-सामनी झंझटि भए जाए । से होइत तँ ओ विनाशकारी होइत। ओहिमे ककरो हितसाधन संभव नहि छल। अयोध्या नरक बनि जाइत। अस्तु,तीनू भाइ परिस्थितिसँ समझौता केलनि आ राजारामक आदेश मानि लेलनि। आर कोनो उपायो नहि छल। मुदा शक्तिस्वरुपा बैसले नहि रहि गेलीह।

“आब बहुत भए गेल। जानकीक शक्तिक सही अनुमान अखनहु अयोध्यावासीकेँ नहि भेलनि अछि। एसगरे राजाराम की कए सकताह? जे राजा स्वयं दुखी अछि,असंतुष्ट अछि,परेसान अछि ओ अपन जनताकेँ केना सुखी राखि सकत?असंभव। हे ओ तँ चलू हुनकर समस्या छनि। मुदा जानकीकेँ अपमानित करबाक अधिकार ककरो नहि अछि। ओ कोनो मामूली नहि छथि,जन्महिसँ विशिष्ट छथि। ओ रामक संग अयोध्याक कल्याणक लेल सोचि रहल छलीह। असलमे भावी प्रबल होइत अछि। जानकीक भाग्यमे कष्टे-कष्ट लिखल छनि। तँ केओ की करत? लोक ई बात कहि सकैत अछि। मुदा ई सभ चलए बला नहि अछि। हम छी ने,हुनके

शक्तिसँ निस्सृत शक्तिस्वरुपा। सभकेँ ओकर गलतीक फल भोगहि पड़तैक। मिथिलाक असंख्य पुरुष आ स्त्रीकेँ पता लगबाक देरी अछि। फेर देखि लेब तमासा ।”

हनुमानजीकेँ केना-ने-केना एहि घटनाक जानकारी भेटलनि। ओ कहिओ नहि सोचने रहथि जे एहनो भए सकैत अछि। ओ मोने-मोन सोचैत छथि-

“जे राम जानकीक अपहरणक बाद गाछ-बिरीछ,जंगलक समस्त जीव-जन्तुसँ जानकीक पता पुछैत रहथि,हुनकर वियोगमे दिन-राति कनैत रहथि, रावण सन प्रतापी राजासँ यद्ध कए ओकरा नष्ट कए देलथि ,सएह राम एकटा मामूली आदमीक कहलापर जानकीक परित्याग कोना कए सकैत छथि? मुदा हम करी तँ की करी? एक दिस राजाराम आ दोसर दिस माता जानकी। ककर पक्ष ली,ककरा बुझाबी।एहन धर्मसंकटसँ तँ रामे रक्षा करथि। ओ तँ सर्वज्ञाता छथि,सर्वशक्तिमान छथि। जे चाहथि से कए सकैत छथि ,तखनहु जानि बुझि कए हुनके संगे, जे हुनकर समस्त शक्तिक श्रोत छथिन,एहन अन्याय करबाक हेतु आतुर किएक छथि?”

ओमहर वाल्मीकि मुनिकेँ ध्यानक माध्यमसँ सभ किछु पता लागि गेल रहनि। हुनकर रामायणक अपूर्ण भागक रचना होमए जा रहल छल। ओ मोने-मोन हनुमानजीकेँ ध्यान केलथि । हुनकासँ जानकीक रक्षा करबाक प्रार्थना केलनि।

“ऋषिवर! ई की कहि रहल छी? माता जानकी सर्वशक्तिमान छथि। हुनका ककरो रक्षाक प्रयोजन नहि छनि,ओ स्वयं जे चाहतीह से कए सकैत छथि। राजाराम तँ हुनके शक्तिक बले ठाढ़ छथि,नहि तँ ...।”

“ई सभ तँ भेल मुदा व्यवहारमे ,यथार्थमे जे भए रहल अछि से तँ अहाँ देखिए रहल छी ने।”

“चिंता नहि करू ऋषिवर! शक्तिस्वरुपा अपन काज कए रहल छथि। राजारामकेँ ई सभ बहुत महग पड़तनि। देखिऔ तँ सही जे की होमए जा रहल अछि।”

“अहाँ तँ बुझौअल बुझा रहल छी। हमरा साफ- साफ किएक ने कहैत छी जाहिसँ रामायणक रचना आगू बढ़ि सकए।हमर कलम आगू चलबाक हेतु आतुर अछि।”

“राजारामसँ जानकीक समस्त शक्ति शक्तिस्वरुपा बनि कए निकलि चुकल छथि। ओ जानकीक सम्मानक रक्षाक लेल कृतसंकल्प छथि। अहाँ बेसी चिंता नहि करू ऋषिवर! कलम तैयार राखू। रामायण आगू बढ़ि रहल अछि।”

६

जानकी अखनहु बेहोस पड़ल छथि। शक्तिस्वरुपा हुनका ओहिना छोड़ि बिदा भेलीह मिथिला। ओ वायुमार्गसँ जानकीधाम पहुँचैत छथि। ओहीठामसँ ओ अपन शक्तिक तरंगसँ समस्त मिथिलाबासीकेँ आह्वान करैत छथि-

ई समय सुतबाक नहि अछि
जानकी जे समस्त मिथिलाक
माता समान छथि,
जिनका प्राप्त कए
जनक सभ दिन आह्लादित रहलाह
आनन्दमे रहलाह
कतेकदिन दरि
बजैत रहि गेल छल रसनचौकी
जखन रामसंग हुनकर बिआह भेल छलनि
जखन अयोध्यासँ दसरथ अनने छलाह सैकड़ों बरिआती
एक्के संगे चारू भाइकेँ
भेल रहनि बिआह
एक्के परिवारमे
केहन मनोरम छल ओ दृश्य
सौंसे मिथिला नाचि रहल छल
गाबि रहल छल
बाजि रहल छल बधाबा गाम-गाम
जे समस्त मिथिलाक हृदयमे
जन-जनमे विराजित छथि

जे आबए बला हजारों साल धरि
मोन पाड़ल जेतीह
एहि लेल जे ओ अपन पतिक अनुसरण करैत
सभ किछु त्याग कए देलथि
वर्षक-वर्ष जंगल-झाड़मे बौआइत रहलथि
बिसरि गेलथि राजशी ठाठ-बाट
जे हुनका सभ दिन जनकक राजमे सुलभ छलनि
जे राबण सन दुष्ट आ अहंकारी राजाकेँ
नहि देलनि कहिओ भाव
आ सहैत रहलीह घोर कष्ट
लंकाक पंचवटीमे
जिनका तरुआरिक धार नहि डरा सकलनि
जे सभ दिन रहलीह समर्पित रामकेँ
से जानकी निर्वासित भए रहल छथि अयोध्यासँ
ओही राम द्वारा
जे लए चुकल छथि हुनकर अग्निपरीक्षा
लंका विजयक बाद
फेरसँ अंगीकार करबासँ पूर्व
कहू ई केहन अन्याय अछि
जे जानकी भोगबाक हेतु विवश छथि
गर्भवती होइतहुँ छोड़ल जा रहल छथि
निरापद जंगलमे
बिना कोनो साज-बाजकेँ
की मिथिलाक युवक सहि सकत ई अन्याय
नहि, नहि
तखन उठू ,देरी नहि करू
ई प्रश्न जानकीक व्यक्तिगत नहि छनि
अपितु,समस्त मिथिलावासीक
आत्मसम्मानकेँ चुनौती अछि
जागू,जागू हे मिथिलावासी जागू

विलंब नहि करू
जानकी बजा रहल छथि
उठाउ अबाज अन्यायक विरुद्ध
जे जानकी भोगबाक लेल
विवश कए देल गेल छथि

शक्तिस्वरुपाक आह्वानपर जानकीधामक लगपासमे हंगामा मचि गेल। रातिएमे ई समाद काने-कान समस्त मिथिलामे पसरि गेल। राजा जनक ओहि समय विश्राममे छलाह। प्रातः ब्राह्मीमुहुर्तमे उठले छलाह कि प्रहरी दौड़ल आएल-

“महाराज! महाराज!”

“की भेलह? भोरे-भोर तूँ परेसान किएक छह?”

“हम एकटा महत्वपूर्ण सूचना देबए आएल छी।”

“बाजह,जल्दी बाजह।”

“महाराज पता ने की कारण अछि जे सौंसे मिथिलाक युवक जानकीधाममे उपस्थित भए रहल छथि। ओ सभ जोर-जोरसँ नारा लगा रहल छथि-

मैथिलीक अपमान नहि सहत मिथिला
चलै-चलू यौ मिथिलावासी ,जानकीधाम चलू।देरी नहि करू।”

“मुदा जानकीकेँ भेलनि की?”

“से तँ नहि कहि सकैत छी। हम तँ जे पता लागल से कहि देलहुँ।”

“ठीक छैक। तूँ जाह। हम पता लगबैत छी जे बात की छैक। जानकी सुरक्षित छथि कि नहि।ओहुना जकर राजाराम सन प्रतापी पति होथि से असुरक्षित कोना भए सकैत छथि? भए सकैत अछि जे ई सभ कोनो षड़यंत्र होइक।”

प्रहरी वापस चलि गेल। महाराज जनक तुरंत प्रमुख अधिकारीलोकनिकेँ बजओलनि। ओ सभ दौड़ले राजा जनक लग पहुँचि जाइत छथि। राजा जनक हुनका लोकनिक संग मंत्रणा करैत छथि।

राजा जनक आ हुनकर प्रमुख अधिकारीलोकनिक बीचमे मंत्रणा

राजा जनक आ हुनकर प्रमुख अधिकारीलोकनि बीचमे मंत्रणा बड़ीकाल धरि चलैत रहल।

“हमसभ तँ रामक राज तिलकक समयमे अयोध्यामे छलहुँ। तखन तँ कोनो समस्या नहि बुझाएल। जानकी बहुत सम्मानक संग रामक बामाँ भागमे अपन उचित स्थानपर राजसिंहासनपर विद्यमान छलीह। राम राज्याभिषेकक समय उपस्थित अयोध्याक जनता जानकीकेँ राम संग बैसल देखि भावविभोर छलाह। ककरहु कोनो प्रकारक दुबिधा नहि छल। अचानक केना की भेलैक, एहि बातक सही जनतब होएब जरूरी अछि।”- जनकजी बजलाह।

“हमरा पता लागल अछि जे संपूर्ण मिथिलामे केना-ने-केना अयोध्यासँ जानकीक निर्वासनक समाचार पसरि गेल अछि। सैकड़ोंक संख्यामे मिथिलाक युवकसभ जानकीधाममे उपस्थित छथि। सभसँ आश्चर्यक बात तँ ई अछि जे अचानक एकटा मैथिलीपुत्र नामक युवक हुनकासभक नेतृत्व कए रहल छथि । शक्तिस्वरुपा सेहो ओतए पहुँचि गेल छथि।”

“शक्तिस्वरुपा के? ”

“सुनबामे आएल जे जखनहि राजाराम जानकीक विरुद्ध अपन निर्णय भाइलोकनिकेँ सुनओलनि,तखनहि हुनकर देहसँ सभटा शक्ति बहरा गेलनि,ओ निष्तेज भए गेलाह, व्याकुल भए ओछाओनपर पड़ि गेलाह। तखनेसँ शक्तिस्वरुपा जानकीक सम्मानक रक्षार्थ अयोध्या सहित मिथिलावासी लोकनिकेँ उद्वेलित केने छथि।”

“मुदा ई संभव केना भेल?कहाँ अयोध्या ,कहाँ जानकीधाम? एतेक जल्दी ई सभ केना भेल? ”

“ई सभ शक्तिस्वरुपाक चमत्कार छनि । महाराज! ओ कोनो साधारण मनुक्ख नहि छथि। जखन जतए चाहथि क्षण भरिमे पहुँचि सकैत छथि। जे चाहथि कए सकैत छथि।”

“तखन तँ राजारामकेँ बहुत मोसकिल छनि।”

“निश्चित महाराज! हुनकर परेसानीक तँ कोनो अंते नहि बुझा रहल अछि। एकदिस तँ ओ श्रीहीन भए गेल छथि। दोसर दिस जाहि

जनताकेँ प्रसन्न करबाक हेतु ओ जानकीकेँ निर्वासित केलनि,सेहो तमसा गेल छनि।”

“से केना? ”

“सुनबामे आबि रहल अछि जे अयोध्यावासीसभ जानकीकेँ कोनो हालतिमे अयोध्यासँ बाहर नहि जाए देबए चाहैत छथि।”

“एतेक जल्दी ओ सभ ई बात कोना बुझि गेलथि?”

“शक्तिस्वरुपाक कमाल छनि श्री मान् !”

“तखन तँ बहुत चिंताक बात अछि। प्रमुखसचिवक की विचार छनि?”

“सभसँ पहिने तँ हमरासभकेँ अपन राजकेँ नियंत्रित रखबाक अछि। पता नहि ई मैथिलीपुत्रके अछि? अचानक जननायक बनि कए सामने प्रकट भए गेल अछि। मिथिलावासीसभ ओकरा पाछू ठाढ़ो भए गेल छथि। हुनकासभकेँ एहि बातक ध्यान रखबाक चाहिअनि जे मिथिलामे जनक सन राजा छथि। ओ स्वयंसमर्थ आ न्यायप्रिय छथि। फेर अयोध्यासँ हमरा लोकनिकेँ बहुत घनिष्टता रहल अछि,अनुराग रहल अछि। हमर चारि-चारिटा बेटी ओतुका राजपरिवारमे विवाहित छथि। प्रश्न मात्र जानकीएक नहि अछि। आर तीन बहिन तँ ओतहि छथि। तेँ संयम आ संतुलन बहुत जरूरी अछि। फेर अयोध्या कोनो मामूली राज्य तँ अछि नहि। राजारामक धनुषक टंकारक आगू ककरो ठहरब मोसकिल होएत। जखन रावण सन प्रतापी राजाकेँ ओ मारि देलनि, ओकर समस्त परिवार नष्ट कए देलनि तखन अनकर तँ बाते छोड़ू।”

“तकर माने की ? की हम सभ जानकीक रक्षा नहि करी? मूकदर्शक बनि कए रहि जाइ? यदि हमसभ किछु नहि करी आ मैथिलीपुत्रक नेतृत्वमे समस्त मिथिला अयोध्या दिस बढ़ि जाए तखन की होएत? हमरा सभक इज्जतिक की होएत?”-जनक जी बजलाह।

“युद्ध एहि समस्याक समाधान नहि थिक महाराज! हमसभ ज्ञान-विज्ञानक बलेँ दुनिआमे प्रतिष्ठित रहलहुँ अछि। भावनामे बहि कए अनुचित काज नहि करबाक अछि। मानलहुँ जे जानकीक प्रतिए सिनेहक कारण मिथिलाक युवकसभ उत्तेजित छथि,उद्वेलित छथि,मुदा ओ सभ भ्रमित बुझाइत छथि। हुनकासभकेँ सही मार्गदर्शनक प्रयोजन छनि। अन्यथा ओ

सभ जानकीकेँ मदति की करताह,अपितु मिथिलाक लेल भारी समस्या उत्पन्न कए देताह।”

“अखन बेसी वाद-विवादक समय नहि अछि। प्रमुखसचिव तुरंत जानकीधाम जाथि आ ओहिठामक स्थितिकेँ नियंत्रणमे लेथि। मैथिलीपुत्रसँ हमरा भेंट करबाक व्यवस्था करथि। हम हुनकासँ गप्प करबाक लेल बहुत उत्सुक छी। आर जे होउ,ओ बहुत मार्मिक बात उठओने छथि ताहि लेल सभ किछु प्राण उत्सर्ग करबाक लेल सेहो तैयार छथि। ई मामूली बात नहि भेल।”-जनक जी बजलाह।

“अहाँ चिंता जुनि करू महाराज। हमसभ तुरंत जानकीधाम जाइत छी। ओहिठाम जेना जे होएत तकर सूचना हम अपनेकेँ दैत रहब।”

७

ओमहर जानकीधाममे लोकक मेला लागि गेल छल। की जबान,की बूढ़,की स्त्री ,जे जतहि छल जहिना शक्तिस्वरुपाक आह्वान सुनलक,ओतहिसँ जानकीधाम दिस बिदा भए गेल। एतेक जल्दी ओतए लोकक मेला लागि जाएत से ओहो नहि सोचने रहल हेतीह। मुदा जानकीक प्रतिष्ठा आ मर्यादासँ जुड़ल प्रश्न सुनितहि समस्त मिथिलावासी भाव विह्वल भए गेल रहथि। जानकीधाममे उपस्थित भीड़ रहि-रहि कए नारा लगा रहल छल-

“जय जानकी! जय जानकी! ”

शक्तिस्वरुपाकेँ केओ देखि नहि पाबि रहल छल,मुदा हुनकर ओजस्वी भाषणसँ सभ प्रभावित छल। अचानक ओहि भीड़सँ गौर वर्ण ,छओ हाथक एकटा युवक बहराइत छथि। हुनकर हाथमे मिथिलाक प्रसिद्ध माछ झंडा छलनि। दोसर हाथमे जानकीक चित्र छलनि। ललाटपर लाल ठोप छलनि। हुनका देखितहि ओहिठाम उपस्थित लोकसभ एकस्वरमे बाजि उठल-

“मैथिलीपुत्र अमर रहथि! “

मैथिलीपुत्र मंचपर ठाढ़ भए ओतए उपस्थित लोकसभकेँ आह्वान करैत छथि-

“समस्त मिथिलावासी भाइ-बहिनकेँ सादर प्रणाम!

अहाँसभकेँ एहिठाम उपस्थित देखि हम बहुत प्रसन्न छी। हमरा आब विश्वास भए गेल अछि जे मिथिला जानकीक अपमान नहि सहत,ओकर प्रतिकार कइए कए रहत। जानकीकेँ हुनकर मर्यादा अनुकूल स्थान दिआ कए रहत। कहू हम सत्य बाजि रहल छी कि नहि?”

“अटल सत्य मान्यवर!

मुदा हमसभ अपनेक परिचय चाहब,बुझए चाहब जे अपनेकेँ कहबाक तात्पर्य की अछि? जानकीकेँ की परेसानी भए गेलनि? ओ तँ मर्यादापुरुषोत्तम रामक अर्धाङ्गिनी थिकीह। तखन हुनका की विपत्ति भेलनि जे अचानक ई सभ भए रहल अछि?सभ बात परिछा कए कहल जाओ।”

“अहाँसभ शांत तँ होउ। सभ बात शक्तिस्वरुपा अपने अहाँसभक सम्मुख रखतीह। हम तँ अहींक बीचक लोक छी। मिथिलाक संतान छी। अहाँक भावनाक परिपोषक छी।सभसँ ऊपर जानकीक सम्मानक रक्षार्थ प्रतिवद्ध छी।इएह थिक हमर परिचय। ने हमर कोनो जाति अछि ने कोनो गाम। मिथिले हमर जाति अछि आ मिथिले गाम।हमहीं नहि, एहिठाम उपस्थित सैकड़ों युवकसभक एक्के लक्ष्य छनि। माता जानकीक लेल जिअब, हुनके लेल मरब। जरूरी हेतैक तँ अयोध्या के कहए,कालोसँ हमसभ लड़ि जाएब।

जय जानकी!

जय मिथिला!

आब अहाँसभ धैर्यपूर्वक शक्तिस्वरुपाक आह्वान सुनू। सभ किछु अपने बुझा जाएत।”

ओहिठाम उपस्थित सैकड़ों लोकसभ एकस्वरसँ चिकरि उठलाह-

जय जानकी!

जय मिथिला!

जय मैथिलीपुत्र!

सभ एही प्रयासमे छथि जे शक्तिस्वरुपाकेँ देखिअनि,हुनकर परिचय प्राप्त करी,हुनका मुँहे सुनी जे हुनकर की अभिप्राय छनि? जानकीकेँ के की कष्ट देलकनि? अखनहि तँ लंका विजयक बाद राजारामक राज्याभिषेक भेल छल। जानकी रानीक रुपमे सुशोभित भेल छलीह। तखन ई सभ की सुनि रहल छी? अचानक लागल जेना बिजलौका चमकल। सौंसे

प्रकाशमय भए गेल। उत्तरपूब कोन दिससँ जेना ठनकाक अबाज सुनाएल। मुदा केओ किछु देखि नहि पाबि रहल अछि।

लोकसभक जिज्ञासाकेँ शांत करबाक हेतु शक्तिस्वरुपा बाजि उठलीह-

हे हमर भाइ-बहिन लोकनि!

हम छी शक्ति जे जानकीक रूपमे राजाराम लग सदिखन विराजमान रहल छी। मुदा अखन ओ स्वयं बिदति केलनि आ हमरा अपनासँ पृथक कए देलनि। हम शक्तिस्वरुपा जानकीक मर्यादाक रक्षार्थ हुनकर नैहरक लोककेँ आह्वान करैत छी। आब चुप रहबाक समय नहि अछि। जानकीकेँ एकटा मामूली आदमीकेँ कहलापर अयोध्यासँ निर्वासित कए देल जानि जखन की हुनका संतान होनहारी छनि। से कतएसँ उचित कहल जाएत? मुदा से कएल जा रहल अछि। अहीं कहू जे इ उचित अछि?

“कदापि नहि। हमसभ से नहि होमए देब। जान-रहए की जाए।जाबे हमसभ जीबि रहल छी,ताबे जानकीक सम्मानक रक्षा अबस्स करब।अहाँ स्पष्ट करू जे हमरासभकेँ की करबाक अछि।”

“अहाँलोकनिक भावनासँ हम पूर्ण परिचित छी। हमरा पूर्ण विश्वास छल जे अहाँ लोकनि अवसर अएलापर जानकीक संगे अबस्स ठाढ़ हेबनि। के कहैत अछि जे ओ अबला छथि? नहि,नहि ,कदापि नहि। ओ तँ स्वयं शक्तिसंपन्न छथि। बस मर्यादाक कारण सभ किछु सहैत रहि गेल छथि। मुदा कोनो बातक एकटा हद होइत छैक। आब तँ तकर सीमा पार कए रहल अछि। हमरा लोकनिक जीवन-मरणक प्रश्न उपस्थित भए गेल अछि। जानकीक सम्मानक रक्षा होएत अन्यथा हमसभ जान दए देब।”

मिथिलाक कण-कण जानकीक प्रतिए सिनेहसँ परिपूर्ण अछि। हमर अभिन्न अंग छथि। अखनहु भोरसँ साँझ धरि घर-घर हुनकर चर्चा होइते रहैत अछि। केना जानकीक जन्म भेलनि,केना जनकजी हर चलबैत काल हुनका देखलनि। केना ओ जनमौटीकेँ पाबि प्रसन्न भेल रहथि। तकर बाद सभ दिन राजसी ठाठ-बाटमे ओ पालल गेलीह। ई तँ एकटा संयोगे छल जे विश्वामित्रक संग आएल रामकेँ पुष्पवाटिकामे जानकी संग भेंट भेलनि ओ भेंट अविस्मरणीय बनि गेल। तकर बाद तँ जे भेल से सभ जनिते छी। केहन सुखद माहौलमे जानकीक बिआह भेलनि। समस्त परिवारमे

आनन्दक माहौल छल। जानकी सासुर गेलीह। संगे हुनकर आर तीनू बहिनक सेहो बिआह भेलनि। चारू बहिन एक्के ठाम अयोध्याक राज परिवारमे आबि गेलीह। आनन्दे-आनन्द छल। मुदा कहि नहि एहिमे ककर नजरि लागि गेल?जखने रामकेँ वनबास भेलनि जानकीक दुर्दिन शुरू भए गेलनि। सभ किछु सहि आब जखन राम राजा बनलाह,जानकी रानी बनि गेलीह ,तखन ई अचानक की भए रहल अछि?किएक भए रहल अछि?

शक्तिस्वरुपाक ओजपूर्ण बात सुनि कए माहौल गरमा गेल।सभ तरह-तरहक अस्त्र-शस्त्र उठा लेलक । लगैत छल कोनो क्षण किछु भए जाएत। सभ अयोध्या दिस बिदा हेबाक लेल तैयार छल। मैथिलीपुत्र हुनकालोकनिक उत्साह देखि दंग छलाह।

एतबेमे जनकक प्रमुखसचिव ओतए उपस्थित भेलाह।

८

प्रमुखसचिव जानकीधामक माहौल देखि विस्मित छलाह। हुनका संगे जनकपुरसँ आएल वरिष्ठ सैन्य आ पुलिस अधिकारी लोकनि सामान्य वस्त्रमे चारूकात पसरि गेलथि । ओ सभ लोकक मोनक भाव अखिआसि रहल छलाह। ओहिठाम उपस्थित भीड़ एक हिसाबे उनमत्त छल। जकरा जे मोन होइक से बाजए। जकरा जे नारा लगेबाक मोन होइक से लगाबए। ककरो कथुक परिबाह नहि रहैक,ककरो भय नहि रहैक। ओ सभ किछु करबाक हेतु आतुर छल। बस एकटा चिनगी चाही आ सभ किछू धू-धू कए स्वाहा होमए लागत। प्रमुखसचिव केँ चारूकात पसरल अपन सहायकलोकनिसभसँ गुप्त समाद भेटि रहल छलनि। सभसँ बेसी आश्चर्य आ चिंताक कारण तँ शक्तिस्वरुपा छलीह। मैथिलीपुत्र लए कए कम परेसानीमे रहथि से बात नहि। मुदा कम सँ कम ओ देखल जा सकैत छलाह। हुनकर आकृतिक ऊपर बनैत-बिगड़ैत भाव देखल-परेखल जा सकैत छल। मुदा शक्तिस्वरुपा? हुनकर तँ कोनो थाहे नहि छलनि। हुनका केओ की कए सकैत छल? किछु नहि।

“एहन मे की कए सकताह महाराज जनक? ओ यदि स्वयं आबि जाथि,तथापि किछु नहि कए सकताह। ई भीड़ तँ तेहन उन्मादी अछि जे

केओ एकरा नहि नियंत्रित कए सकैत अछि। मात्र शक्तिस्वरुपा आ मैथिलीपुत्र किछु करथि तँ करथि।”

सभ किछु देखि सुनि लेलाक बाद प्रमुखसचिव मंचपर उपस्थित होइत छथि-

“हे मिथिलावासी!

सुनू हमर बात। अहाँसभक दुख बहुत उचित अछि। राजा जनक अपने लोकनिक भावनाक आदर करैत छथि। अपने लोकनिक कहल कोनो बात एहन नहि अछि जकरा गलत मानल जा सकत। असलमे राजा जनक घंटो एहि समस्यापर हमरासँ सभ विकल्पपर चर्चा केलनि अछि। अयोध्या बहुत मजगूत राज्य तँ अछिए ,संगे हमरा लोकनिक बहुत आप्त रहल अछि। जानकी आ हुनकर तीनटा बहिन एक्के परिवारमे बिआहल गेल छथि। एहिसँ पूर्वो जखन चित्रकुटमे हमसभ रामक बनवासक क्रममे गेल रही तखनहु परिस्थिति कोनो सामान्य नहि छल। मुदा बहुत प्रयासक बाद युद्ध टारल जा सकल। राम स्वयं कोनो हालतिमे राजा बनबाक लेल तैयार नहि भेलथि। एहन हालतिमे जनक आ हुनकर सेना की करतिथि? सभ केओ वापस चलि अएलाह। राम अड़ि गेलाह, चौदह वर्ष वनबासक संकल्पकेँ पूर्ण करबाक लेल। आर बात तँ छोड़ू,पिताक मृत्युक समाचार सुनिओ कए ओ हुनकर श्राद्ध लेल अयोध्या नहि लौटलथि। रामकेँ कथुक लालसा नहि छनि,राजमद नहि छनि,कोनो छल-प्रपंचक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि । सोचल जा सकैत अछि जे ओ कतेक महान छथि। तखन जानकीक संगे एना किएक भए रहल छनि,ओहो बेरि-बेरि । ई विषय अबस्स विचारणीय अछि।

“हम सभ बुझि गेलहुँ। अहाँसभ बुते किछु नहि होएत। जानकी एहिना बेरि-बेरि अपमानित होइत रहतीह। मात्र कहि देलासँ तँ हुनकर दुख कम नहि हेतनि। जखन गर्भिणी जानकीकेँ अपन घर-परिवारसँ हटा देल गेलनि तखन बाँचिए की गेल? ई तँ अपमानक पराकाष्ठा भेल। आब हमसभ स्वयं समाधान करब। मिथिलाक समस्त युवक ई सपथ खाइत छथि जे जाबत जानकी आ हुनकर संतानकेँ सम्मानपूर्ण स्थान नहि भेटि जेतनि ताधरि हमसभ चैन नहि लेब। एहि लक्ष्यक प्राप्तिक लेल हमसभ तत्काल प्रभावसँ जानकीधुजावाहिनीक गठन करबाक घोषणा करैत छी।”

“अहाँसभ उत्साह प्रशंसनीय अछि। मुदा एहने परिस्थितिमे मानसिक संतुलन बनेबाक काज रहैत अछि। युद्ध कोनो समस्याक समाधान नहि होइत अछि। हमसभ जानकीक सम्मानक रक्षाक हेतु प्रतिवद्ध छी। एहिमे कोनो संशयक प्रश्ने कहाँ होइत अछि? मुदा ताहि लेल युद्ध अंतिम विकल्प हेबाक चाही। कारण एकर परिणाम ककरो लेल नीक नहि होइत अछि। फेर पारिवारिक समस्याक समाधान युद्धसँ भइए केना सकैत अछि?”

“चुप रहू। ई आब पारिवारिक समस्या कतए रहि गेल। जखन धरि जानकी अयोध्याक राजभवनमे छलीह ताधरि तँ ओ पारिवारिक समस्या भए सकैत छल। मुदा आब तँ ओ अपने पति द्वारा अपने घरसँ निष्काषित कएल जा रहल छथि। सुनैत छी लक्ष्मण हुनका रथपर लए अयोध्यासँ फटकी जंगल दिस बिदा भए गेल छथि। आब तँ आर-पारक लड़ाइ हेबे करत। अहाँ चुपचाप देखैत रहू। ई युद्ध राजासभक बीचमे नहि,अपितु मिथिलावासी द्वारा अयोध्याक दुष्ट लोकसभसँ लड़ल जाएत जकरा कारण जानकीक ई गति भेलनि। जानकीधुजावाहिनी बनि चुकल अछि। शक्तिस्वरुपा एकर सर्वस्व थिकीह। हमसभ तँ निमित्र मात्र छी।”

मिथिलापुत्रक नेतृत्वमे मिथिलावासीक दृढ़ विचार सुनि कए प्रमुखसचिव कैँ ठकबिदोर लागि गेलनि,किछु फुरेबे नहि करनि जे आब की कएल जाए,एहि परिस्थितिसँ कोना पार पाओल जाए। ओ तुरंत ओहिठामक परिस्थितिक जनतब जनककेँ देबाक हेतु सदल-बल जनकपुर वापस बिदा भए गेलाह।

९

राजारामक आदेश पाबि लक्ष्मण जानकी संगे रथपर सबार भए जाइत छथि। रथ तेजीसँ अयोध्याक सीमासँ बाहर भेल जा रहल अछि। जानकीकेँ किछु नहि बुझल छनि जे की होमए बला अछि। ओ तँ आनन्दमे छथि जे हुनकर इच्छाक सम्मान करैत राजाराम हुनका अपन अनुज संगे जंगल आ नदीक विहंगम दृश्यक अवलोकन करेबाक हेतु पठा रहल छथि। मुदा लक्ष्मणकेँ तँ सभ बात बुझल रहनि। तेँ ओ बहुत दुखी छलाह,उदास चलाह। रहि-रहि कए छातीमे दर्द उठि रहल छनि,मोनमे घोर कष्ट छलनि ।

तथापि,ओ बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ संयत रखने छलाह। मोने-मोन विधाताकेँ उपराग दए रहल छलाह-

"हे विधाता! अहाँ एहन क्रूर किएक भए गेलहुँ? हे जे भेलहुँ से भेलहुँ ,मुदा एहन हृदय विदारक दृश्य देखबाक हेतु हमरे किएक चुनलहुँ।"

लक्ष्मण रहि-रहि कए कानि रहल छलाह। हुनकर आँखिसँ नोर खसिते जा रहल छलनि। ओ लगातार अंगपोछासँ अपन आँखिसँ खसैत नोरकेँ पोछैत छलाह। एहनमे ओ कतेक काल धरि अपन मनोभावकेँ जानकीसँ नुका सकैत छलाह। आखिर जानकी हुनका एना भाव विह्वल देखि पुछिए लेलखिन-

"बात की अछि? अहाँ हमरासँ जरूर किछु नुका रहल छी ।"

लक्ष्मण किछु उत्तर नहि दए पाबि रहल छथि। हुनका लोकनिक रथ आब अपन स्थानपर पहुँचि गेल अछि। अयोध्याक सीमा बहुत फटकीए छुटि गेल अछि। आब लक्ष्मण द्वारा राजारामक आज्ञाक पालन करबाक क्षण आबि गेल अछि। मुदा अखनहु जानकी लक्ष्मणक अभिष्टसँ परिचित नहि छथि। से होउ,मुदा लक्ष्मणक मनोदशा ,हुनकर मुखाकृतिपर उभरैत अत्यंत करुणापूर्ण भाव जानकीसँ नुकाओल नहि जा सकल।

"अहाँ एना कानि किएक रहल छी?"

आब लक्ष्मण लग कोनो विकल्प नहि रहि गेल छलनि। हुनका राजारामक आदेशक क्रियान्वयन करबाक छलनि। ओ अपन छातीकेँ वज्र करैत बजैत छथि-

"आब अहाँसँ बिदा लेबाक समय आबि गेल अछि...।"ओ आर किछु बाजए चाहैत छलाह,मुदा बाजि नहि सकलाह। ठोह पारि कए कानए लगलाह। रथ रूकि गेल। लक्ष्मण रथसँ उतरि गेलथि,रथसँ उतरितो काल कनिते जा रहल छथि।

जानकी सेहो रथसँ उतरि गेल रहथि। लक्ष्मणकेँ एना बजैत आ तकर बाद कनैत देखि जानकी चिकरि उठैत छथि-

"अहाँ साफ-साफ किएक नहि बजैत छी। हम तँ एहिठाम भ्रमण करबाक हेतु आएल छलहुँ,फेर ई बिदा हेबाक गप्प कतएसँ आबि गेल?हम एहिठाम एसगरि रहिए कए की करब? की राजाराम पाछूसँ आबि रहल छथि?"

“नहि,नहि। से सभ किछु नहि भए रहल अछि। हमरा ओ आदेश देने छथि जे अहाँकेँ अयोध्याक सीमासँ बाहर वाल्मीकि आश्रम लग पहूँचा दी आ स्वयं वापस चलि आबी।”

“एहन जुलुम,एहन छल ,ओहो अपन पत्नीक संगे जे गर्भिणी अछि,जे जल्दीए हुनकर संतानक माए बनए जा रहल अछि। ई तँ घोर अत्याचार अछि,अमानवीय अछि। अफसोच अछि जे एहन क्रूर काजक लेल अहीं सहयोगी भेलहुँ।”

“हम अपना भरि हुनका बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ,हुनकर हाथ-पैर जोड़लहुँ,मुदा ओ एकदम कठोर भए गेलाह। हम आर कइए की सकैत छलहुँ? राजाज्ञाकेँ मानबाक हेतु हम विवश भए गेलहुँ।”

“राजाज्ञा, राजाज्ञा की रटि रहल छी। अहाँ हमर भावी संतानक पित्ती थिकहुँ,हमर प्रिय देओर थिकहुँ ,सभसँ ऊपर एकटा श्रेष्ट मनुक्ख थिकहुँ,किछु तँ विचार करितहुँ। मना कए दितिअनि।कहितिअनि जे हम एहन अन्यायक साक्षी नहि बनब,अपितु मरि जाएब। मुदा अहाँ तँ मात्र आज्ञाकारी भाए बनि कए रहि गेलहुँ । अफसोच लक्ष्मण,बहुत अफसोच भए रहल अछि अहाँक व्यवहारपर। ”-एतबा बाजि जानकी बेहोस भए ठामहि खसि पड़लीह। लक्ष्मण बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ नियंत्रित केलनि ,आ जानकीकेँ ओहिना भूमिपर पड़ल छोड़ि रथपर जा कए बैसि गेलथि। तकर बाद सुमंत दिस घुमि कए कहैत छथि-

“सारथी ! रथ वापस करह।”

रथ आगू बढ़बाक लेल उन्मुख अछि। लक्ष्मण आ सुमंत सिसकि रहल छथि। रथ मोसकिलसँ दू-तीन डेग आगू घुसकल छल कि जानकीक दशा दशा देखि रथक घोड़ा ठाढ़ भए जाइत अछि,आगू बढ़बासँ मना कए दैत अछि। लक्ष्मणकेँ बुझाए नहि रहल छनि जे एहन विकट परिस्थितिसँ केना पार पाओल जाएत? ओ तँ जल्दी सँ जल्दी ओहिठामसँ सहटि जाए चाहैत छलाह। कनीके फटकी जानकी बेहोस पड़ल छथि। हुनकर आँखिसँ अश्रुप्रवाह भए रहल अछि। सामनेमे तमसा नदीक सभटा पानि जेना नोर बनि कए हुनकर आँखमे समाहित भेल जा रहल छल। लगैत अछि जेना एकटा आर धार ओहिठामसँ बहि रहल अछि। जेना लगीचमे बहैत तमसा नदीक दिशा बदलि गेल अछि। सुमंतसे आहत छल,बिना जानकीकेँ रथ वापस लए जेबाक हेतु ओकर मोन निठ्ठाहे नहि मानि रहल छलैक। मुदा ओ

की करितए? राजपरिवारक अनुचर छल,आदेश मानबाक छलैक। तेँ रथकेँ वापस मोड़ि लेने छल। मुदा रथक घोड़ा एहन विद्रोह कए देत से केओ पूर्वानुमान केना कए सकैत छल?

सुमंतक समस्त प्रयासक अछैत घोड़ा आगू नहि बढ़ल। हारि कए लक्ष्मण रथसँ उतरि जाइत छथि,नहि चाहिओ कए ओ जानकीकेँ भूमिपर बेहोस पड़ल देखैत छथि। लक्ष्मणक हृदय हाहाकार कए उठैत छनि। ओ सहटि कए जानकी लग जाइत छथि,हुनकर पैर छुबैत छथि,हुनकासँ बेरि-बेरि माफी मगैत छथि-

"क्षमा माते! क्षमा! हमरासँ घोर अपराध भेल अछि। हमरासँ बड़का जुलुम करओल गेल अछि।हम आब जीबिए कए की करब? एहन कलंकित जीवनसँ मरण नीक थिक। हम अखनहि एहीठाम तमसा नदीमे कुदि कए अपन प्राणहन्त कए लेब। अहाँ बिना अयोध्या वापस जेबाक कोनो अर्थ नहि अछि। हम अहाँकेँ वापस लइए जाएब। चाहे एहि हेतु राजारामसँ हमरा युद्धे किएक ने करए पड़ए।"

"छी,छी। ई की सोचि रहल छी।राजारामक आज्ञा सर्वोपरि थिक। हम ओकर विरुद्ध सोचिओ कोना सकैत छी? फेर एहन कठिन निर्णय लेबासँ पूर्व ओ सभ बात अबस्से विचारने हेताह।आखिर ओ एहि मामिलामे स्वयं एकटा भुक्तभोगी छथि। जे किछु भए रहल अछि तकर कुप्रभाव सभसँ बेसी हुनकेपर हेतनि। आइसँ राजभवन सुन्न भए जाएत। ओ दिन-राति भने काजमे व्यस्त रहताह,मुदा जखन कखनहु राजकाजसँ फुरसति हेतनि,विश्राम करबाक हेतु अपन भवन जेताह तखन की पओताह?ककरासँ अपन सुख-दुख बटताह?की ओ कहिओ जानकीक वियोगकेँ बिसरि सकताह? कदापि नहि। तखनो ओ ई निर्णय लेबाक लेल विवश भेलाह। सोचल जा सकैत अछि जे हुनका सामनेमे कर्तव्य केहन विडंबना बनि गेल छलनि। असल दुष्टता तँ ओ धोबी केलक जे बिना ठोस जनतबकेँ मात्र जनश्रुतिक आधारपर जानकीपर आरोप लगओलक। हमर तँ मोन होइत अछि जे अयोध्या पहुँचि सभसँ पहिने अपन तरुआरिसँ ओकर गला रेति दी। ओहि पापीकेँ आब एक्को क्षण जीबाक अधिकार नहि थिक।"

“सावधान लक्ष्मण!ई बात नहि बिसरह जे तूँ राजारामक आदेशपाल मात्र थिकह। राजाराम न्याय आ अन्यायक ज्ञान रखैत छथि। ओ जानकीक पतिएटा नहि छथि,अयोध्यासन महान राज्यक महाप्रतापी मर्यादापुरुषोत्तम राम छथि। ओ निर्णय लेबासँ पूर्व एहि मामिलाक सभ पक्षपर नीकसँ विचारि लेने हेताह। तखनहि निर्णय केने हेताह।फेर तकर कार्यान्वयन लेल तोरापर ओ कतेक विश्वास केलनि । एहि काज करबाक लेल तोरे भार देलथि। अन्यथा ओ ककरो संगे जानकीकेँ पठा दितथि। हुनका अबस्से एहि बातक ध्यान रहल हेतनि जे जानकीकेँ एहि परिस्थितिमे घनघोर जंगलमे एसगरि छोड़ि देब कतेक कठिन काज होएत। मुदा तेँ की?”

“राजाराम अपन पतिव्रता स्त्रीकेँ ककरो कहलापर छोड़ि देताह,ओकरा वनबास दए देताह आ समस्त परिवार चुप भए देखैत रहत? अफसोच अछि जे हमहूँ तखन बकरी जकाँ मेमिआइत रहि गेलहुँ।“

“अहींटा नहि छलहुँ ओतए राजन!आरो भाइसभ उपस्थित रहथि ओहि मंत्रणाक क्षणमे। राजाराम तँ सभक सामनेमे अपन बात रखने छलाह आ निर्णय सुना देने छलाह।सभ हतप्रभ छलाह । जे भेल,नहि भेल मुदा ताहि लेल जानकीक कोना दोषी मानल जा सकैत अछि?”

“आब ई सभ सोचबाक की फएदा?तखनहि बजितहुँ ने। जे करबाक छल से करितहुँ।”

“हमरासभ श्रेष्ठ भ्रातालोकनि ओहिठाम उपस्थित छलाह।सभ केओ ओहि घटनासँ पूर्वपरिचित छलाह। कहाँ केओ सोचि सकलथि जे जानकी मिथिलाक राजकुलक बेटी छथि। यदि ओ अयोध्याक राजप्रसादमे नहि राखल जा सकैत छथि तँ हुनका ससम्मान अपन नैहरे पठा देल जइतनि। हुनका वनबास देबाक निर्णय तँ अन्यायक पराकाष्ठा भए गेल।”

“ जे भेल से भेल। आब की करबाक अछि से ने सोचू।“

“आब?जखन सभ किछु भइए गेल,जानकीक जे अपमान हेबाक छल से राजाराम द्वारा कएले गेल तखन हम की कए लेब?हुनकर राजाज्ञाक पालन करी अन्यथा हुनकेसँ युद्ध करी।”

ओहिठाम ठाड़ भेल लक्ष्मण भयाओन अंतरद्वंदसँ गुजरि रहल छलाह। ओ बेरि-बेरि भूमिपर पड़ल बेहोस जानकीकेँ देखैत रहलाह । मोन होनि जे साहस कए आगू बढ़ी,जानकीकेँ पैर पकड़ि क्षमा मांगि ली,हुनका नेहोरा करिअनि-

“चलू,वापस चलू।हम राजारामक आज्ञाक पालन कए लेलहुँ । आब अपन मोनक बात सेहो सुनि लेब जरूरी अछि।”

मुदा लक्ष्मण सोचिते रहि गेलथि। ओ किछु नहि बाजि सकलथि। सुमंतक बेरि-बेरि प्रयासोसँ जखन घोड़ा आगू नहि बढ़ल तँ लक्ष्मण स्वयं ओकरा आदेश करैत छथि। घोड़ा तुरंत रथसहित बिदा भए जाइत अछि।लक्ष्मण किंकर्तव्यविमूढ़ भेल जानकीकेँ ओहिना बेहोस पड़ल छोड़ि रथपर सबार भए बिदा भए जाइत छथि।

जानकी बेहोस धरतीपर पड़ल रहि गेलथि। लक्ष्मण की बजलाह,ओहिठामसँ कखन चलि गेलाह ओ किछु ध्यान नहि कए सकलथि। हुनका तँ लक्ष्मणक पहिले पाँति सुनि जेना सौंसे देहमे करेंट मारि देलकनि। सक तँ हुनका रहबे करनि जे किछु-ने-किछु गड़बड़ होमए बला अछि। लक्ष्मणक आँखिसँ बेरि-बेरि खसैत नोर आ हुनकर वाधित स्वर बहुत किछु संकेत दए रहल छल। तथापि,मनुक्खक स्वभाव थिक जे ओ अनिष्टकेँ टारए चाहैत अछि,सोचैत रहैत अछि जे ई झूठ थिक,एहन भइए नहि सकैत अछि। सएह जानकीओ संगे भेलनि। मुदा जखन रथ निठ्ठाहे ठाड़ भए गेल,लक्ष्मण स्पष्ट रूपसँ राजारामक आदेशकेँ दोहरा देलनि तखन हुनका सहल नहि गेलनि,अचेत भए ठामहि खसि पड़लथि।

जानकी रानी जकाँ सजल छलीह। हुनकर अंग-अंग नाना प्रकारक आभूषणसँ भरल छल। ओ अपन बामाँ हाथसँ अपन मुँह झपने छलीह दहिना हाथ बाहर दिस निकलल छलनि,लागि रहल छल जेना ओ घटित घटनाक घोर विरोध लेल समस्त जीव-जन्तुकेँ आवाहन कए रहल छथि। अचानक एकटा एहन सौंदर्यमयी स्त्रीकेँ माटिपर पड़ल देखि लगपासक समस्त जीव-जन्तु,गाछ-बिरीछ व्याकुल भए गेल।जेना गाम -घरमे कोनो आपातकालीन स्थितिमे सौंसे गामक लोक उपस्थित भए जाइत अछि तहिना ओहिठाम भए रहल छल। आश्चर्यक बात तँ ई छल जे मनुक्ख द्वारा निर्मित एहि दुखद आ अमानवीय प्रसंगक विरोधस्वरुप मनुक्ख निपत्ता भए गेल छल।

देखिते-देखिते समस्त जीव-जन्तु ओहिठाम पहुँचि गेल । ओ सभ जानकीकेँ चारूकातसँ घेरि लेलकनि।आसपासक गाछ-बिरीछसभक डारिसभ हिलि रहल छल।ओकर पातसभसँ खन-खन अबाज निकलि रहल

छल।लगैत छल जेना ओ सभ जानकीकेँ शीतल हबा देबाक भरिसक प्रयास कए रहल अछि।

जानबरसभ आपसमे बतिआ रहल छल-

“ई के छथिन? एना एसगरि जंगलमे किएक पड़ल छथिन?”

“अखन ई सभ चर्चा करबाक समय नहि अछि। सभसँ पहिने हिनका होसमे आनू। ताहि लेल तमसा नदीसँ शीतल जलक व्यवस्था करू। किछुगोटे हबा करिअनु। एहि लेल लगीचक गाछ-बिरीछक मदति लिअ।”

“सही कहि रहल छी। -हरिण बाजल।”

ताबतमे केओ नदीसँ पानि लेने आएल। जानकीकेँ शीतल जलक फुहारा देलकनि। ओहीमे सँ केओ लगीचेक लतामक गाछसँ पाकल लताम तोड़ि अनलक। ओकरसभक सेवासँ जानकी शीघ्रे आँखि खोलि देलनि। चिड़ै-चुनमुनसभ प्रसन्न भए गेल। सभ एकस्वरमे बाजि उठल-“हिनका होस आबि गेलनि। जल्दीसँ किछु जलखैक ओरिआन करू।”

ओ सभ अपना भरि जानकीक देख-रेखमे लागल रहल। मुदा ओ तँ होस अबितहि फेर जोर-जोरसँ कानए लगलीह। हुनकर करुण क्रन्दन सुनि चारूकात हाहाकार मचि गेल। हुनकासंगे चिड़ै-चुनमुन सेहो कानए लागल। जानबरसभकेँ अश्रुपात होमए लगलैक। ककरो किछु फुरेबे नहि करैक जे की करए?

१०

प्रमुखसचिव जनकपुर घुरि गेलाह। एमहर जानकीधाममे माहौल गरमा गेल छल। लगैत छल जेना समस्त मिथिलाक युवक-युवती एकत्र भए गेल छथि। सभ कृतसंकल्प छथि जानकीक सम्मान जीवनक रक्षा लेल। मनुक्ख जखन जान हाथमे लए लिअए तखन कालोकेँ ओकरासँ डर होएत छैक। सएह हाल अखन जानकीधाममे भेल छल। की पुरुष,की स्त्री,की जबान ,की बूढ़ सभ जानकीधाममे आबि गेल छल। जे अखन धरि नहि आएल छल,से रस्तामे छल।जे रस्तामे नहि छल से सभ घरसँ बिदा हेबाक क्रममे छल। चारूकात लोकसभक अथाह समुद्र उपस्थित भए गेल छल। केओ ककरा की कहत? एहन परिस्थितिमे कोनो कुकाण्ड ने भए जाए, ताहि चिंतासँ प्रमुखसचिव वापस जनकपुर चलि गेल छलाह। कारण ओहिठाम केओ हुनकर बातपर विश्वास करबाक हेतु तैयार नहि छल।

लोकसभ आब किछु बरदास करबाक लेल तैयार नहि छल। सभ एतबे बाजए-

"आब एहि पार की ओहि पार।"

"आब जानकी बहुत बरदास कए चुकलीह।"

"जानकीक एहन अपमान आ हमसभ मुरदा भेल देखैत रहब? भए नहि सकैत अछि।"

लोकसभक आँखि लाल-लाल भए गेल छल। भयाओन लगैत छल। एहन आक्रोशित युवकलोकनिकेँ सम्हारबाक हेतु आगू अएलाह-मैथिलीपुत्र।

"हे मिथिलावासी!"

हम अपने लोकनिक वंदना करैत छी। जानकीक सम्मानक रक्षार्थ अपने लोकनिक संकल्पक हम प्रशंसा करैत छी। अहाँ सही मानमे सिद्ध कए देलहुँ जे जनभावना सभसँ ऊपर थिक। एहन समयमे राजा जनक स्वयं संबंधक मोहमे ओझराएल छथि,किंकर्तव्यविमूढ़ छथि,हमसभ आब ककरा दिस ताकू?ककरापर भरोसा करू?प्रमुखसचिव अएलाह,चलि गेलाह। हुनको किछु मतलब रहल हेतनि। किछु विवशता हेतनि। किछु मिथिला अयोध्याक संबंधक ध्यान हेतनि। मुदा हमसभ एहिसभसँ फराक छी। माता जानकी हमर सभक एकमात्र लक्ष्य छथि। यदि जानकी नहि तँ मिथिला नहि। हमरोसभक आस्तित्वेक सबाल अछि।"

"सही कहि रहल छी। मुदा हमरा सभकेँ की करबाक अछि,से तँ बजिऔक। कहीं एहन ने होअए जे हमसभ सोचिते रहि जाइ आ जानकी चलि जाइत रहथि। तखन हमसभ जीबिए कए की करब? तखन एहि आन्दोलनक की अर्थ रहि जाएत? "

"शांत युवक, शांत।" -मैथिलीपुत्र बजलनि।

"शक्तिस्वरुपा मार्गदर्शनक लेल हमरासभक संगे छथिहे। एहिमे ककरो कनीको संशय नहि होअए जे एहि पृथ्वीपर जानकीकेँ केओ किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि। हुनकर शक्ति असीम अछि। ओ तँ स्वयं सर्वसमर्थ छथि। हमरासभकेँ अपन कर्तव्य करबाक अछि। मिथिलाक मर्यादाक रक्षा करबाक अछि। से हमसभ करब। के रोकि सकैत अछि भावनाक एहि प्रचंड ज्वारिकेँ? राजा जनक सभ दिन अपन जनताक संग

देलनि अछि। फेर हुनको तँ जानकी बेटीए छथिन। कोन पिता अपन संतानक हित नहि सोचत? हमसभ सभसँ पहिने जानकीधाम चली। ओहिठाम माताक आशीर्वाद प्राप्त करी आ बिदा होइ अयोध्या दिस।”

“जय जानकी!”-कहैत सभ केओ जानकीधाम दिस बिदा होइत छथि।

मैथिलीपुत्र आगू,आगू आ हुनकर पाछू मिथिलावासी सैकड़ोंक संख्यामे बढ़ि रहल छथि जानकीधाम दिस। मिथिलाक प्रसिद्ध रसनचौकीक सुर आइ बदलल लागि रहल अछि। ओहिसँ योद्धोन्माद उत्पन्न करैत गीतक सुर बाजि रहल अछि। युवकलोकनि थोड़बे आगू बढ़ल होएताह कि जनकपुरसँ सैकड़ों संत-महात्मा ओही दिसामे दौड़ल आबि रहल देखाइत छथि। हुनकरसभक हाथमे त्रशूल अछि। ओ सभ त्रिपुंड लगओने छथि,माथपर लाल-लाल ठोप केने छथि। बीच-बीचमे हर-हर महादेवक नारा लगा रहल छथि। जय जानकी,जय जानकी बाजि रहल छथि।

मैथिलीपुत्र जानकीधाम पहुँचि गेल छथि। ओहिठाम उपस्थित सैकड़ों लोकसभ प्रार्थानक मुद्रामे ठाढ़ छथि। सभ केओ जनकपुरसँ आएल संतक स्वागत कए रहल छथि।

ओहिठाम तीव्रप्रकाश अचानक चारूकात पसरि गेल। शक्तिस्वरुपा समस्त अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित जानकीधाममे विद्यमान भए गेलथि। हुनकर हाथमे तुरुआरि चमकि रहल छल। ओकर धारसँ जेना आगि निकलि रहल छल। जेना ओ कहि रहल छलि-

“आब कोनो अन्यायकेँ बरदास नहि कएल जाएत। जे केओ अन्यायक पक्षमे ठाढ़ देखाएत तकर विनाश निश्चित अछि।”

“हमसभ की करू जाहिसँ जानकीक कष्ट समाप्त होनि,जाहिसँ हुनकर सम्मान आ जीवनक रक्षा होनि।”

अहाँसभ कथुक चिंता नहि करू। मैथिलीपुत्र अहाँसभकेँ आगू मार्गदर्शन करताह। अहाँसभ तहिना करू। हम सदति अहाँसभक संगे छी।”

११

जनकपुरसँ आएल संतलोकनिक उपस्थितिमे मैथिलीपुत्रक नेतृत्वमे जानकीधाममे विद्यमान जानकीधुजावाहिनी शक्तिस्वरुपाक आराधना कए रहल छथि-

“हे शक्तिस्वरुपा!

अहाँ हमरा लोकनेकेँ शक्ति दिअ जाहिसँ हमसभ जानकीकेँ अयोध्याक रानीक रूपमे देखि सकी। अहाँ हमरा लोकनिक मार्गदर्शन करू जाहिसँ हमसभ सही रस्ताक अवलंबन कए अपन लक्ष्यकेँ प्राप्त कए सकी।“

एतबा कहाबक देरी छल कि चारूकातसँ शंखनाद होमए लागल। घड़ी-घण्टा बाजए लागल। ओही समयमे अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित शक्तिस्वरुपा सभक सामनेमे प्रकट होइत छथि। ओ बजैत छथि-

“सुनू,सुनू हे जानकीधुजावाहिनी! ई समस्या कोनो एकदिनुका नहि अछि। अहाँसभकेँ ई नीकसँ बुझल अछि जे राजाराम व्यक्तिगत सुखकेँ तिलांजलि दए जानकीक अयोध्यासँ निर्वासित करबाक निर्णय लेलनि अछि। ओ कोनो सुखी छथि से बात नहि अछि,एहन हालतिमे सुखी भइओ कोना सकैत छथि? मुदा राजाक कर्तव्यक आगू ओ विवश भए गेल छथि।”

“हमसभ ई सभ बात बहुत बेर सुनि चुकलहुँ। जखन जानकीकेँ सुख नहिए भेलनि,जखन ओ अपनो घरमे नहि रहि सकलीह,जखन सभ तरहेँ सही रहितहुँ ओ दण्डित कएल जा रहल छथिहे,तखन आब बाँकी रहि की गेलैक? जानकीक संगे अन्याय तँ भइए रहल अछि ।एहनमे हमसभ चुप कोना रहि सकैत छी?हमसभ हुनका सही स्थानपर आनिए कए रहबनि।”

शक्तिस्वरुपा जानकीधुजावाहिनीक संकल्पसँ प्रसन्न छथि। ओ कहैत छथि-

“अहाँसभक कल्याण होअए। अहाँसभ शीघ्र अपन लक्ष्यप्राप्त करबाक हेतु अयोध्या दिस प्रस्थान करू। जानकी लक्ष्मण संग बिदा कएल जा चुकल छथि। तेँ आब विलंब कोनो प्रकारसँ उचित नहि होअत।”

“हमसभ तुरंत अयोध्या दिस बिदा होइत छी।“-ओहिठाम उपस्थित सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी एकस्वरसँ बाजि उठलाह। ताबतमे एकटा वयोबृद्ध संत शक्तिस्वरुपाकेँ दण्डवत प्रणाम करैत छथि । तकर बाद ओ कहैत छथि-

“हे शक्तिस्वरुपा!

राजा जनकक किछु संदेश लए हमसभ आएल छी ।अपनेक सहमति होअए तँ हमसभ ओकरा अपनेक सामनेमे प्रस्तुत करी।“

“एहिठाम एखन सभ केओ अनुरंजित छथि। यदि अहाँसभ किछु अन्यथा कहबनि तँ अनर्थ भए सकैत अछि। अस्तु,हमर विचार अछि जे अहाँकेँ जे किछु कहबाक अछि से एकांतमे कहि दिअ। ताबत हमसभ जानकीधुजावाहिनीक संगे आगू प्रस्थान करैत छी। आब हिनकासभकेँ रोकि लेब ककरो वशमे नहि अछि,हमरो नहि।”

शक्तिस्वरुपा द्वारा एना कहलापर संतलोकनि की बजितथि? चुप्पे रहि गेलाह। जनकपुरसँ आएल संतलोकनि शक्तिस्वरुपाकेँ एकांत पाबि जनकक देल चिट्ठी दए देलखिन आ हुनकर आदेशक प्रतीक्षा करए लगलाह। परंतु ओ किछु उत्तर नहि देलखिन। अपितु,ओहि चिठ्ठीकेँ खोलिओ कए नहि देखलखिन। संतलोकनि आब की करितथि?शक्तिस्वरुपाकेँ सादर प्रणाम निवेदित कए ओ सभ चलि जाइत रहलाह।

ओमहर अयोध्यामे आजुक राति कोना बितल तकर की वर्णन कएल जाए? ठाम-ठाम कुकुर भुकि रहल छल।जेना कोनो अनिष्टक पूर्वसूचना दए रहल होअए। आकाशमे रहि-रहि कए तारा टूटि कए खसि रहल छल। सहरसँ कनीके फटकी कलमसभमे नढ़िआसभ करुणक्रन्दन कए रहल छल। ततबे नहि, रातिभरि सौंसे अयोध्या सहरमे कतहु एकटा इजोत नहि देखाएल। चारूकात अन्हारगुज्ज। एहनेमे भरत आ शत्रुघ्न जेना-तेना हँफैत अपन-अपन महल वापस चलि गेलाह। लक्ष्मण सेहो वापस अपन महल दिस जाइत रहथि कि अचानक माथामे चक्कर देबए लगलनि,जेना घुरमी लागि गेल होनि।अपन महलसँ कनीके फटकी उद्यानमे राखल बेंचपर बैसि गेलाह। कतहु केओ नहि देखा रहल छल। बेंचपर एसगर बैसल लक्ष्मण सोचि रहल छलाह-

“हे भगवान एहि हाथसँ जानकीकेँ कोना वनबास देबनि?की हुनका सभ बात कहि देबनि?मुदा से आज्ञा तँ नहि अछि। तखन ? हुनका धोखा देबनि?इएह सभ सोचैत-सोचैत हुनकर आँखि लागि गेलनि। भरत आ शत्रुघ्न अपन-अपन महल जा कए ओछाओनपर पड़ि गेलाह। मुदा एहनमे निन्न कतहु होइक? बस करोट बदलैत रहि गेलाह।भोरुकबा उगि गेल। लोकसभ अपन नित्यक्रममे लागि गेल। तखनहि लक्ष्मणक आँखि

खुजलनि। ओ दौड़ल अपन महल जाइत छथि। ओतए अपन नित्यक्रमसँ निवृत्त होइत छथि। सुमंतकेँ समाद दैत छथिन जे ओ रथ तैयार करए। अपने जानकीक महल लग जाइत छथि। हुनका देखितहि द्वारपाल जानकीकेँ संदेश दैत छनि। जानकी एतेक भोरे लक्ष्मणकेँ आएल देखि अकचका जाइत छथि। लक्ष्मणकेँ अगिला कोठरीमे बैसा स्वयं तैयार होइत छथि। थोड़ेकालक बाद जानकी लक्ष्मणकेँ विचारमग्न देखि टोकैत छथि-

"अहाँ बहुत चिंतित बुझाइत छी।"

"नहि,नहि। राजारामक आदेशानुसार हम अहाँकेँ गंगा कातमे ऋषि आश्रम दिस लए जाएब।"

"अहो! ई तँ बहुत उत्तम अवसर अछि। हम तँ एहि यात्राक कहिआसँ प्रतीक्षा करैत रही। राम स्वयं हमरा ओमहर लए जाए बला रहथि। संभवतः व्यस्तताक कारण ई काज अहाँकेँ देने हेताह।कोनो बात नहि। एहि बहन्ने हमसभ भरि मोन बतिआएब। मुनिलोकनिक दर्शन करब। गंगा स्नान करब।"

"लक्ष्मण सुनैत रहि गेलाह। थोड़बे कालमे जानकी आ लक्ष्मण रथसँ जंगल दिस बिदा भए जाइत छथि।"

१२

निस्संदेह राजारामक आदेशक बाद लक्ष्मण जानकीसंग चुपचाप रथसँ अयोध्याक सीमाक पार जंगल दिस बिदा भए गेलथि,मुदा शक्तिस्वरुपाक सक्रियताक कारण ई बात काने-कान अयोध्यामे सगतरि पसरि गेल। मिथिलामे तँ जे हाल भेल से बुझले अछि। ओमहर जानकीधुजावाहिनी सैकड़ोंक संख्यामे अयोध्या दिस बिदा भए चुकल छथि। ओ सभ जानकीधामक सीमा टपले हेताह कि तीव्र गतिसँ चलएबला कतेको वाहनसभ सामनेमे ठाढ़ देखाएल। ओतए चौबटिआपर शक्तिस्वरुपा स्वयं उपस्थित रहथि।

"अहाँसभ एहि वाहनसभमे सबार भए जाउ,जाहिसँ जल्दीसँ जल्दी अयोध्या पहुँचि सकी। किछु प्रमुख लोकनिक हेतु वायुयानक ओरिआन सेहो भए गेल अछि। मैथिलीपुत्र अपन खास-खास समर्थकक

संगे वायुयानसँ आगू बढ़थि।किछु महत्वपुर्ण व्यक्ति वाहनसभक संगे सेहो चलथि। ओना कोनो चिंताक बात नहि अछि। सभ किछुपर हमर नजरि अछि आ रहबे करत । जानकीक लक्ष्मणक संगे वनप्रस्थान कए चुकल छथि। हुनका जल्दी सँ जल्दी सहायता चाही जाहिसँ अयोध्याक अनर्थ आगू नहि बढ़ि सकए।”

शक्तिस्वरुपाक कहबाक देरी छल कि सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी वाहनसभमे बैसि कए लक्ष्य दिस बिदा भए गेलाह। मैथिलीपुत्र हुनकर किछु प्रमुख संगीसभ वायुयानमे बैसि गेलथि। सभक उत्साह देखए जोकर छल। लगैक जेना सौंसे पृथ्वी जानकीक समर्थकसँ भरि गेल अछि। ने ककरो भूख लगैक,ने पिआस । सभ जय जानकी! जय जानकी!क नारा बेरि-बेरि लगा रहल छल। वाहनसभ द्रुत गतिसँ आगू बढ़ि रहल छल। वायुयान तँ घंटा भरिक भीतरेमे अयोध्याक सीमामे टपि गेल छल। ओ सभ ओतेक ऊपरसँ नीचाँ अयोध्यामे घटित भए रहल घटनाक किछु अनुमान नहि कए पाबि रहल छल जे वस्तुतःकी भए रहल अछि? जानकी अखन कतए आ कोन हालतिमे छथि? ओ सभ सही प्रतिकार कोना करथि सेहो नहि बूझि पाबि रहल छलाह,अपितु, बहुत असमंजसमे रहथि। तखनहि शक्तिस्वरुपा हुनकासभक संगे देखेलथि।

“अहाँसभ एहीठाम उतरि जाउ। जखन अहाँसभकेँ प्रयोजन होएत ई वायुयान फेर आबि जाएत। अहाँसभ कनीको दिक्कति भेलापर हमरा स्मरण करब आ हम तुरंत उपस्थित भए जाएब।”

अयोध्याक आकाशक ऊपर कोनो अपरिचित वायुयानकेँ उड़ैत देखि ओहिठामक कोतबालक ध्यान गेलनि। तुरंत राजारामसँ संपर्क करबाक प्रयास केलनि। मुदा हुनकासँ संपर्क नहि भए सकलनि।ओ अपन महलमे केबाड़ बंद कए पड़ल छलाह। हुनका किछु फुरा नहि रहल छलनि। देहमे कनीको सक्क नहि लागि रहल छलनि। सभटा राज-काज ठप्प पड़ल छल। सामान्य काजक बाद तँ टारि देलि जाइत,मुदा ई तँ अयोध्याक सुरक्षाक प्रश्न उपस्थित भए गेल छल। ओहि विमानक सूचना राजारामकेँ नहि देल जा सकलनि। भरत आ शत्रुघ्न से भरि राति जगले रहथि,भोरमे आबि कए निन्न पड़ि गेलाह,कि ओहोसभ हतप्रभ छलाह से नहि कहल जा सकैत अछि।सुरक्षाप्रभारी करथि तँ की करथि? ओ स्वयं वायुयान चलेबाक प्रयास केलथि,मुदा ओ तँ टस सँ मस नहि भए रहल छल। ततबे

नहि,मैथिलीपुत्रक विमानपर कोनो प्रकारक शस्त्र प्रभावी नहि भए रहल छल । हारि कए ओ फेर राजारामक महल दिस गेलाह । मुदा ओहिठाम तँ सन्नाटा पसरल छल। लगैत छल जे ओ घर नहि कोनो श्मशान होइक।

अयोध्यामे जानकी वनगमनक समाचार बिजलौका जकाँ पसरि गेल छल। अयोध्यावासीसभ एहि समाचारसँ बहुत दुखी आ उत्तेजित रहथि।

“सएह कहू। एकटा मामूली धोबीक कहलापर जानकीक ई हाल कए देल गेलनि? इ कोन न्याय भेल? ई तँ संपूर्ण अयोध्यापर एहन कलंक अछि जकरा मिटेनाइ मोसकिले नहि असंभव अछि।”

“हमसभ करी तँ की करी? ”

“सभ गोटे ओहि धोबीक ओतए चली जे ई आगि लगओलक अछि। ओकरा सही जगह पहुँचेनाइ जरूरी थिक।”

“हमरा हिसाबसँ तँ ओकरा मृत्युदंड हेबाक चाही।”

एहि तरहेँ अयोध्यावासी लोकनि ओहि धोबीक घर दिस बिदा भेलाह।

ऊपरमे मैथिलीपुत्र सहित हुनकर संगीसभ अयोध्यामे जनविद्रोहक दृश्य देखि रहल छलाह।

“ई सभ तँ अपनेमे भिड़ल छथि। हमरासभकेँ किछु करबाक काज नहि बुझाइत अछि।-मैथिलीपुत्र बजलाह।”

“मुदा जानकी कतए छथि?हमसभ हुनकर हाल तँ लिअनि।”

“सही कहलहुँ। हमसभ तँ एही लक्ष्यसँ बिदा भेल छी।”

“जानकी लक्ष्मणक संगे रथपर छथि। ओ अयोध्या सहरसँ बाहर निकलि गेल छथि।”

“तखन? ”

“तखन की कएल जाए? ”

“हमरा विचारे तँ जानकीक रथक पछोड़ कएल जाए। लक्ष्मणक रथ रोकि देल जाए आ जानकीक संगे तत्काल जनकपुर चलल जाए।”

“विचार तँ उत्तम बुझाइत अछि। मुदा शक्तिस्वरुपाक की कहबाक छनि से तँ बुझी।”

मैथिलीपुत्र शक्तिस्वरुपाक आह्वान करैत छथि।

१३

जानकी वनगमनक आदेश देलाक बाद राजाराम एकांतमे घोर निराशामे पड़ल छलाह।समस्त राज-काज ठप्प भए गेल छल।अयोध्यामे चारू दिस अराजकता पसरि गेल छल। जानकी वनगमन प्रसंग लाख प्रयासक अछैत गोपनीय नहि रहि गेल छल ।एहि बातसँ अयोध्या आ आसपासक लोकसभ बहुत उद्वेलित छल,दुखी छल आ कोनो हालतिमे ओहि धोबीकेँ क्षमा करबाक लेल तैयार नहि छल जकरा कहलापर जानकीपर एहन संकट आबि गेल छलनि। सैकड़ों अयोध्यावासी ओकर घरकेँ घेरि लेलनि आ चिचिआ उठलाह-

“कहाँ गेलैं रे नेतघट्टा, बाहर निकल। आइ तोरासँ हिसाब करब जरूरी अछि। तोरे कारण प्रातः स्मरणीया जानकीक ई दुर्दशा भेलनि अछि, जे हुनका राजमहलसँ जंगल पठा देल गेलनि। तूँ ई तँ जघन्य अपराध केलह अछि।अस्तु,हमसभ तोरा दंडित करबे करब।”

लोकसभक हल्ला सुनि कए कारी,भुट्ट मुदा बेस पुष्ट देह बला एकटा अधबयसू बाहर भेल। ओ बजैत अछि-

“की बात छैक?अहाँसभ हमरापर एना किएक तमसाएल छी?”

“तूँ तँ एना बाजि रहल छह जेना कि किछु बुझले नहि छह। ने तूँ जानकीक बारेमे अंट-संट बजितह,ने हुनकर ई हाल होइतनि?”

“की भेलनि जानकीकेँ?हम तँ किछु नहि केलहुँ?हम के छी हुनका राजमहलसँ बाहर केनिहार?”

“बेसी चालाकी नहि करह। तूँही ने बजलह जे लंकामे वंदिनी रहलि जानकीकेँ राजाराम भने राखि लेथि ,मुदा हम अपना घरमे एहन कदापि नहि होमए देब।”

“हम जे किछु बजलहुँ से तँ अपन घरमे बजलहुँ,मुदा राजारामकेँ जा कए ई के कहलकनि? फेर हुनका अपनो माथा तँ लगेबाक छलनि। केओ किछु बाजि देतैक आ लोक अपन धर्मपत्नीकेँ घरसँ भगा देतैक? एहनो कतहु भेलैक अछि?”

“बेसी कबाइत नहि पढ़ह। राजाराम कोनो सामान्य मनुक्ख नहि छथि। मर्यादा पुरुषोत्तम कहल जाइत छथि। हुनकर राज्यमे प्रत्येक लोकक अपन महत्व छैक। जे किछु तूँ बजलह, से राजारामकेँ पता लगलनि। तकर

बादे ई दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित भेल। एहन घटना जे अयोध्या आ मिथिला दुनूकेँ हिला कए राखि देने अछि। आब तूँही बाजह जे तोरा संगे कोन तरहक व्यवहार कएल जाए।”

“अपनेसभ जे बजैत छी से यदि सही अछि तँ लिअ, छोपि दिअ हमर गला तुरआरिसँ। हम एहि पृथ्वीक भार छी,अयोध्याक कलंक छी,हमरा एक्को क्षण जीबाक अधिकार नहि अछि। संकोच नहि करू। उठाउ तरुआरि ।”-ई बात बाजि ओ धोबी माटिपर लौटि रहल छल,भोकारि पारि कए कानि रहल छल,बेर-बेर कहि रहल छल-“हे जानकी! क्षमाकरू । हम सपनहुँमे नहि सोचि सकलहुँ जे घरक एकान्तमे, अपन परिवारमे, बाजल हमर किछु शब्द अहाँक जीवन आ सम्मान लेल एतेक भारी पड़ि जाएत। हमरा तँ आब जन्म-जन्म शांति नहि भेटि सकत। हम मनुक्ख कहेबाक जोकर नहि रहि गेल छी। हम व्यर्थ छी,हमर तुरंत हत्या कए देबाक चाही जाहिसँ पृथ्वीक एकटा भार खतम होअए।यदि अहाँलोकनि एहिमे कनिको देरी करब तँ हम स्वयं आत्महत्या कए लेब। आब हमर जीवन सचमुचमे अर्थहीन अछि।”

ई सभ बजैत-बजैत ओ धोबी बेहोस भए माटिपर खसि पड़ल। ओकरा ई हालति देखि चारूकात हाहाकार मचि गेल। लोकक तामस धएले रहि गेलैक। केओ पानि अनलक,केओ पंखा केलक,कहुना कए ओकरा होस आएल। थोड़े कालक बाद उठि कए बैसि गेल।ओ किछु बाजए चाहए,मुदा बाजि नहि पाबए। मुँहसँ अबाज निकलबे नहि करैक। आँखिसँ नोर निरन्तर झहरि रहल छलैक। ओ हाथसँ किछु इसारा करबाक प्रयास करए।लोक बुझि नहि पाबि रहल छलैक जे ओ चाहैत की अछि? ताबे ओहि भीड़मे सँ एकगोटे बाहर आएल ,ओकरा सांत्वना दैत बाजल-

“हमसभ तोहर बात बुझि रहल छी। अचानक तोरा मुँहे जे किछु बजाएल तकर परिणाम कतेक घातक भेल से देखिए रहल छह। आब जे बीति गेल,से बीति गेल। तकर बेर-बेर चर्चा केलासँ किछु फएदा नहि । हमसभ राजाराम लग चली। तूँ सेहो चलह।स्वयं हुनकासँ क्षमा मांगि लिअह आ आग्रह करिअहुन जे जानकीकेँ वापस राजमहलमे आनि लेबाक आदेश देथि,जानकी ससम्मान रानीक रूपमे राजारामक बामाँ भागमे विराजमान होथि।हमरासभकेँ बस एतबे चाही।आर किछु नहि।”

“जाहिसँ जानकीक कष्ट दुर होनि,हुनकर प्रतिष्ठा आ सम्मानक रक्षा होनि ताहि लेल हम तैयार छी।”

तकर बाद धोबी संगे-संगे समस्त अयोध्यावासी राजारामक महल दिस बिदा भए गेलाह।

१४

राजारामक महल दिस अपार जनसमूहकेँ बढ़ैत देखि प्रहरीसभ तुरंत साकंछ भेल। आखिर,राजारामक सुरक्षाक सबाल छल। रामराज्यमे एहन जनविद्रोहक कल्पनो केओ नहि कए सकैत छल। तए तँ ने केओ अपराध करए ,ने ककरो दंड देबाक प्रयोजन होइक। सभ पुरुष आ स्त्री परस्पर प्रेम करैत छल,सभकेँ एक-दोसरपर अपार सिनेह छलैक,विश्वास रहैक। घरसभ खुजले रहैत छल,कतहु केबारमे ताला लगेबाक काज नहि पड़ैक। ताहि ठाम एहन समस्या अचानक कतएसँ आबि गेल।प्रहरीसभ कोतबालकेँ समाद देलकनि। ओ स्वयं सभ किछु देखलनि आ तुरंत राजारामक महल पहुँचि गेलाह। ओहिठाम द्वारि धरि तँ पहुँचि गेलाह,मुदा भीतर जेबाक साहस नहि भेलनि। राजारामक कोठरीक केबार बंद छल।घरमे कनीको इजोत नहि छल।चारूकात भम्ह पड़ि रहल छल। आब ओ करओ की? एक दिस कर्तव्य छलैक दोसर दिस राजारामक घरक एहन भयाओन हाल छल। ओ करए तँ की करए? बड़ीकाल धरि ओ एहिना किंकर्तव्यविमूढ़ रहि गेल। आखिर ओ साहस केलक, केबार हल्लुकेसँ खट-खटओलक। राजाराम कोनो सुतल तँ रहथि नहि। ओ बूझि गेलाह जे जरूर किछु तेहन भेल अछि अन्यथा हुनकर एहन दशा जनितहुँ केओ किएक एतेक लग धरि अबैत।

राजाराम केबार खोलैत छथि। हुनकर देहक दशा देखि कोतबाल बहुत दुखी भए गेलाह। राजारामक माथपर केस उड़िआ रहल छलनि। आँखि कनैत-कनैत फुलि गेल छलनि। देह वस्त्रहीन जकाँ छल,मात्र एकटा अर्धवस्त्र पहिरने रहथि। एकटा अंगोछा राखि लेने रहथि ऊपरसँ। हुनकर मुँहसँ आभा विलुप्त भए गेल छल। लगैत छल जेना ओ गंभीर कष्टसँ गुजरि रहल होथि। एहनमे कोतबाल की करए?हुनका बाहर घटित भए रहल परिस्थितिक सूचना देथि कि नहि देथि? ओ आखिर अपन मुँह खोललक-

“राजारामक जय होअए! ”

“की बात? ”

“महाराज अनर्थ भए होअए पर अछि।”

“की? ”

“अयोध्याक जनता विद्रोह कए देलक अछि। ओकरासभकेँ अयोध्यामे जानकी वापस चाही,ओहो रानीक रूपमे,आर किछु नहि। लोकसभ जानकीक चलि गेलासँ बहुत अधिक आहत भए गेल अछि,किछु करबाक हेतु आतुर अछि। स्थितिक भयावहता देखि हमर कर्तव्य बुझाएल जे अपनेकेँ सूचित करी।”

“हम अखन किछु नहि कहि सकैत छी। तूँ भरत लग जाह आ हुनका जे कहबाक छह से कहुन। जे करबाक अछि से ओएह करताह।”

एतबा बात बाजि कए राजाराम जोरसँ केबार बंद कए लेलनि।केबार बंद हेबाक अबाज बहुत फटकी धरि सुनल गेल। कोतबाल तँ स्तब्ध छल। किछु फुरेबे नहि करैक जे की करए? अयोध्याक रक्षा करए की रामक? “एहन हालतिमे राजारामकेँ छोड़ि कतहु केना जा सकैत छी?” - ओ स्वयंसँ प्रश्न कए रहल छल। ओ तँ कर्तव्यसँ विवश भए राजारामकेँ राजमहलक बाहर चलि रहल अन्हड़क सूचना देबाक लेल आएल छल,मुदा एहिठाम तँ आर कठिन परिस्थिति देखबामे अएलैक । राजाराम बहुत आहत छलाह।

“पहिने हुनकर रक्षा करब जरूरी अछि। मुदा से कोना के करत? राजाराम तँ स्वेच्छासँ एकान्तमे पड़ल छथि। ओहिठाम धरि केओ जाइए नहि सकैत अछि। तखन कएल की जाए? चली भरत लग। आखिर राजारामक आदेशो तँ ओएह छनि।”

राजाराम केबार बंद कए धराम दए पलंगपर खसि पड़लाह।

“जे हेबाक छैक से होउ।हमरा बुते अखन किछु संभव नहि अछि। जानकी नहि तँ रामो नहि। हमर जीवनक आब किछु अर्थ नहि रहि गेल अछि। देहमे कतहु सक्क नहि लागि रहल अछि। हमर मोन सदिखन जानकीपर अड़ल अछि। केना ओ एसगरि जंगलमे रहतीह?केना निर्दयी भए लक्ष्मण हमर आदेश मानैत जानकीकेँ नदीक कातमे जंगलेक बीचमे छोड़ि कए लौटि जेताह? जानकी एहन हालतिमे की सोचतीह,केहन अनाथ

ओ अनुभव करतीह आ तकर कारण केओ आर नहि हम स्वयं थिकहुँ। दुर्भाग्य हमर । कहि नहि आर की की हमरा देखब लिखल अछि?जानकीक रावण द्वारा हरण भेलाक बाद एकटा लक्ष्य सामनेमे छल जे जेना-तेना रावणक नाश करबाक अछि जाहिसँ जानकीकेँ मुक्ति भेटनि। हम ताहि प्रयासमे लागल रहलहुँ। एहन भयाओन युद्ध भेल।रावणक घरहंज भए गेलैक। अपनहु मारल गेल। नहि रहलैक केओ ओकरा कुलमे। मुदा आब? जानकी वापस हमरा भेटि गेलीह।ओ अपन संपूर्णताक संगे हमरा लेल फेरसँ समर्पित भए गेलीह। मुदा हम केहन अभागल निकललहुँ? नहि राखि सकलहुँ हुनका अपना संगे। एहन राजा बनिए कए की फएदा? हमरा राजाक पद छोड़ि देबाक छल आ जानकीक संगे चलि जइतहुँ एकबेर फेर जंगल। जखन हमरा वनबास भेल तँ जानकी हमर संग देलनि। कतबो कहलिअनि,ओ अयोध्यामे नहि रहलीह,त्यागि देलीह सभ किछू,सहैत रहलीह अपार कष्ट,घुमैत रहलीह जंगले-जंगल। मुदा हम की कएलहुँ? जानकीकेँ अपने घरसँ एहन हालतिमे निर्वासित कए देलहुँ। वाह रे राजाराम! हम आत्मग्लानिसँ भरि गेल छी। नहि चाहैत छी जे एक्को क्षण जीबी? एहन राजा भइए कए की फएदा जाहिमे हम अपन पत्नीएक संग अन्याय होइत देखि मूकदर्शक बनल रहि जाइ। बाहर की विद्रोह भए रहल अछि। असल विद्रोह तँ हमरा भीतरमे भेल अछि।हमर आत्मा स्वयं हमर विरुद्ध ठाढ़ देखाइत अछि। हम ककरा की कहबैक?कोन मुँहे कहबैक?”

“हे जानकी! हे जानकी!” - कहैत राजाराम पलंगपर खसि पड़लाह ।

१५

अयोध्याक आसपास ओहि समय कैकटा घटना घटि रहल छल। लक्ष्मण रथपर जानकी संगे जंगल दिस जा रहल छलाह। ओमहर अयोध्यावासी सैकड़ोंक संख्यामे रामक राज महल दिस बढ़ि रहल छल। कोतबाल अपन दायित्वक निर्वाह करैत राजारामकेँ सूचना देबाक भरिसक प्रयास केलक,मुदा हुनकर स्थित बहुत गड़बड़ रहनि। ओ किछु करबासँ असमर्थ रहथि। जानकीकेँ जंगला पठा कए ओ आत्मग्लानिसँ भरि गेल रहथि। बातो सही छैक। ककरो कहलापर लोक अपन पत्नीकेँ दंडित कए

देत,सेहो बिना ओकरा उचित अवसर देने। कमसँ राजारामकेँ जानकीसँ संवादक करबाक छलनि।हुनकासँ पुछितथिन जे एहन परिस्थितिमे की कएल जाए? मुदा ओ तँ सोझे आदेश दए देलनि। आब स्वयं ओहि आदेशक परिणाममे झड़कि रहल छथि। अयोध्या तँ जेना परमाणु बमपर बैसल होअए। शक्तिस्वरुपाक मार्गदर्शनमे मैथिलीपुत्र मिथिलाक सैकड़ों जानकीधुजावाहिनीक संगे अयोध्या बिदा भए गेल रहथि।

"आब हमसभ की करी?"

"आब अयोध्या गेलासँ किछु फएदा नहि होमए बला अछि। कारण जानकी ओहिठामसँ लक्ष्मणक संग रथपर जंगल दिस बिदा भए गेल छथि। फेर अयोध्यावासीलोकनि स्वयं राजारामक निर्णयसँ बहुत उत्तेजित छथि।ओ सभ राजारामक महल दिस बढ़ि रहल छथि। राजाराम किछु प्रतिकार करबाक स्थितिमे नहि छथि। "

"तखन?"

"अहाँसभ लक्ष्मणक रथक पछोड़ करू। यदि संभव होइक तँ जानकीकेँ मनाउ आ हुनका लेने सोझे जनकपुर चलि जाउ।"

"सही कहलहुँ। हमरसभक प्रथम लक्ष्य थिक जानकीक रक्षा,हुनकर सम्मानक रक्षा । जंगलमे एसगरि किएक आ कोना रहतीह? मिथिलाक घर-घर हुनकर स्वागत करबाक हेतु तत्पर अछि। फेर राजा जनक कोनो चुकि नहि गेलाह अछि। ओ जानकीकेँ अपना संगे राखि सकैत छथि। समस्या एतहि समाप्त भए जाएत। हमसभ अयोध्या जाइए कए आब करब की?जतए प्रेम नहि अछि,जाहिठामक महारानीकेँ केओ ओकर अधिकारसँ च्युत कए सकैत अछि,जाहिठाम अविश्वास एतेक प्रबल भए गेल अछि जे अग्निपरीक्षा देलाक बादो राजाराम सन लोक अपन पत्नीक त्याग कए देथि,ताहिठाम नीक लोक किएक जाएत,किएक रहत। अयोध्या आब ओ नहि रहि गेल।नहि रहि गेल ओहिठाम न्यायक शासन।लोकसभ स्वार्थी आ मदान्ध जखन भए जाए तखन ओ एहिना करए लगैत अछि। "

मैथिलीपुत्र अपन सहयोगीक संगे जानकीक रथक पछोड़ कए रहल छलाह। आकाशमे उड़ि रहल हुनकर वायुयान दिस लक्ष्मणक ध्यान जाइत छलनि।मुदा ओ ततेक परेसान रहथि जे किछु आर सोचबाक अवसर

नहि होनि। जानकी आब थाकि गेल छलीह। तखनहि लक्ष्मण कहैत छथिन-

“यदि अहाँक आज्ञा होअए तँ हमसभ आइ गोमती कातमे रात्रि विश्राम करी। काल्हि भोरे आगूक यात्रा कएल जाएत।

“बहुत नीक विचार अछि। आइ हमसभ गोमती तीरक आनन्द ली।”

जानकीक सरलता आ विश्वास देखि लक्ष्मण गुम छथि। मोने-मोन कष्ट भए रहल छनि जे ओ जानकीकेँ सही बात नहि कहि रहल छथि। मुदा ओ करथि तँ की करथि? राजारामक आदेश सर्वोपरि थिक। तकर बादे किछु आर। आखिर राजाराम हुनकापर पूर्ण विश्वास कए एहन दायित्व देलखिन।

ओमहर कोतबाल भरतकेँ सभटा बात कहैत छथि। रामक स्थिति , हुनकासँ भेल गप्प सेहो हुनका बतबैत छथि। भरत से सभ सुनि जेना घोर संकटमे पड़ि जाइत छथि। ओ कहैत छथि-

“राजाराम एना केना रहि सकैत छथि? हुनका अपन निर्वाहक लेल तत्पर होमए पड़तनि। जे किछु भेल किंवा भए रहल अछि ,से सभ हुनके आदेशक कारण भए रहल अछि। तकर बाद घटित भए रहल घटनाकेँ नियंत्रित करब तँ हुनकर कर्तव्य छनि। मुदा हुनका बुझाएत के? ओ तँ स्वयं ज्ञानी छथि,मुदा अखन परिस्थितिवश विषादग्रस्त भए गेल छथि।एहन हालतिमे की करी?किछु बुझा नहि रहल अछि।”

भरत कनी काल सोचैत रहि जाइत छथि। फेर कोतबालकेँ कहैत छथिन-

“ठीक छैक। हमरा अयोध्यावासी लग लए चलह । हम हुनकालोकनिकेँ बुझेबाक प्रयास करब । आगू भावी प्रबल। यदि ओ सभ नहि मानताह,अशांति करबाक लेल अड़ि जेताह तखन शक्तिसँ ओकर समाधान कएल जाएत।निश्चितरूपसँ ओ कोनो बढ़िआँ विकल्प नहि होएत। मुदा अयोध्याकेँ एना लुटैत तँ नहि देखल जा सकैत अछि। अखन तँ हमसभ जीवित छी।”

भरत कोतबालक संगे राजारामक महलक लगीचमे चौबटिआपर पहुँचैत छथि। हुनकर पाछू-पाछू सैनिकसभ चलि रहल छल।सामनेमे

सैकड़ोंक संख्यामे उपस्थित अयोध्यावासीकेँ उत्तेजित अवस्थामे देखि भरत छगुन्तामे पड़ि जाइत छथि। ओ कोतबालक कानमे कहैत छथिन-

"एहन विशाल जनसमूहकेँ बलप्रयोग द्वारा नहि रोकल जा सकैत अछि। बहुत रक्तपात होएत-ओहो अपन लोकक। तेँ बुधिआरीसँ काज लेल जाए।"

"जे अपने कहबैक सएह कएल जाएत।"

"हमसभ धैर्य राखी। आखिर ओ सभ अपने प्रजा छथि आ जानकीक प्रतिए सहानुभूति रखैत छथि जे कतहुसँ गलत नहि कहल जा सकैत अछि। हमरा विश्वास अछि जे यदि हुनका लोकनिकेँ प्रेमपूर्वक बुझाएल जेतनि तँ ओ सभ मानि जेताह।"-एतक बाजि भरत विचारमग्न भए गेलाह।

१६

सूर्यास्त होअए जा रहल छल। भगवान सूर्य जेना जल्दी सँ जल्दी पश्चिम दिस क्षितिजपार नुका जाए चाहैत छलाह। हुनकोसँ अयोध्यामे जानकी संग कएल गेल व्यवहार देखल नहि जा रहल छलनि। ऊपरसँ अयोध्यावासी लोकनिक विद्रोह आर दुखी कए देने छलनि।ओ साइत सोचैत रहल हेताह-

"हे काल! अहाँ धन्य छी। की देखा कए की देखा रहल छी? कहाँ मर्यादापुरुषोत्तम राम कहाँ एहन दुर्दशा देखि रहल, भोगि रहल हुनकर समाज। नहि देखी एहन दृश्य सएह नीक।तेँ आइ ओ बहुत जल्दीमे बुझाइत छथि। साइत ओ अपन मदति लेल मेघकेँ बजा लेलनि। सौंसे आकाशमे अचानक मेघ पसरि गेल। अचानक जेना रातिक आगमन भए गेल होइक। भगवान सूर्य सोचने हेताह-"धन्यवाद मेघ! अहाँ हमर लाज रखलहुँ। अयोध्यामे जे किछु भेल ,जे किछु होअए जा रहल अछि से नहिए देखी सएह नीक।

"की बात करैत छी। अहाँ तँ सभ दिन काल निरपेक्ष रहलहुँ। एहि पृथ्वीपर की की ने भेल। अहाँसभ किछु निर्लिप्त भावसँ देखैत रहलहुँ अन्यथा ई दुनिआ चलैत?नहि चलि सकैत। अहाँ अपन निरंतरतासँ

,निर्लिप्त भावसँ एहि श्रृष्टिक रक्षा करैत रहलहुँ । अपन कर्तव्यक निर्वाह करैत रहलहुँ । तकरे परिणाम अछि जे ई संसार थम्हल अछि,समस्त जींव-जन्तुक प्राण बाँचल छैक,नहि तँ कहिआ ने प्रलय भए गेल रहैत।"

आकाश मेघसँ भरि गेल छल।भगवान सूर्यकेँ नुकेबाक अवसर भेटि गेल छलनि। चारूकात अन्हार पसरि गेल छल। अयोध्या सहरमे घरे-घर सन्नाटा पसरल छल।ककरो घरमे इजोत नहि देखाइत छल। लोक जेना साँझो देखेबाक लेल उत्सुक नहि होअए। सभ जानकीक दुखसँ दुखी छल। स्त्री आ बूढ़सभ जे ओहि भीड़मे बाहर नहि जा सकल रहए से अपन-अपन घरक खिड़कीसँ उचकि-उचकि बाहर देखि रहल छल। ओ सभ देखलक जे अचानक भरत रथपर सबार भए लोकसभक अपार भीड़क आगू पहुँचि रहल छथि। भीड़ देखितहि भरत रथकेँ ठामहि रोकि लेबाक आदेश दैत छथि।

"रोक रथ। हम एहिठामसँ आगू पैरे-पैरे जाएब।"-भरत बजलाह।

"परन्तु ...। "-कोतबाल बीचेमे टोकलखिन।

"की बजलहुँ?"

"वर्तमान परिस्थितिमे अहाँकेँ पैरे चलब उचित नहि बुझाइत अछि।लोकसभ बहुत उत्तेजित अछि। कहीं किछु अनर्थ ने भए जाए।"

"जे हेतैक। कएले की जा सकैत अछि। हमसभ तँ निमित्तमात्र छी। अपन कर्तव्य करी आ चली।"

भरत रक्षाप्रमुख पैरे-पैर ओहि अपार जनसमूह लग पहुँचि जाइत छथि। ओ बजैत छथि-

"अयोध्यावासी भाइ- बहिन लोकनिकेँ सादर प्रणाम! अपने लोकनि असमयमे एना किएक एकत्रित भेल छी?अहाँसभक कष्ट की अछि? की हम अपने लोकनिकेँ किछुओ मदति कए सकैत छी?"

"अहाँ हमरासभसँ बुझऔलि नहि बुझाउ।अहाँकेँ सभ किछु बुझल अछि। अहाँ जनैत छी जे जानकीक की हाल होमए जा रहल छनि। तखनहु निचैन छी। जकरा जे होउ,अहाँकेँ की लेना-देना?"

"अपने लोकनि एना नहि बाजू। कल्हुका राति हमसभ एक्को क्षण नहि सुति सकलहुँ। राजारामकेँ अपना भरि बुझेबाक प्रयास करैत रहलहुँ। एही प्रश्नपर लक्ष्मण तँ हुनका संगे बकझक सेहो भए गेलनि । राजाराम सभदिन हमरसभक आदर्श रहलाह अछि। सभ दिन हमसभक हुनकर

आज्ञाकेँ देववाणी बुझि अनुपालन करैत रहलहुँ अछि। तेहन व्यक्तिक आदेशकेँ साफे कोना मना कए देतिऐक? अहींसभ बाजू। मुदा हम तीनू भाइ हुनका बुझेबाक कोनो प्रयास बाँकी नहि रखलहुँ। मुदा ओ अपन निर्णयपर अड़ि गेलथि। ओ तँ अयोध्याक राजो छोड़ि देबाक लेल इच्छुक छथि। मुदा फेर की होएत? के चलाओत ई राज-काज?हमरा तीनू भाइसँ से अपेक्षा केनाइ व्यर्थ। कारण हमसभ अपन प्राण दए देब,मुदा राजारामक विरुद्ध नहि ठाढ़ होएब।"

"तखन अहाँ एहिठाम की करए अएलहुँ अछि? की अहाँ हमरालोकनिकेँ ठकबाक प्रयासमे छी?सभ झंझटिक जरि तँ राजारामे छथि अहाँ हुनका किछु कहिए नहि सकैत छिअनि,राजा ओएह बनल रहताह। तखन तँ जानकीकक संगे भेल अन्यायक निवारण के करत?"

"अहाँसभक सोच सही नहि अछि। जे राजाराम एहन कठोर निर्णय लेलथि से की स्वयं निचैन छथि? नहि छथि। ओ तँ स्वयं अहुरिआ काटि रहल छथि। रातिभरि जागल छथि,किछु खेने नहि छथि। निठ्ठाह बौक भए गेल छथि। हमरा तँ चिंता भए रहल अछि जे कहीं हुनके ने किछू भए जानि।"

"अहाँ एमहर-ओमहरक बात नहि करू। सोझे बाजू जे जानकीकेँ वापस अयोध्या अनबनि की नहि? रानीक बात तँ छोड़ू ,हुनका एहिठामक एकटा सामान्य नागरिकोक अधिकार देबनि की नहि?"

भरत की बजितथि? एहिप्रश्नक उत्तर हुनका लग रहबे नहि करनि। ओ गुम्म पड़ि गेलाह। एताबतेमे आकाशसँ शक्तिस्वरुपा प्रकट भेलीह-

"सुनि लिअ भरत आ सुनथु अयोध्यावासी लोकसभ। जानकी कोनो असहाय नहि छथि। ओ सर्वशक्तिमान छथि। अखन तँ हुनका किछु बुझले नहि छनि। मुदा यदि बुझलो रहितनि तू हुनकर आत्मसम्मान अयोध्यामे हुनका वापस नहि आबए दितनि।मुदा एकटा बात नीकसँ बुझि लिअ। जे किछु भए रहल अछि तकर प्रतिध्वनि आबए बला जुग-जुग धरि सुनल जाएत आ लोकसभ पुछबे करतनि-"राजाराम अहाँ ई की केलहुँ?जानकीक ऐहि भावनाक संप्रेषणक लेल चिरञ्जीवी आबि रहल छथि। ओ एहि काजकेँ अनन्त काल धरि मिथिलासँ अयोध्या धरि प्रेषित

करैत रहताह। लोकक मोनमे जानकीक प्रतिए सद्भाव बनओने रहबामे सहयोगी बनल रहताह।”

तखनहि हाथमे गदा लेने एकटा गौरवर्णक युवक प्रवेश करैत छथि।

“हे लिअ। आबिए गेलाह चिरञ्जीवी।”

१७

चिरञ्जीवी कल जोरि ठाढ़ छथि।

“आदेश माते! हमरा एहिठाम किएक आनल गेल?”

“देखि नहि रहल छी जे पृथ्वीपर अखन कोन-कोन अनर्थ घटित भए रहल अछि?जाहि तरहेँ जानकीकेँ अपन घरसँ निर्वासित कएल गेल अछि,जाहि तरहेँ अयोध्या आ मिथिलावासी एकर विरोध कए रहल छथि से जुग-जुग धरि लोककेँ मोनमे गड़ल रहत। लोक एहि घटनाकेँ बिसरि नहि सकत। एकरा बारेमे बहुत किछु जानए चाहत। केओ तँ चाही जे एहि घटनाक प्रत्यक्षदर्शी बनि एकर सही जनतब भावी पीढ़ीकेँ दिअए।अहाँकेँ इएह भार देल जाइत अछि।”

“मुदा हम कतेक दिन जिअब। एहि पृथ्वीपर तँ लोक अबिते अछि मरि जेबाक लेल।हमहूँ आइ ने काल्हि चलि जाएब।तखन अहाँक काज आगू कोना बढ़त?के कहि सकत जे एना किएक भेलैक? जानकीक संगे भेल एहि अनर्थक प्रतिकार कोना होएत?की लोक एकरो समयक संगे आन अपराध जकाँ बिसरि जाएत?”

“जकर चिंता अहाँकेँ करबेक नहि चाही से अहाँ कए रहल छी। अहाँकेँ बुझबाक चाही जे अहाँक प्रादुर्भाव कोनो साधारण घटना नहि थिक।सही मानमे अहाँ एहि युगक संवाहक थिकहुँ। एहि कालखण्डमे घटि रहल नीक बेजाएक एकटा प्रत्यक्षदर्शी बनि भावी पीढ़ीक मार्गदर्शन करी। ”

“हम नहि बुझि सकलहुँ?”

“अहाँक ध्यान कतए अछि? कनी साकंछ होउ। काल्हि जा कए मिथिलावासी पुछताह जे जानकीक संगे एहन अत्याचार किएक भेलनि? तकर उचित प्रतिकार किएक नहि भेलैक? की राजाराम सही मानमे जानकीकेँ दोषी मानैत छलाह?एहन-एहन बहुत रास प्रश्नसभ लोकक मोनकेँ उद्वेलित करैत रहतैक। तकर निवारण अहाँ करब।”

“हम देखि रहल छी जे मिथिलासँ सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी गोमतीक कात धरि पहुँचि गेल छथि। ओही आस-पासमे लक्ष्मणक रथ जानकीक संगे पहुँचि रहल छनि। एमहर अयोध्यावासी उत्तेजित भए राजारामक महल दिस बढ़ि रहल छलाह,मुदा भरत हुनका लोकनिकेँ शांत करबाक प्रयासमे लागल छथि। भरत किछु बाजिए रहल छलाह कि एकटा अधबयसु ओही भीड़सँ निकलि अपने गलामे तरुआरि लगा लैत अछि। ओकर गलासँ खून फब्बारा छह-छह निकलि रहल अछि। ओकर ई हालति देखि चारूकातसँ लोक ओकरा घेरि लैत अछि।देखिते-देखिते चारूकात ओकर खून पसरि जाइत अछि। खूनसँ लथ-पथ ओ स्वयं जमीनपर खसि पड़ैत अछि।”

“आब अहाँ अपन काज करैत रहू। अखन एहि तरहक बहुत घटनासभ देखबाक अवसर अहाँकेँ भेटत। अहाँ धैर्यपूर्वक तकर अवलोकन करू।”

खूनसँ लथपथ अधबयसुक पहिचान ओही धोबीक रूपमे भेल जकरा कारणेँ जानकीक वनबास भए रहल छलनि। मुदा ओ स्वयं नहि सोचने रहल होएत जे अपन घरक एकान्तमे ओकरा द्वारा बाजल गेल किछु शब्दक एहन भयाओन प्रतिक्रिया होएत। ओ तँ तामसमे बजैत-बजैत किछु बाजि गेल। बात खतम। मुदा ओएह शब्द की की केलक से तँ देखिए रहल छी ने। तेँ कहबी अछि जे बहुत सोचि-बिचारि कए बाजी। एक बेर जे शब्द मुँहसँ निकलि गेल से वापस नहि होएत आ ओकर प्रभाव कैक बेर जुग-जुग धरि बाँचल रहि सकैत अछि।

भरतक ध्यान ओकरापर पड़ैत छनि। ओ तुरंत कोतबालकेँ इसारा करैत छथि। सैनिक सहित कोतबाल ओहि घायल व्यक्तिकेँ तुरंत अस्पताल लए जाइत छथि। पाछू-पाछू भरत सेहो ओमहरे बिदा होइत छथि। मुदा हुनकर अंगरक्षकलोकनि हुनका रोकि लैत छथि आ अपना संगे हुनका महल वापस आनि लैत छथि। परिस्थिति प्रतिकूल देखि अयोध्यावासीलोकनि राजारामक महल दिस जेबाक विचारमे तत्काल विराम देबाक घोषणा करैत छथि। ओहि भीड़मे सँ एकटा बृद्ध बजैत छथि-

“हमसभ देखि रहल छी जे जानकीक वनबासक प्रत्यक्ष कारण धोबी स्वयं आत्मग्लानिसँ आत्महत्याक प्रयास कए लेलक अछि। ओकर

प्राण संकटमे छैक। ओ जीबिओ सकत कि नहि तकर कोनो ठेकान नहि अछि। अखन राजाराम से बहुत कष्टमे छथि। भरत स्वयं एहिठाम आबि कए हमरालोकनिकेँ बौसबाक बहुत प्रयास केलनि अछि। फेर मूल बात तँ जानकीकेँ ससम्मान वापस अनबाक अछि ने कि अयोधयाक विनाश करबाक अछि। आखिर अयोध्या हमरा लोकनिक मातृभूमि थिक,एकरा प्रतिए हमरा लोकनिक कर्तव्य अछिए। अस्तु,हमसभ एहिठामसँ अखन वापस चली। ”

“से सभ जे होइ,मुदा जाधरि जानकी वापस नहि अबैत छथि,हमसभ अपन-अपन घर वापस नहि जाएब।”-भीड़ सर्वसम्मति से बाजि उठल।

“कोनो बात नहि।हमसभ ओमहरे चली जेमहर लक्ष्मणक रथ जा रहल छनि। जतहि जानकी भेटतीह , अपना भरि जानकीकेँ मनएबाक प्रयास करी। हुनका निहोरा कए वापस आनि लेबनि।”

“सही बजलहुँ। चलू ओमहरे चलैत छी। बिना जानकीक अयोध्या श्रीहीन भए गेल अछि। एहिठाम रहनाइ उचित नहि अछि।”

सभ केओ लक्ष्मणक रथक पछोड़ करैत ओमहरे बिदा भए जाइत छथि।

१८

भरत स्वयं अस्पताल जा कए धोबीक चिकित्साक व्यवस्था केलनि। बहुत प्रयासक बाद ओकर जान बाँचि सकल। तकर बाद प्रहरीसभ ओकर देख-रेख करैत रहल। ओमहर राजारामक हालति चिंताजनक भए गेल रहनि। आइ कैकदिनसँ ओ अपन घरसँ बाहर नहि निकलल रहथि। ककरोसँ भेंट नहि करथि। राज-काज निठ्ठाहे ठप्प भए गेल छल। ककरो किछु फुरेबे नहि करैक जे राजारामकेँ कोना बुझाएल जाए। कारण तँ ओ स्वयं छलाह। केओ हुनका जानकीसँ पृथक नहि केने रहनि। धोबी किछु बाजल,केओ ओकर समर्थन केलक ,नहि केलक,मुदा अंतिम निर्णय तँ राजा रामे केलाह। हुनकर तीनू भाइ हुनकर निर्णयसँ सहमत नहि रहथि,अपना भरि बुझेबाक भरिसक प्रयासो करैत गेलाह। मुदा ओ अड़ल रहि गेलाह। तखन आब किएक अफसोच कए रहल छथि? एहन अंतर्द्वंदमे किएक फँसि गेल छथि?

राजारामक महलक बाहर आर्तलोकसभक पाँति लागि गेल छल। सभ परेसान छल। ककरो कोनो तरहक मदति नहि भेटि रहल छल। असलमे जखन राजा स्वयं दुखी होअए तखन ओ जनताकेँ कोना सुखी राखि सकत? मुदा समाधान करत के? राजाराम स्वयंसँ बाहर होथि,महलक बाहरक दृश्य देखथि तखन साइत हुनका होस आबनि। अयोध्या आ राजमहलक हालति देखि भरत बहुत चिंतित रहथि । ओ शत्रुघ्न संगे विचार विमर्श केलनि। किछु समाधान फुरेबे नहि करनि। की कएल जाए? आखिर,ओ सभ राजारामसँ भेंट करबाक लेल पहुँचलाह। भरत सोझे हुनकर कोठरीमे प्रवेश करैत छथि।हुनका पाछू लागल शत्रुघ्न सेहो जाइत छथि। भरत राजारामकेँ प्रणाम करैत छथि। राजारामक दाढ़ी बढ़ि गेल रहनि। ओ कैकदिनसँ स्नान धरि नहि केने रहथि। भोजन करबाक तँ प्रश्ने नहि उठैत छल। भरत खिड़की खोलि दैत छथि। सामनेमे सैकड़ों लोकसभक करमान लागल छल। लोकसभ त्राहिमाम् कए रहल छल।

राजाराम एहि दृश्यकेँ देखैत छथि।अपन महलक सामनेमे कष्टमे पड़ल एतेक भारी जनसमूहकेँ आएल देखि राजाराम बहुत चिंतामे पड़ गेलथि। कहीं हम गलत निर्णय तँ ने कए बैसलहुँ। भावावेगमे जानकीकेँ जंगल पठा कए हम अनेरे एकटा समस्या ठाड़ कए लेलहुँ। लोक तँ कहिते रहैत छैक,मुदा हमरो तँ सोचबाक चाहैत छल। आखिर जानकी हमर अर्धाङ्गिनी थिकीह। हुनको जीबाक,मर्यादासँ रहबाक पूर्ण अधिकार छनि। फेर जाहि बातक कोनो प्रमाण नहि अछि,जाहि परिस्थितिपर जानकीक कोनो नियंत्रण नहि रहि गेलनि, तकरा आधार बना कए निर्णय लेब, सेहो एतेक कठोर निर्णय जे गर्भवती जानकीकेँ ऊपरसँ अपन चार धरि छिनि लेलकनि,जे हुनका पूर्णतः अनाथ बना देलकनि,कतेक सही रहल। बहुत गलत भए गेल।हमरा भाइलोकनिक बातपर समय रहैत विचार करबाक चाहैत छल।

राजारामकेँ रहि-रहि कए जानकी मोन पड़ैत छलखिन।हुनकर अनुपम छवि सदिखन आँखिक सामनेमे नचैत रहैत छलनि। केना ओ दिन-राति हुनका लेल व्यग्र रहैत छलखिन। राजाराम कोनो बात बजितथि ताहिसँ पहिने ओ जानकी बुझि जाइत छलीह। तकर उचित समाधानमे लागि जाइत छलीह। कैकबेर राति-राति भरि ओ लोककल्याणक काजमे लागल

रहि जाइत छलाह,तखन जानकी हुनका विश्रामक लेल विनती करैत छलखिन।

“अहाँ अपन जानक रक्षा नहि करब तखन ई राज-काज कतेक दिन चलि सकत?”-जानकी कहितथिन। राजाराम किछु नहि बजितथि,बस हँसि दितथि।कखनहु कए चुपचाप जानकी दिस देखैत रहि जइतथि। कतेक अनुराग,केहन अद्भुत प्रेम हुनका जानकीसँ छलनि। तेहनमे ई की भेल? ककर नजरि हुनकासभपर लागि गेल जे एहन दिन देखए पड़ रहल छनि। राजाराम इएहसभ सोचैत बड़ीकाल धरि खिड़की लग ठाढ़े रहि गेलाह।

भरत कहैत छथिन-“देखिऔक बाहर की हाल छैक।”राजाराम खिड़की लग अबैत छथि। ओतहिसँ लोकसभक अभिवादन करैत छथि। हुनका बुझबामे देरी नहि भेलनि जे परिस्थिति कतेक खराप भए गेल अछि। ओ इसारासँ लोकसभक अभिवादन करैत छथि। तकर बाद सभ किछु बिसरि भरत आ शत्रुघ्नक संगे लोकसभक समस्याक निवारण लेल बाहर होइत छथि।

राजारामकेँ बाहर आएल देखि ओतए उपस्थित लोकसभमे उत्साहक संचार होइत अछि। मुदा हुनकर दशा देखि ओ सभ बहुत दुखी भए जाइत छथि।

“की हाल बना लेलनि अपन राजाराम?”

“हमरासभकेँ अपन दुख बिसरि सभसँ पहिने राजारामक हालतिपर ध्यान देबाक चाही।”

“पता नहि आब अयोध्याक की हाल होएत?हमरसभक रक्षा के करत?”

ओहिठाम उपस्थित लोकसभ आपसमे चर्च कए रहल छल।

१९

जानकीक संग लक्ष्मण गोमतीक कातमे रात्रि विश्राम करबाक हेतु रथसँ उतरैत छथि। सूर्यास्तक बाद आकाशमे तरेगनसभ चमकि रहल छल। ओहि समयमे गोमती नदीमे कलकल बहैत जलधारा देखैत बनैत छल। चारू कात हबा मंद-मंद बहि रहल छल। ओतए आगन्तुक लोकनि लेल धर्मशाला बनल छल। ओतहि सुमंत,लक्ष्मण जानकी फराक-फराक कोठरीमे रात्रिविश्राम करैत छथि। धर्मशालामे अतिथिलोकनिक लेल

भोजनक उत्तम प्रबंध स्थानीय लोकसभ द्वारा कएल गेल छल। ओहिठामक व्यवस्था आ सुख-सुविधा देखि जानकी बहुत प्रसन्न रहथि। ओ लक्ष्मणसँ कहबो केलखिन-"हमसभ एहिठाम रुकि कए बहुत नीक केलहुँ। एहन सुंदर स्थान बहुत दुर्लभ होइत अछि। ऊपरसँ रहबाक लेल एतेक नीक धर्मशाला से अछि।हमरा तँ एहिठामसँ जेबाक मोने नहि भए रहल अछि।"

लक्ष्मण कनीकाल चुप रहलाह,फेर बजैत छथि-

"मुदा हमरासभकेँ तँ गंगा कातमे ऋषिलोकनिक आश्रम देखबाक अछि ने।"

"कोनो बात नहि ,काल्हि भोरे ओमहरे चलल जेतैक।अखन एहिठामक अनुपम दृश्यक आनन्द ली।"

सभ गोटे भोजन केलाक बाद अपन-अपन कक्षमे विश्राम करए चलि गेलथि। मुदा जानकीकेँ निन्न हेबे नहि करनि। ओ बड़ी काल धरि खिड़कीसँ गोमतीक प्रबाहकेँ देखबाक आनन्द लैत रहलीह। रातिक एकान्तमे कखनहुक फटकी कतहु लोकक आहट बुझाइत छल। जानकीकेँ बुझेबे नहि करनि जे एतेक राति बितलापर ई अबाज कएतसँ आबि रहल अछि। फेर भेलनि जे की पता ऋषि लोकनिक किछु विशेष कार्यक्रम होनि,किंवा लगपासक गामक लोकसभ तीर्थयात्रापर निकलल होथि। दूपहरसँ बेसी राति बीति गेल छल। जानकी आब सुतबाक व्योंतमे लागि गेलथि। भेलनि जे थोड़बो काल विश्राम कए ली। फेर तँ भोरे आगूक यात्रा करबाक अछिए।अस्तु,ओ ओछाओनपर चलि जाइत छथि। ओमहर लक्ष्मण आ सुमंत से राति भरि आपसमे गप्प करैत रहि गेलथि,राति भरि जगले रहि गेलथि। भोरुकबा उगि गेल।कौआ डाक दए देलक।

"एहिसँ बढ़िआँ हमसभ गोमतीमे स्नान कए पूजा-पाठ कए ली आ तकर बाद अन्हरोखे आगूक यात्रापर प्रस्थान करी।"-सुमंत बजलाह।

"मुदा जानकीकेँ के उठओतनि? ओ कहीं सुतले ने होथि।"

"कोनो बात नहि। हमसभ तँ तैयार होइ।"

लक्ष्मण सुमंत गोमतीमे स्नान करबाक लेल आगू बढ़ैत छथि कि जानकी हाक दैत छथिन-

"केमहर जा रहल छी?"

"गोमतीमे स्नान लेल जा रहल छी।"

“हमहूँ नहा लितहुँ।”

“पहिने अहीं नहा लिअ।तकर बाद हमसभ नहाएब।”

“से किएक?”

“केओ तँ डेरापर रहबाक चाही।”

“ठीक छैक। ”-जानकी गोमतीमे स्नानक आनन्द लैत छथि। स्नानक बाद कनीके फटकी पूजा करैत छथि । डेरा वापस आबि जाइत छथि।तकर बाद लक्ष्मण आ सुमंत सेहो गोमतीमे स्नान-ध्यान करैत छथि । डेरापर वापस आबि सभ गोटे तैयार होइत छथि।

“अहाँक आज्ञा होअए तँ हमसभ सबेर-सकाल एहिठामसँ आगूक यात्राक लेल प्रस्थान करी।”

“अबस्स। जतेक जल्दी निकलि जाइ,ततेक बढ़िआँ। आगूक यात्रामे रौद-बसातसँ बाँचब।”

थोड़े कालक बाद जानकी आ लक्ष्मण रथसँ आगूक यात्रापर बिदा होइत छथि।

जानकीधामसँ चलल सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी मैथिलीपुत्रक संपर्कमे रहथि। मैथिलीपुत्रक शक्तिस्वरुपासँ संवाद होइते रहैत छलनि। ओ अयोध्याक स्थिति देखि चुकल छलाह। हुनका आब एहि बातमे कनीको असमंजस नहि रहनि जे जानकीक संगे स्वयं अयोध्याक नागरिकसभ छथि,हुनकासँ सहानुभुति रखैत छथि । ओ सभ चाहैत छथि जे जानकी अयोध्यामे ससम्मान रहथि। तखन हुनकासभसँ कथीक विवाद रहि गेल। विवादक जड़ि तँ राजाराम स्वयं छथि किंवा जानकीक नियतिए इएह छनि जे सभ किछु अछैतो ओ रने-बने बौआइत रहथि। एकरे ने कहबैक दुर्भाग्य। सभ दिन नीके प्रयास भेलनि,नीक घरमे पालन-पोषण भेलनि,अयोध्या सन समृद्ध राजपरिवारक यशस्वी आ सामर्थ्यसंपन्न नरेश दसरथक पुत्र रामसँ बिआह भेलनि। सभकेँ ओ पसिंदो रहथिन। राजाराम तँ हुनका लेल पूर्ण समर्पित रहथि। मुदा भाग्य एहन पलटत से के सोचि सकैत छल?

जानकीधुजावाहिनी गोमतीक कातमे पहुँचैत छथि। हुनकासभक संगे मैथिलीपुत्र सेहो हबाइ जहाजसँ ओतए उतरैत छथि।मैथिलीपुत्र हबाइ जहाजमे बैसल देखि रहल छलाह जे अयोध्यावासी सभ जानकीकेँ तकैत गोमती नदीक कातमे ओहि स्थानक बहुत लगीच पहुँचि रहल छथि। कहीं किछु गड़बड़ ने भए जाए?किछु अनट घटना ने घटि जाइ । एही बातक

चिंता करैत ओ जल्दीए नीचाँ आबि गेलाह। हुनकासभकेँ ओतए अबितहि पता लागि गेलनि जे जानकी आ लक्ष्मण ओतएसँ जा चुकल छथि।आब की करी?- ई प्रश्नसभक मोनमे आबि रहल छलैक। मैथिलीपुत्रकेँ बुझल रहनि जे अयोध्यासँ बहुत रास लोक से ओमहरे आबि रहल छथि। “हिनका लोकनिक भेंट आपसमे नहिए होनि सएह नीक होएत।“ अस्तु,सभ गोटेकेँ अपना संगे लेने आगू बढ़ि गेलाह।जखन अयोध्यावासी सभ ओहिठाम पहुँचलाह तँ ओतए भम्ह पड़ि रहल छल। ने ओतए जानकी छलीह,ने लक्ष्मण। ओ सभ चिंतामे पड़ि गेलथि जे आब केमहर जाथि?

२०

शक्तिस्वरुपा,मैथिलीपुत्र आ चिरञ्जीवी तीनूगोटे मिथिलाक जानकी धामसँ हकासल-पिआसल आबि रहल सैकड़ों जानकीधुजावाहिनीक गोमती कातमे स्वागत करैत छथि। हुनका सभके समाद गेल रहनि जे जानकी गोमती कातमे लक्ष्मण सहित विश्राम करतीह। तकर बादे हुनकर रथ आगू बढ़तनि। तेँ ओ सभ एहिठाम जल्दी पहुँचबाक लेल बहुत उत्सुक रहथि। मुदा एतए पहुँचलाक बाद जखन पता लगलनि जे ओ सभ एहिठामसँ जा चुकल छथि तँ सभ गोटे बहुत निराश भए गेलथि।

“हमसभ तँ बहुत उम्मीद लगओने छलहुँ जे एहिठाम जानकीसँ भेंट भए जाएत। तकर बाद देखबैक जे के हुनका तंग कए सकत?हमसभ सभ तरहेँ तैयार छी। अपन-अपन प्राणक बाजी लगा देने छी। मुदा आब की कएल जाए?”-जानकीधुजावाहिनी दिससँ अबाज आएल।

“अहाँसभ बहुत थाकि चुकल छी। सभसँ पहिने एतए विश्राम करू। भोजन करू। तकर बाद सभ गोटे मिलि कए आपसमे आगूक योजनापर विचार-विमर्श करब।”-मैथिलीपुत्र बजलाह।

“मुदा एतेक गोटेक भोजनक ओरिआन कोना होएत?एहिठाम तँ किछु नहि देखा रहल अछि।”-चिरञ्जीवी बजलाह।

“अहाँसभ चिंता नहि करू।हम छी ने।जखन कखनहु कोनो समस्या होअए तँ हमरा स्मरण कए लेल करब। हम तुरंत आबि जाएब,समस्याक समाधान करब। ”-शक्तिस्वरुपा बजलीह।

शक्तिस्वरुपाक बजबाक देरी छल कि थोड़बे कालमे बैलगाड़ी भरि -भरि भोजन सामग्रीसभ ओहिठाम पहुँचि गेल। जानकीधुजावाहिनी भरि मोन भोजन केलनि। भोजन केलाक बाद ओ सभ ठामहि सुति रहलाह।

"ई सभ बहुत थाकि गेल छथि। ऊपरसँ जानकीसँ भेंट नहि हेबाक दुख से छनि। तेँ तुरंत निन्न पड़ि जाइत गेलाह।"-मैथिलीपुत्र बजलाह।

"ठीके छैक। हम सभ एहि समयक उपयोग आपसी विचार-विमर्शमे करैत छी।"-शक्तिस्वरुपा बजलीह।

"ठीके कहलिऐक।एतेकगोटे जानकीधामसँ आबि रहल छथि,मुदा जेताह कतए,करताह की? हिनका सभकेँ मार्गदर्शनक बहुत प्रयोजन छनि।"-मैथिलीपुत्र बजलाह।

तकर बाद तीनूगोटे सामनेक धर्मशालामे चलि जाइत छथि। अचानक मैथिलीपुत्रकेँ अलनापर लाल रंगक नुआ सुखाइत देखाइत छनि।

"ई नुआ ककर भए सकैत अछि?"-मैथिलीपुत्र बजलाह।

"जानकीएक बुझाइत छनि। लगैत अछि जे हड़बड़ीमे छुटि गेलनि।"-चिरञ्जीवी बजलाह।

"एकरा सम्हारि कए राखि लिअ। की पता जानकी किछु सोचिए कए एकरा छोड़ि देने होथि?"-मैथिलीपुत्र बजलाह।

चिरञ्जीवी ओहि साड़ीकेँ सम्हारि कए राखि लैत छथि।मैथिलीपुत्र चिरञ्जीवी सेहो बहुत थाकि गेल रहथि। हुनका सभकेँ सामनेमे आल्मीरामे एकटा चंगेरा भेटलनि। ओहिमे तरह-तरहक भोजन सामग्रीसभ राखल छल। ओ सभ भरि मोन भोजन केलनि। शक्तिस्वरुपा ताबत पता नहि कतए चलि गेलथि? जखन भोजन कए ओ सभ निश्चिन्त भेलाह तँ शक्तिस्वरुपाकेँ स्मरण केलाह। ओ तुरंत ओहिठाम आबि जाइत छथि।

"की बात? किछु परेसान बुझा रहल छी?"-शक्तिस्वरुपा पुछैत छथिन।

"जानकीधुजावाहिनी आएल छथि। हिनकासभकेँ केना की मार्गदर्शन कएल जाए।"

"हिनकासभकेँ कहिअनु जे धैर्यपूर्वक अपन काजमे लागल रहथि।ई समस्या कोनो एक दिन ,दू दिनक नहि अछि। जानकी कोनो एसगरे एहन अन्यायक सिकार नहि भेल छथि। ई तँ तत्कालीन सामाजिक दोषक परिचायक अछि। आखिर धोबी किएक चिंतामे पड़ल रहए? ओकरा

अपन भविष्यक चिंता रहैक,अपन सामाजिक प्रतिष्ठाक चिंता रहैक। अयोध्या अथवा जानकीक चिंता नहि रहैक।”

“ई सभ एतेक दूरसँ आबि रहल छथि।सभ भावनासँ ओत-प्रोत छथि। जानकीक जीवन आ सम्मानक रक्षा लेल कटिवद्ध छथि। आब एतेक दूर आगू आबि चुकल छथि,मुदा जानकीक कोनो अता-पता नहि छनि। तेँ हिनकालोकनिकेँ निराश होएब स्वाभाविक थिक। अखन तँ थाकि कए सुति गेल छथि,मुदा उठलाक बाद हिनका लोकनिकेँ की कहबनि?”

“अहाँ छी कथी लेल?हिनकासभकेँ सभ दिन जानकीक संगे रहबाक छनि । ताधरि रहबाक छनि जाधरि एहि कथाक सार्थक अंत नहि होइत अछि। तदनुकुल व्यवस्था कएल जाए।”

“मुदा ई सभ अपन घर-परिवार छोड़ि कए एना कतेक दिन पड़ल रहताह?”

“से तँ ओ सभ जानथि। अहाँ कोनो व्यवहारिक समाधान निकालु जाहिसँ जानकीक संग हिनकर सभक रहबाक किछू अर्थ होअए। जे भावी छैक से तँ हेबे करतैक। अहाँकेँ की लगैत अछि जे जानकी आब वापस अयोध्या जा सकतीह?कदापि नहि। ई सभ नियति छैक। पूर्वनिर्धारित दिशामे स्वतः आगू बढ़ि रहल छैक। मुदा हम-अहाँ अपन कर्तव्य करी।जानकीक सम्मानक रक्षा करब हमरालोकमनिक कर्तव्य थिक ।हमसभ ताही दिशामे काज करी। ईहो सभ ओही दिशामे काज करथि। हमरसभक लक्ष्य एक्के अछि।हम सदति अहाँसभक लेल सभ तरहेँ तैयार छी आ रहब।तेँ विशेष चिंता नहि करी।हिनकासभकेँ जानकीकेँ लक्ष्य राखि आगू बढ़ए दिअनु।समयसँ अपने समाधान निकलतैक।”

“ठीके कहलिऐक।जखन अहाँ हमरासभक संगे छी तखन चिंता कथीक । ई सभ उठैत छथि,तकर बाद हमसभ जानकीक पछोड़ करैत आगू बढ़ब। मुदा एहि विमानक की होएत?”

“अहाँ जानकीधुजावाहिनीक संगे-संगे चलू। विमानक चिंता हमरापर छोड़ि दिअ। ई जतएसँ आएल छल ओतहि वापस चलि जाएत।”

शक्तिस्वरुपाक बात सुनि मैथिलीपुत्र उत्साहित छलाह। ओ चौकीपर बैसल जानकीधुजावाहिनीक उठबाक प्रतीक्षा करए लगलाह।

जखने जानकी लक्ष्मणक संग अयोध्यासँ बाहर भेलीह,ओ सहर श्रीहीन भए गेल। चारूकात उदासी पसरि गेल। राजारामक कोठरी सुन्न भए गेलनि। हुनकर माथामे दिन-राति भूकम्प भए रहल छलनि। अयोध्यावासीसभ बेचेन छलाह। धोबी जे जानकीक वनबासक मूल कारण छल,स्वयं परेसान भए आत्महत्याक प्रयास केलक। निस्संदेह ओ कहुना कए जीबि गेल,मुदा स्थानीय लोकसभ ओकरा कहिओ क्षमा नहि कए सकल। सभक मोनमे ई बात रहबे कएल जे एकरे कारण जानकीक ओ हाल भेलनि। आब ओकरा अफसोच केनहि की होएत? अयोध्यावासीलोकनि राजारामक निर्णयक प्रतिरोध करबाक लेल बाहर निकलल रहथि अबस्स मुदा ओ सार्थक नहि भेल।ओकर सभक विरोध पानिक बुलबुला सिद्ध भेल।धोबीक दुर्घटनाक बाद भरतक आग्रहपर ओ सभ किंकर्तव्यविमूढ़ भए गेलाह। ओ सभ राजारामक महल दिस गेनाइ छोड़ि जानकीकेँ अयोध्या वापस अनबाक प्रयासमे लागि गेलाह। तकर बाद अयोध्यावासीसभ जानकीक वापसी लेल बिदा तँ भए गेलथि,मुदा अपन प्रयासमे सफल नहि भए सकलाह। नियतिओ केओ बदलि दैत? असंभव। जानकीकेँ वनबास लिखल छलनि,राजसुख भाग्यमे नहि रहनि,हुनकर संतानोकेँ अयोध्यामे जन्म होएब नहि लिखल रहनि तेँ ई सभ घटना घटित भेल।

अयोध्यावासीसभ जानकीक खोजमे अयोध्यासँ बिदा जरूर भेलाह,मुदा बहुत दूर धरि नहि जा सकलहा। थोड़बे आगू गेल हेताह कि आपसेमे विवाद होमए लगलनि। केओ किछु,केओ किछु बाजए लगलाह।

“राजारामक प्रति हमरालोकनिक कर्तव्यकेँ नहि बिसरबाक चाही। आखिर ओ हमरे लोकनिक लेल अपन सर्वस्व तिलांजलि देने छथि।जन भावनाक आदर करैत अपन पत्नी धरिक परित्याग कए देलनि अछि। एहन महापुरुषकेँ हमसभ कोना छोड़ि सकैत छी?”

“बेसी फटर-फटर नहि करू। अहाँक बातमे जानकीक पक्षक कोनो विचार नहि कएल गेल अछि। जानकी कोनो अपन मरजीसँ लंकाक राजा रावण संग नहि गेल रहथि। हुनकर अपहरण कएल गेल रहनि। लंकामे ओ कतेक कष्ट सहलनि।दिन-राति राजारामक प्रतीक्षा कएलनि।जखन ओ

युद्ध जिति लेलाह,तखन जानकी बहुत उम्मीदसँ हुनका लग आनल गेल रहथि। मुदा राजाराम की केलाह?अग्निपरीक्षा...। जानकीकेँ अपन पवित्रताक लेल अग्निपरीक्षा देबए पड़लनि। ई कोन महानता भेल से तँ कहू?सभ किछु बुझितो,जनितो जानकीक घोर अपमान कएल गेलनि आ ओ सेहो सहि गेलीह। अग्निपरीक्षामे सफल भेलाक बादे राजाराम हुनका फेरसँ स्वीकार केलथि। जखन से केलथि तकर बादो तँ अपन विचारपर अडिग रहितथि? कहाँ रहि सकलाह?राजारामक दुबिधा जानकीकेँ बहुत भारी पड़लनि अछि। एहि हद धरि जे छलपूर्वक ओ अपन अधिकारसँ वंचित कएल जा रहल छथि। बिना पूर्वसूचनाकेँ हुनका अयोध्याक सीमासँ बाहर पठाओल जा रहल छथि। ई तँ अपमानक पराकाष्ठा अछि। अछि कि नहि अहींसभ कहू?"

"खबरदार जे राजारामक विरुद्ध एकोटा शब्द बाहर केलह। जान नहि बचतह। ई अयोध्या थिक,राजारामक राजधानी। एहिठाम हुनके चलतनि। हुनकर अपमान बरदास नहि कएल जाएत।"

"तूँ मूर्ख छह।कनीको ज्ञान छहे नहि। बिना अर्धाङ्गिनीकेँ राजाराम कहिओ सुखी रहि सकताह की?कोनो यज्ञ कए सकताह?आर तँ छोड़ू,अपन राजकेँ उत्तराधिकारीओ नहि दए सकताह?शक्तिहीन,श्री हीन राजा केना शासन कए सकत? आब अयोध्याक तँ भगवाने मालिक।"

एहि तरहेँ अयोध्यावासी लोकनिक बीचमे आपसी विवाद बढ़िते गेल।

कहल जाइत अछि जे विपत्ति कखनहु असगरे नहि अबैत अछि। लोककेँ जखन समय प्रतिकूल भए जाइत अछि तँ ओकर छाँहो संग छोड़ि दैत अछि। देखिते-देखिते ओहिठामक परिस्थिति तनाओपूर्ण भए गेल। ओ सभ चलल छलाह की करए आ की कए रहल छथि? संयोग भेल जे अचानक भयाओन वर्षा शुरू भए गेल। ठनका खसए लागल।लगमे बहैत सरयू नदीमे पानि उफनि रहल छल। घंटा भरिमे ओहिठाम विपल्वक दृश्य उत्पन्न भए गेल।परिणामतः ओहिठाम उपस्थित लोकसभमे पड़ाहि लागि गेल।सभ जान बचा कए अपन-अपन घर दिस भागल।एहि तरहेँ अयोध्यावासीलोकनिक यात्रा अपूर्ण रहि गेल।

जानकीधुजावाहिनी विश्रामक बाद आगूक आदेशक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। मैथिलीपुत्र तँ पहिनेसँ ठाढ़ै रहथि। ओ शक्तिस्वरुपाक संगे भेल विचार-विमर्शक बारेमे हुनकालोकनिकेँ जानकारी देलखिन।

“तखन तँ हमर सभक एतेक दूर आएब व्यर्थ भेल। हमसभ एना वापस नहि जाएब। एतहि अपन प्राण दए देब से बेसी बढ़िआँ होएत। कम सँ कम जानकीसँ एक बेर भेंट तँ भए जाइत। हुनकर हाल-चाल पुछि लितिअनि। तकर बाद ओ जे कहितथि से करितहुँ। बढ़िआँ तँ होइत जे यदि ओ अयोध्या वापस नहि जा सकतीह तखन हुनका अपना संगे जनकपुर लेने अबितिअनि।मिथिलाक घर-घर हुनकर स्वागत हेतु अपन आँचर पसारने अछि। ओ एकबेर अवसर तँ देथुन। ”

“से की हुनका पति नहि छनि? की हुनका पिता नहि छनि? ओ कोनो अनाथ छथि जे जे-से हुनकर भविष्यक निर्णय करत?”-चिरञ्जीवी बजलाह।

“ई के बीचमे टपकि गेलाह? हमसभ आपसमे विमर्श कए रहल छी। ताहिमे हिनका बजबाक की प्रयोजन थिक?”

“ई कोनो आन नहि छथि। हमर सभक शुभचिंतक छथि। जुग-जुग धरि जानकीक समाद लोकधरि पहुँचैत रहनि ताहि हेतु शक्तिस्वरुपा हिनका हमरा सभक संग लगा देने छथिन। हिनकर बातपर तामस करबाक उचित नहि अछि। हमसभ जे करए चाहब ताहिमे ओ कहिओ हस्तक्षेप नहि करताह,मुदा रहताह हमरेसभक संगे।इतिहासक एकटा साक्षीक स्वरुपमे।”

हिनकालोकनिक आपसी विमर्श चलिए रहल छल कि ओहिठाम शक्तिस्वरुपा प्रकट भेलीह।

२२

“चिरञ्जीवी कोनो मामूली व्यक्ति नहि छथि। ओ सही मानेमे हनुमानक अंश छथि। जखने जानकी अयोध्यासँ बिदा भेलीह,तखनेसँ चिरञ्जीवी सक्रिय छथि। जानकीक छायाक समान हुनकर संगे छथि।“-शक्तिस्वरुपा बजलीह।

“तखन ओ एहिठाम की करैत छथि? हुनका जानकीक संगे ने रहबाक चाहिअनि?हमसभ तँ एहिठाम छीहे।”-मैथिलीपुत्र बजलाह।

“समाजमे भए रहल घटना सभक ओ साक्षी छथि ,निषपक्ष भावसँ देखि रहल छथि।जानकीक संग भए रहल अन्यायकेँ ओ शुरूएसँ देखि रहल छथि संगे अयोध्या,मिथिलाक तत्कालीन समाजमे घटित भए रहल घटनाक साक्षी सेहो छथि ओ । कोनो घटना ओहिना नहि घटित भए जाइत छैक,सालक-साल भए रहल सामाजिक परिवर्तन ओहिमे परिलक्षित होइत छैक ?आखिर राजाराम सन व्यक्तिकेँ जानकीक परित्याग सन कठोर आ दुखदायी निर्णय किएक लेबए पड़लनि?एहि प्रश्नक सही उत्तर जानबाक लेल तत्कालीन समाजक परिस्थितिपर,ओकर मान्यतापर ,ओकर नीति-अनीतिपर विचार करब जरूरी अछि। जुग-जुगसँ प्रताड़ित भए रहल स्त्रीसमाज संभवतः ओहू समयमे ओहिना छल। सामाजिक मूल्य आ मान्यताकक रक्षण आ पोषणक सभटा भार ओकरे पर रहलैक।तेँ ने एक दिस सभ तरहेँ पूजनीया जानकीकेँ ई दुर्दशा भेलनि। अग्निपरीक्षा देलाक बाद कोनो-कोन परीक्षा ने ओ दैत रहलीह। आर आब फेर की होमए जा रहल अछि?राजाक कर्तव्य एकटा पतिक कर्तव्यपर एतेक भारी किएक पड़ि गेल? से जानबाक प्रयोजन अछि। हे जे भेल से भेल,जानकी नैहर पर्यन्त नहि घुरलथि। तकर कारण? मिथिलावासीसभ एतेक उद्विग्न छथि,हुनका अपना संगे बहुत नीकसँ राखि सकैत छथि,मुदा जानकी से चाहबो करथि तखन ने?”

“अहाँ चिरञ्जीवीक चिंता नहि करू। समयक संगे अहाँ हुनका नीकसँ चिन्हि सकबनि। अखन अहाँ जानकीधुजावाहिनीकेँ मनाउ।ओ सभ अपन-अपन घर वापस जाथि। किछुगोटे जानकी संगे रहि सकैत छथि जाहिसँ वनबासमे रहैत जानकीकेँ कोनो कष्ट नहि होनि।”

“ओ सभ मानबो करथि तखन ने?”

“प्रयास करबामे कोन क्षति ?यदि ओ सभ नहि मानैत छथि तखन वाल्मीकि आश्रम लेने चलबनि।”

“ठीके कहलहुँ।हम हुनकासभकेँ बुझेबाक प्रयास करैत छी।”

मैथिलीपुत्र गोमती कातमे उपस्थित सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी संग चर्चा करबाक अवसर ताकि रहल छलाह। ओमहर जानकीधुजावाहिनी जानकीक अनुरागमे अपन भावनाक अभिव्यक्ति कए रहल छलाह-

जानकी छथि हमर सभक प्राण

नहि जीबि सकै छी हमसभ हुनका बिना
एक्को क्षण
हमसभ हुनके संगे रहब जतए कतए ओ रहतीह,
अयोध्यावासी सभ केलनि जुलुम
कहि नहि कतेक मंथरा ओहिमाटिमे भरल अछि
जे जानकीक जीनाइ मोसकिल कए देलक
हद तँ तखन भेल
जे जानकी पतिक संग
नहि रहि सकलीह
भगा देल गेलीह
अपन घरसँ
राजधानीसँ
एहनो कहीं न्याय होइ छै
एकतरफा
ई कोन आदर्श भेलै
जे ककरो कहला पर बिना सुनबाइकेँ
राजाराम सन मर्यादा पुरुषोत्तम
बंचित करथि अपने पत्नीकेँ
 समस्त अधिकारसँ
भए सकैत अछि
जे ओहि जुगक मान्यता किछु भिन्न रहल होइक
तकर माने की?
मनुष्यतो कोनो चीज होइत अछि
जानकी अहुरिआ काटि रहि गेलीह
अयोध्यावासी एहन कठोर
 किएक भए गेलाह
जे अपन पुतहु
ओहो जानकीसनक
सम्मान आ मर्यादाक
रक्षा नहि कए सकलाह
मिथिलावासी नहि सहताह ई अन्याय

हमसभ जाएब ओहिठाम
जतए जानकी छथि
हुनका करबनि निवेदन
हे हमर प्रिय बहिन!
चलू वापस मिथिला
घर-घर अहाँक स्वागतमे ठाढ़ अछि
मुदा ओ मानबो करतीह तखन ने?
ओहो तँ छथि सर्वशक्तिमान
मिथिलावासी छाती पिटैत रहि जेताह
देखैत रहि जेताह
मूकदर्शक बनि
अनरगल बातसभ जे
भोगबाक लेल जानकी
कए देल गेल छथि विवश
हमसभ ताबे निचेन नहि होएब
जाधरि अपन निवेदन जानकीसँ
कए सकबनि
कहबनि यदि अहाँ नहिए जाएब कतहु
तखन हमहींसभ अहाँक संगे रहब
जंगल-झाड़मे
जेना अहाँ जिअब
हमहूँसभ तहिना रहब
मुदा संगे रहब ताधरि जहिआ धरि
अहाँकेँ वापस नहि होइत अछि
अपन मौलिक अधिकार
हे जानकी क्षमा करू
हमहूँसभ छी विवश
अपन भावनाक आगू
कोना बिसरि सकै छी
जे हमहूँसभ

छी अहींक संतान

मैथिलीपुत्र जानकीधुजावाहिनीक कविता सुनि गद-गद रहथि।आब हुनका नहि रहल गेलनि। ओ बुझि गेलाह जे हिनका लोकनिकेँ बीच रस्तासँ वापस करब संभव नहि अछि। अस्तु,ओ शक्तिस्वरुपाककेँ स्मरण केलथि।

“की भेल?”- शक्तिस्वरुपा पुछलखिन।

“देखिऔ ने । ई सभ कतेक भावुक भेल छथि। हमरा विचारे तँ हिनकासभकेँ वाल्मीकि आश्रम धरि लेने चलू। ओहिठाम जानकीसँ भेंट भए जेतनि तँ हिनकासभकेँ संतोष हेतनि,मोनमे शांति भेटतनि। तकर बाद जेना जे हेतैक से देखल जेतैक।”

“कोनो हरजा नहि। यदि मार्गमे कोनो परेसानी होअए तँ हमरा स्मरण कए लेब।चिरञ्जीवीकेँ सेहो संगे लेने जाउ। हिनकर आगू बहुत काज छनि।”

से बाजि शक्तिस्वरुपा चलि जाइत रहलीह। मैथिलीपुत्र जानकी जानकीधुजावाहिनीक प्रशंसा करैत छथि-

“जानकीक प्रति अहाँ लोकनिक सद्भाव आ सिनेह देखि हम मंत्रमुग्ध छी। हमरा विश्वास अछि जे अहाँसभ मिथिलाक यश आ प्रतिष्ठाक झंडा विश्वमे फहड़ा कए रहब। हमरा आब कनीको सक नहि रहि गेल जे अहाँसभ जानकीकेँ न्याय दिआ कए रहबनि।”

“आगू की करबाक अछि से बाजू। जानकीसँ कतए कोना भेंट भए सकत से कहू। हमसभ आब एक्को क्षण बरबाद केने बिना जानकी लग जाए चाहैत छी जाहिसँ हुनका अपन निवेदन करिअनि, हुनकर दुख-सुखमे सहयोगी बनि सकिअनि,हुनका अपना संगे मिथिला आनि सकिअनि।”

“जानकीक कष्ट निवारण लेल अहाँसभ अविलंब प्रस्थान करू।”

मैथिलीपुत्रक एतेक कहबाक देरी छल कि सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी धराधर रथसभमे सबार भए बिदा भए गेलाह। आगू-आगू ढोल-पिपही बाजि रहल छल। गबैआ सभ जानकीक सम्मानमे गीत गाबि रहल छलाह। माहौल बहुत उत्तेजक लागि रहल छल। लागि रहल छल

जेना जानकीधुजावाहिनी जानकीकेँ सम्मानपूर्वक अयोधया वापसी लेल कृतसंकल्प छथि।

२३

“गुरुजी! गुरुजी!”

आश्रमक किछु विद्यार्थीसभ चिचिआइत वाल्मीकि ऋषि लग पहुँचल। ओहि समयमे ऋषिवर ध्यानस्थ छलाह। ओ ध्यानेमे सभ किछु देखि लेने रहथि,बुझि गेल रहथि जे किछु अनर्थ भए रहल अछि। मुदा किछु बाजि नहि रहल छलाह। बजबो की करितथि? भावीकेँ के टारि सकत?आश्रमवासी विद्यार्थीलोकनिक परेसानी बढ़िते जा रहल छल। ओ सभ सोचि नहि पाबि रहल छल जे की करए? ओ सभ फेर चिकरल-

“गुरुजी! गुरुजी!”

हल्ला सुनि कए आश्रमवासी लोकनि बाहर अबैत छथि।

“की भेलैक ? तूँसभ एना किएक चिचिआ रहल छह?देखि नहि रहल छह जे गुरुजी ध्यानस्थ छथि?”

बिद्यार्थीसभ हुनकासभकेँ जंगल दिस इसारा करैत छथि,मुदा किछु बाजि नहि पबैत छथि।

ताबतेमे एकटा स्त्रीक करुण क्रन्दन हुनकासभकेँ सुनाइत छनि।

“जंगल दिससँ ई ककर कनबाक अबाज आबि रहल अछि?”

“हमसभ सएह तँ कहए चाहैत छलहुँ।”

“की भेलैक?”

“मौसम खराप होइत देखि हमसभ जारनि काटब छोड़ि कए वापस आश्रम दिस बढ़ले छलहुँ कि एकटा स्त्रीक करुण क्रन्दन सुनि ठमकि गेलहुँ। हमसभ बुझबाक प्रयास करैत रहलहुँ जे बात की छैक? बुझेबे नहि करए जे एहन घनघोर जंगलमे ई स्त्री कतएसँ पहुँचलीह? ओ एना किएक कानि रहल छथि?”

“तखन?”

“तखन की करितहुँ? कोनो उपाय नहि देखि भेल जे गुरुजीकेँ कहिअनि। मेघ से जोर-सोरसँ ढनढना रहल छल। रहि-रहि कए बिजलौका

चमकि रहल छल। चारूकात अन्हारगुज्ज भए गेल छल। लगैक जेना आकाशसँ कोनो क्षण जलवृष्टि शुरू भए जाएत। टिपिर-टिपिर पानि पड़नाइ शुरू भइए गेल रहए। बीच-बीचमे ठनकासे खसि रहल छल,तकर गर्जन-तर्जनसँ ककर मोन ने डरा जाएत? हमसभ आश्रम दिस भगलहुँ। मुदा मोनमे तरह-तरहक आशङ्का भए रहल छल।

हमसभ तँ अपन जान बचा कए भागि रहल छी,मुदा एहि स्त्रीक की होएत? एकर रक्षा के करत?"एही चिंतासँ व्याकुल भेल हमसभ गुरुजी लग पहुँचलहुँ। मुदा ओ तँ आँखि खोलिए नहि रहल छथि। हुनका देखलासँ लगैत अछि जेना ओ गंभीर चिंतन कए रहल छथि। जेना सभ किछु जनितो किछु बाजए नहि चाहि रहल छथि।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि। हमरालोकनिकेँ आश्रमवासी हेबाक धर्म निर्वाह करहि पड़त। गुरुजी एना मौन नहि रहि सकैत छथि। जरूर किछु विशेष बात हेतैक। हमरा सभकेँ धैर्य रखबाक चाही।"

एतबेमे ऋषिवर आँखि खोलैत छथि। ओ पुछैत छथिन-

"की बात? तूँसभ एना किएक परेसान छह? कोनो जानबर आक्रमण कए देलकह की?"

"नहि,नहि। कोनो जानबर नहि आएल अछि। अपितु, हमसभ एकटा गंभीर मानवीय समस्यासँ परेसान छी,आहत छी आ अपनेक मार्गदर्शन चाहैत छी।"

"साफ बाजह ने जे बात की छैक?"

"ध्यान दए सुनिऔक। कोनो स्त्रीक चित्कार सुना रहल अछि ने। एहन विषम परिस्थितिमे एहि जंगलमे ई स्त्री कतएसँ आएलि? कहि नहि एकरापर कोन विपत्ति आबि गेल छैक?"

"सही कहि रहल छह। तूँसभ अविलंब ओहिठाम जाह आ हुनका आदरपूर्वक अपन आश्रम लए आबह। तकर बादे किछु आर।"

आश्रमवासी स्त्रीसभ किछु विद्यार्थीक संगे जंगल दिस बिदा होइत छथि। मौसम बहुत प्रतिकूल भेल अछि। कनीको फटकी देखा नहि रहल अछि।

"एनामे हमसभ ओतए केना पहुँचि सकब?"

"मुदा गेनाइ तँ जरूरी अछि। एसगरि एहि भयाओन जंगलमे ओहो एहन बिकराल समयमे ओ स्त्री कोना बाँचि सकति?"

“हमहूँ बहुत चिंतित छी। पता नहि केना ओ एहि समयमे एसगरि जंगलमे बौआ रहल अछि?”

वनदेबी ओहि घनघोर जंगलमे विलाप कए रहल छलीह। हुनकर करुण क्रन्दन सुनि कए लगपासक गाछक पातसभ मौला गेल छल।चिड़ै चुनमुन उड़नाइ छोड़ि गाछक डारिसभपर बैसि मौन साधि लेने छल। किछुए काल पूर्व लगीचेमे बहैत नदीक धाराक गति जेना मंद पड़ि रहल छल।आर तँ आर ,जेना भगवान भास्कर पर्यन्त शोक मना रहल छलाह,जेना हुनका ई दारुण दृश्य नहि देखल जा रहल छलनि,हुनकर रश्मि अपन तेजस्विता छोड़ि रहल छल। लगैत छल जेना दिनेमे रातिक दृश्य उपस्थित भए जाएत। कहि नहि समस्त जीव-जन्तु कोन अनर्थकारी परिस्थितिक गबाह बनि गेल छल?

एतबहिमे बड़ी जोरसँ बिजलौका चमकल। ओकर इजोतमे ओहि स्त्रीक देह देखाएल। हुनकर देह भरिगर लागि रहल छलनि।ओ अखनहु कानिए रहल छलीह। बिजलौकाक इजोतमे ओहो आश्रमवासी लोकनिकेँ अपना दिस अबैत देखलथि। ओ आर जोरसँ चित्कार करए लागलि।

“बचाउ! बचाउ! ”

आश्रमवासी स्त्रीसभ विद्यार्थीसभक संगे झटकारि कए हुनका दिस बढ़बाक प्रयत्न करैत छथि। मुदा वायुक प्रचंड वेगक आगू कतबो प्रयासक अछैतो असमर्थ भए गेल छथि। फेर की भेल,की नहि। लागल जेना अन्हड़ उठल आ ओकरासभकेँ अचानक उठा-पुठा कए ओहि स्त्रीक लगीचमे पहुँचा देलक। सामनेमे ओहि स्त्रीकेँ अस्त-व्यस्त भेल देखि ओ सभ द्रवित भए गेलि। ओ स्त्री आश्रमवासीकेँ इसारासँ किछु कहैत छथि। आश्रमवासी स्त्री लोकनि हुनकर स्थिति बुझि जाइत छथि।

ओ तँ कनिते जा रहल छलीह। कोनो सुधि-बुधि नहि रहि गेल छलनि। रहि-रहि कए अपन पेटमे पलि रहल संतानक चिंतासँ मोन आर दग्ध भए रहल छलनि।

आश्रमवासी स्त्रीलोकनि हुनका देखि-देखि आश्चर्यचकित छलि।

“एहन मूल्यवान वस्त्र पहिरने छथि ई।“

“सौंसे देहमे तरह-तरहक गहनासभसँ सुसज्जित छथि ई।”

“ततबे नहि,गलामे आ माथपर सुहागिन हेबाक प्रमाणस्वरुप चेन्ह सद्यः विद्यमान छनि ।”

“हे भगवान! ई की अनर्थ केलहुँ अपने?”-आश्रमवासी स्त्रीसभ रहि-रहि कए बाजि उठैत छलि।

आश्रमवासी स्त्रीलोकनि ओहि पीड़िताक लगीच पहुँचैत छथि। हुनकासभकेँ जेना बड़ी जोरकेँ करेंट मारि देलकनि। सौंसे देह तरंगित भए गेलनि। ओहि स्त्रीक चारूकात जेना प्रकाश विकीर्ण भए रहल छल। एतेक कष्टमे रहितहुँ ओकर समस्त आनन अद्भुत आभासँ परिपूर्ण छल,तेजोमय भए रहल छल।

“ई सामान्य स्त्री नहि छथि। कहीं स्वर्गलोकसँ कोनो विशेष कारणसँ पृथ्वी लोकपर खसा देल गेल होथि आ अपन लोकक वियोगमे ओ एतेक करुण क्रन्दन कए रहल होथि।”

“से जे होइक,मुदा हिनका एहिठाम पाओल जाएब सामान्य वृतान्त नहि थिक।”

“एहि रहस्यक अनावरण तँ गुरुएजी कए सकैत छथि।”

“ओ तँ किछु बाजिए नहि रहल छथि। जेना बौक भए गेल छथि।”

“भए सकैत अछि जे ओ स्वयं बहुत कष्टमे होथि,एहि स्त्रीक वृतान्त जनितहु परिस्थितिवश गबधी लाधि देने होथि,किंवा ककरो द्वारा कएल गेल एहि अमानवीय घटनाक मूल कारणपर चिंतन कए रहल होथि।”

“से जे होउक,मुदा एहन संकटपूर्ण अवस्थामे एकटा स्त्रीकेँ देखिओ कए ऋषिवर कतेक काल धरि चुप रहि सकैत छथि?”

आश्रमवासी स्त्रीसभ तरह-तरहक प्रश्नसँ स्वयंमे ओझराएल चलि जाइत छलीह।

“सभ भार हुनके पर छनि। ओ सर्वज्ञाता छथि,जे चाहथि से कए सकैत छथि। यदि ओ किछु नहि बाजि रहल छथि अथवा किछु विशेष नहि कए रहल छथि तँ तकरो किछु अर्थ हेबे करत। हमरा लोकनिकेँ धैर्यपूर्वक उचित क्षणक प्रतीक्षा करैक चाही।“

“सएह कहू,हमसभ एतेक परेसान छी आ ऋषिवर किछु बाजि नहि रहल छथि।”

“की रहस्य अछि हिनकर मौनक से किछु बुझा नहि रहल अछि।”

ऋषिवर आश्रमवासी लोकनिक मोनक भाव तारि जाइत छथि। ओ पुछैत छथि-

“की बात छैक? तूँ सभ एना परेसान किएक छह? ”

“से अहाँसँ बेसी के बुझि सकैत अछि? ”

“मुदा हमरा तँ अखन किछु आर सोचबाक समय नहि बुझा रहल अछि। अखन वनदेबी परेसानीमे छथि। हिनका आश्रम लए जाहुन। हिनकर देख-रेख करहुन,उचित सेवा-सत्कार करहुन।तकर बादे किछु आओर बात।”

आश्रमवासी स्त्रीलोकनि वनदेबीक संग आश्रम दिस प्रस्थान करैत छथि।

वनदेबी दुखी छथि,चलितो छथि,कनितो छथि। आश्रमवासी स्त्री लोकनि हुनका बौसबाक प्रयास करैत छथि। ऋषिवर ध्यानशक्तिसँ सभ बात बुझि गेल रहथि। ओ आगू बढ़ि हुनका प्रणाम करैत छथि आ कहैत छथि-

“वनदेबी! अहाँक हमर आश्रममे ससम्मान स्वागत अछि। अहाँ निश्चिन्त भए एतए रहू। समस्त आश्रमवासी अहाँक स्वजन छथि। अहाँ निःसंकोच हिनकासभक संगे अपन सुख-दुख बतिआउ। आश्रमक समस्त संपदाक आनन्द उठाउ। ”

वनदेबी किछु संकोचमे पड़ि जाइत छथि।

पता नहि की चमत्कार भेल जे मौसम अचानक ठीक भए गेल। हबाक गति सामान्य भए गेल। भगवान भास्कर आब अस्ताचलमे विलीन होमए जा रहल छलाह। मुदा ओहो एहि दृश्यकेँ देखि लेबाक हेतु जेना कनी काल ठमकि गेल छथि। आगू-आगू ऋषिवर आ हुनकर पाछू-पाछू वनदेबीक संगे आश्रमवासी स्त्री लोकनि आश्रम दिस बिदा होइत छथि।

२४

जानकीकेँ वाल्मीकि आश्रम लग छोड़ि अत्यंत दुखी आ उदास मोनसँ लक्ष्मण रथपर बैसि जाइत छथि। सुमंत रथ चलेबाक आज्ञा मांगि रहल छथि। मुदा हुनका होसे नहि छनि जे किछु उत्तर देथिन। ओ निरंतर जानकीकेँ देखि रहल छथि। जानकी नदीक ओहिपार एकसरि ठाढ़ भेल

कानि रहल छथि। हुनकर हृदयविदारक करुणक्रन्दन सुनि लक्ष्मण पंगु भए गेल छथि।हाथ-पैर सुन्न भए गेल छनि। जानकी कनैत-कनैत बेहोस भए खसि पड़ैत छथि। लक्ष्मण पाथर भेल देखि रहल छथि जानकीकेँ।सुमंत बेर-बेर आग्रह करैत छथिन जे हुनका आगू बढ़बाक आज्ञा देल जानि। मुदा लक्ष्मण किछु बजिते नहि छथि।सुमंतकेँ बुझा नहि रहल छनि जे ओ की करथि, एहि विषम परिस्थितिसँ कोना उबरथि। ओ तरह-तरहसँ लक्ष्मणकेँ बुझेबाक प्रयास केलनि। जखन ओ किछु सुनबे नहि करथिन तँ सुमंत घोड़ाकेँ मारलनि चाबुक। मुदा घोड़ा हिहिआ कए रहि गेल,एक डेग आगू नहि बढ़ल। ओहो जानकीकेँ ताकि रहल छल।जानकी कहाँ छथि? हुनका बिना कोना वापस चलि जाउ?”

लक्ष्मणक स्थिति देखि सुमंत बहुत दुखी भए गेलाह। चुपचाप रथपर बैसि गेलाह। एहि तरहेँ किछु समय बीति गेल।घोड़ासभ ठमकल रहल,सुमंत किकर्तव्यविमूढ़ रथपर बैसल रहलाह,प्रतीक्षा करैत रहलाह जे लक्ष्मण होसमे आबथि,सक्रिय होथि। जखन लक्ष्मण देखि लेलनि जे जानकी वाल्मीकि मुनि आ हुनकर आश्रमवासी लोकनिक संगे जा रहल छथि तखने ओ सुमंत दिस घुमलथि। ओ कहैत छथि-

“ रथ आगू बढ़ाउ।”

सुमंत रथ आगू बढ़बैत छथि। रथक घोड़ासभ सेहो आब विरोध नहि कए रहल अछि। मुदा ओकरासभमे ओ स्फूर्ति नहि छैक,ओ गति नहि आबि रहल छैक जे जानकीक रहलापर रहैक। तथापि,सुमंत आगू बढ़ि जाइत छथि। जेना-जेना ओ दृश्य फटकी होइत गेल,तेना-तेना रथक घोड़ा सामान्य होइत गेल,ओकर गति बढ़ैत गेलैक। लक्ष्मण से सुमंतक संगे गप्पमे लागि गेलाह।रथ आब पूर्ण गतिसँ आगू बढ़ि रहल छल।

अचानक बड़ी जोरक हल्ला सुनबामे आएल। रथक दुनू घोड़ा ठाढ़ भए गेल,कतबो सुमंत प्रयास केलथि ओ एक्को डेग आगू नहि बढ़ि रहल छल। लक्ष्म्ण सुति गेल रहथि। ओहो हल्ला सुनि कए उठि बैसलाह।

“की भए रहल अछि?एतेक हल्ला कथीक अछि?”

“पता नहि की बात अछि?”

ओहि समयमे रथ अयोध्या सहरसँ घंटा भरिक दूरीपर रहल होएत। मौसम से गड़बड़ छल। हबा बहुत तेज बहि रहल छल। रथकेँ ठामहि रोकि सुमंत रथपरसँ उतरि जाइत छथि। हुनका लागल लक्ष्मण सेहो रथसँ उतरि

जाइत छथि।दुनूगोटे कनीके आगू बढ़ल हेताह कि लोकक हुजुम देखेलनि। ओ सभ जानकीक वनबासक बारेमे किछु-ने-किछु चर्च आपसमे कए रहल छलाह।

"हमरा लोकनिक प्रयास तँ निठ्ठाहे बेकार भए गेल।"

"करबे की करितहुँ? भरत स्वयं आबि कए हमरासभकेँ मनेबाक प्रयास केलथि।तथापि हमसभ नहि रुकलहुँ,आगू बढ़ गेलहुँ। भाग्यो संग नहि दए रहल अछि। हमसभ की करू?बिदा भेल रही जे जानकीकेँ वापस आनिए कए मानब। मुदा बीचे रस्तामे घोर संकटक स्थिति उत्पन्न भए गेल। तेहन अन्हड़ उठल जे एक्को डेग आगू बढ़ब मोसकिल भए गेल। अयोध्यावासीसभ बेचेन भए एमहर-ओमहर भागि गेलाह। संयोगे एहने बनि गेल। कएल की जाइत?"

लोकसभक अबाज क्रमशः बढ़िते जा रहल छल। थोड़बे आगू बढ़लाक बाद चारू कात पसरल अयोध्यावासी सभ देखेलनि। ओ सभ वापस अयोध्या जाइत रहथि,मुदा अचानक मौसम ततेक गड़बड़ाएल जे जे जतहि छलाह से ततहि रहि गेलाह। एतबेमे किछुगोटेकेँ नजरि लक्ष्मणपर पड़ैत छनि। ओ सभ चिचिआ उठैत छथि-

"अहाँ असगर किएक छी? जानकी कहाँ छथि?हुनकर की हाल छनि? हुनका कतए छोड़ि देलिअनि?"

"अहींसभ तँ बजैत रही जे राजाराम जानकीकेँ कोना अपना संगे रखने छथि? जखन ओ रावणक अधीन राखल गेलथि तखन हुनका अयोध्याक रानी कोना बनाओल गेलनि। एहिसँ तँ समाज बिगड़ि जाएत। लोकमे गलत संदेश जाएत । एहिसँ परिवारक मर्यादा नष्ट होएत। राजारामकेँ एहि बातसभक जनतब भेलनि। तकरे परिणाम आब सामने अछि। तखन कोन मुँहे अहाँसभ जानकीक बात करैत छी?"

"की बाजि रहल छी अहाँ? अहाँसभक बुद्धि खराप भए गेल अछि। केओ किछु कहतै तकर माने की? पतिक कर्तव्य थिक जे ओ अपन पत्नीक रक्षा करए । यदि रामके विश्वास छलनि जे जानकी निर्दोष थिकीह,जे सरिपहुँ छथि, तखन ककरो कहलापर हुनका एहन निर्णय नहि लेबाक चाहैत छलनि। सेहो बिना जानकीकेँ पुछने। ई तँ घोर अन्याय थिक।"

एहि तरहेँ केओ किछु केओ किछु बाजि रहल छल।चारू कातसँ लोकसभ लक्ष्मणकेँ घेरि लेने छलनि। लक्ष्मणकेँ फुरेबे नहि करनि जे ओ की उत्तर देथि। ओ तँ स्वयं मर्माहत छलाह,जानकीक राजाराम द्वारा कएल गेल परित्यागसँ आहत छलाह।हुनकर वश चलनि तँ ओ तुरंत घुरि जाथि, जानकीकेँ वापस अयोध्या लेने आबथि। मुदा राजारामक आदेशकेँ कोना नहि मानल जाएत? से समस्या तँ बनले छल। आखिर ओ बहुत मोसकिलसँ ओहि भीड़सँ बचैत अयोध्या वापस पहुँचि सकलाह।

२५

तमसा नदीक कातमे चारू दिस जंगलमे घेराएल वाल्मीकि आश्रममे अद्भुत शांति छल। आश्रम तीन भागमे बँटल छल।आश्रमवासी स्त्री लोकनि लेल अलग आवास छल। विद्यार्थीसभ सटले दोसर घरमे रहैत छलाह। वाल्मीकि मुनि स्वयं थोड़े फटकी बनल घरमे रहैत छलाह। ओहिमे ओ दिन-राति अपन साधनामे लागल रहैत छलाह,लिखैत-पढ़ैत रहैत छलाह। आश्रमवासी शिष्यलोकनिकेँ उत्तम सँ उत्तम संस्कार होनि ताहिमे लागल रहैत छलाह । आश्रममे तरह-तरहक फल-फूल लागल छल। शिष्यगण नित्य जंगलसँ अनेक प्रकारक फलसभ अनैत छलाह। ओहीसँ आश्रमवासीक काज चलैत छलनि। आश्रममे बहुत रास गायसभ छल।तकर शुद्ध दूध आश्रमवासी पिबैत छलाह। ओतए सभ केओ अपन-अपन काजमे व्यस्त रहैत छलाह,सभकेँ परस्पर प्रेम आ विश्वास छलनि। ककरोसँ कोनो प्रकारक प्रतिस्पर्धा नहि छल। असलमे ओ सभ अपन जीवनमे धर्मक रहस्यकेँ सही मानेमे प्रतिपादित करबाक लेल सतत प्रयत्नशील छलाह। आश्रमवासीसभ पूर्णतः स्वाबलंबी छलाह, अपन निर्वाहक लेल कोनो तरहसँ ककरोपर आश्रित नहि छलाह।

रातिक एकान्तमे जखन सभ केओ सुति जाइत छलाह,तखन वाल्मीकि अपन रामायण महाकाव्यक रचना केरैत छलाह। ओ अपन तपबलसँ रामायणक भावी घटनाकेँ सेहो देखि रहल छलाह, तकर वर्णन सेहो केने जा रहल छलाह।तेँ जखन जानकी हुनकर आश्रम लग देखेलीह तँ ओ तुरंत ओकरा भविष्यमे घटित होमए बला घटनासँ जोड़ि सकलाह।हुनका किछु आश्चर्य नहि लागि रहल छलनि।जे हेबाक छलैक सएह भए रहल छलैक। अन्यथा राजारामक पत्नी होइतहुँ जानकी सभदिन

दुखीए किएक रहि जइतथि,रने-बने किएक बौआइत रहतथि? सभ भावी छल, हेबेक छल,केओ ओकरा रोकि नहि सकैत छल,स्वयं रामो नहि।

वनदेबीक वाल्मीकि आश्रमवासीसभ हृदयसँ स्वागत करैत छथि। आश्रममे रहि रहल स्त्रीलोकनि हुनकर आरती करैत छथि।ओहीमे सँ केओ जल्दीसँ जंगलसँ आनल गेल टटका फल अनैत छथि।केओ गिलासमे ठंढा जल अनैत छथि।केओ हाँइ-हाँइ पटिआ पसारैत छथि। जानकी हुनका लोकनिक भावुकतासँ चकित छथि। यद्यपि अयोध्यामे हुनका संग कएल गेल व्यवहारसँ ओ अखनहु भीतरे-भीतर छटपटाइत रहथि,तथापि आश्रमवासी लोकनिक सहृदयता हुनका लेल मलहम जकाँ काज केलकनि। सभसँ पहिने जानकी सभ गोटे कैँ प्रणाम करैत छथि। तकर बाद ओ सामने ओछाओल पटिआपर बैसि जाइत छथि। आश्रमवासीसभ ततेक अपनत्वक भाव देखबैत छथि जेना ओ सभ जानकीसँ सालोंसँ परिचित होथि। एहन सुखद माहौलमे आश्रमवासीलोकनिक हार्दिक सिनेह पाबि जानकी बहुत आश्वस्त भेलथि। ओ बहुत भूखल रहथि। आश्रमवासी द्वारा आनल गेल फल ओ खाइत छथि। ततबेमे एकटा स्त्री हुनकर गलामे बेली फूलक माला पहिरा दैत छथि। ओकर सुगंधसँ संपूर्ण वातावरण महमह करए लगैत अछि। जानकीकैँ लागि रहल छलनि जेना ओ अपन लोकसभमे आबि गेल होथि। आब हुनकर मनोदशामे क्रमशः सुधार भए रहल छलनि। घंटाभरि एहि सुखद माहौलमे रहलाक बाद जानकी पहिल बेर मुस्कुरेलथि। हुनकर प्रसन्नता देखि आश्रममे चारूकात आनन्द पसरि गेल।आश्रमवासी सभ माहौलकैँ आर सुखद करैत भजन-कीर्तन करए लगलाह।

जानकी जलखै केलीह,पानि पिलथि । ओ थाकल तँ रहबे करथि। कनीके सुखद माहौल देखि औंघी लागए लगलनि। हुनका औंघाइत देखि आश्रमवासीसभ एक-दोसरकैँ इसारा केलनि। सभ गोटे जानकीकैँ ओतए विश्राम करबाक आग्रह करैत ओहिठामसँ सहटि गेलथि। जानकी ठामहि पड़ि गेलथि। थोड़बे कालमे ओ फोंफ काटि रहल छलीह। हुनका सुतल देखि आश्रमक स्त्रीसभ बहुत प्रसन्न रहथि। ओहीमे सँ केओ जाइत-जाइत हुनका दिस देखलकनि।

"हिनकर पेट भारी लागि रहल छनि।"

"सेहो कनीटा नहि। बेस विकसित लागि रहल छनि।"

“सएह कहू,एहनमे कोनो स्त्रीकेँ घरसँ बिदा कएल जाइत छैक? बहुत जुलुम भेल अछि।”

ओ स्त्री इएहसभ सोचैत आगू बढ़ि गेलीह।

आश्रमवासी स्त्रीसभमे क्रमशः ई बात पसरि गेल। सभ जानकीक प्रतिए बहुत संवेदनशील भए गेलथि।जखन वाल्मीकिकेँ ई बात आश्रमक स्त्रीक माध्यमसँ पता लगलनि तँ ओ कनीको चकित नहि रहथि। अपितु,ओ अपन हस्तलिखित रामायण दिस संकेत केलखिन-

“ऐहिमे सभटा लिखि चुकल छी। सभ किछु तहिना घटित भए रहल अछि।”-से कहि वाल्मीकि फेरसँ ध्यानमग्न भए गेलथि।

२६

शक्तिस्वरुपा,मैथिलीपुत्र आ चिरञ्जीवी वाल्मीकि आश्रमसँ सटले तमसा नदीक कातमे आपसमे विचार-विमर्श कए रहल छथि। मिथिलासँ चलल सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी सेहो ओतए पहुँचि गेल छथि। ओ सभ कनीके फटकी विश्राम कए रहल छथि। हुनका लोकनिक अड्डामे दिन-राति जानकीक समर्थनमे चर्चा होइत अछि। जानकीक समर्थनमे तरह-तरहक गीत-नाद गाओल जाइत अछि । सभक मूलमे जानकीक प्रति मिथिलावासीक सिनेह भरल अछि,जानकीक रामसँ वियोगक कष्टक वर्णन अछि। जानकीक कोखमे पलैत अयोध्याक राजवंशक उत्तराधिकारीक चिंता सेहो कएल जा रहल अछि-

कोना जीबि सकतीह जानकी
एतेक अपमान सहि कए
हृदय खंड-खंड भेल छनि
रामक कठोर निर्णयसँ
कोना रक्षा कए सकतीह ओ
कोखमे पलि रहल अपन संतानकेँ
जे छथि सूर्यवंशक उत्तराधिकारी
केओ सोचि सकै छल
जे जनकक दुलारी
राजारामक अर्धाङ्गिनीक
ई हाल हेतनि

रावण केलक प्रपंच
जबरदस्ती हरि लेलकनि जानकीकेँ
बेसक ओ हुनका उठा-पुठा कए लए गेल
लंका विमानसँ
मुदा एहिमे जानकीक कोन दोष
से बात ओ कहलखिन रामसँ
जखन ओ लंका बिजयक बाद
जानकीकेँ स्वीकार करबामे केलनि विलंब
जानकी कहलथि-
हम तँ सदिखन अहींक ध्यान केलहुँ
हमर देह तँ भए गेल छल पराधीन
मुदा मोनसँ हम सदिखन
अहींकेँ ध्यान केलहुँ
से बात राम नहि बुझलथि
अड़ि गेलथि अग्निपरीक्षा हेतु
तकर बादो कहाँ शांत रहि सकलाह ओ
मामूली धोबीक कहलापर
जानकीकेँ अयोध्यासँ निर्वासित कए देलाह

बहुत भए गेल
आब जरूरी अछि प्रतिकार
कोनो मरुगतिक काज नहि छै
शक्तिवानक आराधना सगतरि होइत छै
अयोध्यावासी देखताह मिथिलाक शक्ति
आ हेताह दंडवत
मिथिलावासी छथि जानकीक समांग
प्राण रहए की जाए
मुदा वापस हेतनि जानकीक सम्मान
जानकीक संतान
जे छथि अयोध्याक राजकुमार

अबस्स पओताह
अपन जन्मसिद्ध अधिकार
बनताह रामक उत्तराधिकारी

“हमसभ वाल्मीकि आश्रम पहुँचि गेल छी,मुदा जानकी तँ कतहु नहि देखा रहल छथि। हमरा सभक संगे आएल जानकीधुजावाहिनी सैकड़ों लोकसभ व्याकुल छथि,अपन जीवन न्योछावर करबाक हेतु प्रस्तुत छथि। हुनकासभकेँ अहाँ मार्गदर्शन करिअनु।“-मैथिलीपुत्र बजलाह।

शक्तिस्वरुपा कहैत छथि-“जानकी वाल्मीकि आश्रम पहुँचि गेल छथि। ओहिठाम वाल्मीकि मुनि आ हुनकर शिष्यलोकनि हुनकर बहुत स्वागत केलखिन।अखन ओ हुनके आश्रममे विश्राम कए रहल छथि।ओतए जानकी पूर्णतः सुरक्षित आ सम्मानित छथि।”

“हमरा लोकनिकेँ हुनकासँ भेंट केना होएत?जानकीधुजावाहिनी सेहो आतुर छथि। हुनकासभक धैर्य आब टूटि रहल छनि। ओ सभ जल्दीसँ -जल्दी जानकीसँ भेंट करए चाहैत छथि।”

“वाल्मीकि आश्रममे तँ जानकीक देह मात्र छनि। समस्त शक्तिसँ संपन्न हुनकर आत्मस्वरुप हम स्वयं अहाँक सामनेमे उपस्थित छी आ ताधरि रहब जाधरि जानकीक ससम्मान अयोध्या वापसी नहि होएत, जाधरि ओ अपन भावी संतानकेँ न्यायोचित अधिकार दिआ सकतीह। हमरसभक संघर्ष तँ अखन शुरूओ नहि भेल अछि। एहि लेल सभकेँ दीर्घकालीन योजना बना कए चलए पड़तनि। ई कोनो मामूली संग्राम नहि होएत।”

“अहाँक मार्गदर्शनमे हमसभ अपन लक्ष्य अबस्स प्राप्त करब।”

रातिमे जानकीधुजावाहिनी बहुत काल धरि भजन-कीर्तन करैत रहलाह। राजारामसँ जानकीक विरहसँ उत्पन्न कष्टक वर्णन करैत रहलाह। सभ गोटे बहुत भावुक छलाह। भावनामे निरंतर अश्रुपात भए रहल छलनि।ककरो कोनो चीजक सुधि-बुधि नहि रहि गेल छलनि। ओ सभ जल्दीसँ-जल्दी जानकीसँ भेंट करए चाहैत छलाह।शक्तिस्वरुपासँ गप्पक बाद मैथिलीपुत्र हुनका सभ लग पहुँचलाह । हुनका देखितहुँ ओ सभ एकस्वरमे पुछलखिन-

“ जानकीसँ भेंट कोना होएत? ओ कतए छथि? कोन हालमे छथि?”

“ओ ठीक छथि। अखन वाल्मीकि आश्रममे विश्राममे छथि। काल्हि भोरे अहाँसभसँ हुनका भेंट करेबाक ओरिआन कएल जाएत। ताबे अहाँसभ एतहि विश्राम करू।”

ओमहर एकांत पाबि चिरञ्जीवी शक्तिस्वरुपाकेँ पुछलखिन-

“हमरा की करबाक अछि?”

“अहाँ वाल्मीकि आश्रम चलि जाउ। ओतए जानकीक संगे रहबनि। हुनकर दुख-सुखमे संग देबनि। संगे मैथिलीपुत्र संगे सेहो संपर्क बनओने रहब जाहिसँ ओ सभ जानकी मुक्ति संग्रामकेँ सही स्वरुप दए सकथि।”

“वाल्मीकि आश्रमक नियम तँ बहुत कठोर अछि। ओतए हम जानकीक संगे कोना रहि सकबनि?हुनका कोना मदति कए सकबनि? हुनकर समाद अहाँसभ लग कोना पहुँचा सकबनि?”

“अहाँ व्यर्थ चिंता नहि करू। हम जे कहि रहल छी से बुझबाक प्रयास करू। अहाँ कोनो मामूली नहि छी। अहाँकेँ बहुत शक्ति अछि। अहाँ की ने कए सकैत छी। जानकीक देख-रेखमे अहाँकेँ केओ कोनो तरहेँ बिदति नहि कए सकत।अहाँ निश्चिन्त भए ओतए जाउ।”

२७

आइ भोरेसँ वाल्मीकि आश्रमक लगीचमे बहुत गहमा-गहमी अछि। शक्तिस्वरुपा ओजसँ भरल छथि। ओ लाल रंगक नुआ पहिरने छथि, माथपर पैघ-पैघ केस उड़िआ रहल छनि।हुनकर हाथमे अनेक प्रकारक अस्त्र-शस्त्र छनि। ओ अग्निपुंज समान लागि रहल छथि। लागि रहल अछि जेना कोनो क्षण हुनकामे सँ शक्तिक बिस्फोट होएत। दुनिआमे प्रलय भए जाएत। शक्तिस्वरुपा ओतए उपस्थित सैकड़ों जानकीधुजावाहिनीकेँ संबोधित कए रहल छथि। कहि रहल छथि अपन मोनक बात।

“अहाँसभ जानकीक चिंता नहि करू। ओ वाल्मीकि मुनिक आश्रममे ससम्मान रहि रहल छथि। मुदा बात हुनके टा नहि अछि। जाहि तरहेँ एकटा स्त्रीक अयोध्यामे अपमान भेल अछि से संपूर्ण मानवताक हेतु कलंक थिक। हुनका लोकनिकेँ ई बात नीकसँ बुझल रहनि जे जानकी गर्भवती छथि। हुनका संतान होनहारी छनि। ओहि समयमे हुनका पतिक

सानिध्यक काज छनि। हुनका भावात्मक समर्थनक काज छलनि जाहिसँ अयोध्याक भावी नरेशक छाती मजगूत होइतनि। मुदा भेल की? तरह-तरहक बहन्नासभ बना-बना कए हुनका अपन घरसँ निकालि देल गेलनि अछि। ओ तमसा नदीक कातमे कानैत रहि गेलीह,अहुरिआ कटैत रहि गेलीह,निहोरा करेत रहि गेलीह,मुदा लक्ष्मण हुनका ओही हालमे छोड़ि कए चलि जाइत रहलाह। धन्य कही वाल्मीकि मुनिकेँ,धन्यवाद अछि हुनकर आश्रमवासी लोकनिकेँ जे जानकीकेँ अपन संतान जकाँ अंगीकार केलनि अछि,हुनका आश्वस्त केलखिन अछि जे ओ कतहु आन ठाम नहि छथि। मुदा एहिसभक काजे कोन छलैक?एतेक हड़बड़ी कथीक छलैक?कम सँ कम संतानसभक जन्म तँ होमए दितथिन। तकर बाद देखल जइतैक। ई तँ घोर अनर्थ भेल अछि। अयोध्यामे एकसंगे कतेक अपराध कएल गेल अछि। हमरा लोकनि एही अन्यायक निवारण करबाक हेतु एहिठाम आएल छी। अहाँसभ सभ किछु बिसरि जाउ। बस अपन लक्ष्य दिस ध्यान करू।”

“हमसभ सभ तरहेँ अहाँसँ सहमत छी। मुदा हमसभ कहिआ धरि प्रतिकार करब से नहि बुझा रहल अछि।”

“अगुताएल काज ठीक नहि होइत छैक। अहाँसभ धैर्य राखब सीखू। जानकीकेँ जे भोगबाक छनि से भोगतीह।जे कष्ट लिखल छनि से हेतनि। मुदा हमसभ सही समयपर अपन काज करब। पहिने तकर तैयारी तँ कए ली।”

“नहि बुझि सकलहुँ। कहि नहि अहाँ गोल-मोल गप्प किएक कए रहल छी?”

“सभ किछुक समय होइत छैक। जानकीक अयोध्या वापसी हेतनि,हेबे करतनि,केओ तकरा रोकि नहि सकत। मुदा हमरासभकेँ जे कर्तव्य अछि से तँ पहिने करी।”

शक्तिस्वरुपाक अभिवादन करैत मैथिलीपुत्र उठैत छथि-

“सुनू सुनू हे मिथिलावासी ।अहाँ लोकनिक भावनाक अनुकुले काज होएत। जानकी बहुत थाकल रहथि। रातिभरिक विश्रामक बाद ओ आब स्वस्थचित्त छथि। शक्तिस्वरुपा हुनकर मोनक बात कहि चुकल छथि। ओ असलमे सदिखन हमरासभक संगे छथि। हमसभ एही जंगलमे डेरा देब आ एतए ताधरि रहब जा धरि जानकी फेरसँ अयोध्यामे ससम्मान स्थापित नहि भए जाइत छथि।”

“ठीक छैक।हमसभ सेहो अपन संकल्पपर अड़ल छी।”

“हमसभ गोटे वाल्मीकि आश्रमसँ दस कोस फटकी अपन डेरा राखब जाहिसँ आश्रमक गतिविधिमे कोनो दिक्कति नहि होइक । ओतहि सभ गोटेकेँ रहबाक व्यवस्था शक्तिस्वरुपा कए देलनि अछि।आगूक योजनाक बारेमे हमसभ ओतहि गप्प करब।”

“एक बेर जानकीकेँ देखि लितिअनि तँ संतोष भए जाइत। फेर अहाँ जेना जे कहबैक सएह कएल जाएत।”

“अहाँसभ शांत रहू। शक्तिस्वरुपा करतीह कोनो चमत्कार। अहाँसभ जल्दीए देखि सकबनि जानकीकेँ सदेह।”-मैथिलीपुत्र से बात बजले छलाह कि कनीके फटकी जानकी आश्रमवासी स्त्री लोकनिक संग आश्रमसँ बाहर निकलि रहल छलीह। ओ बहुत शांत लागि रहल छलीह। जेना कोनो अन्हड़क आगमनसँ पूर्वक संकेत होइक। हुनकर देहसँ जेना अग्निक ज्वाला निकलि रहल छलनि। हुनका एहि तरहेँ देखि जानकीधुजावाहिनी चकित भए गेलाह।सभ एक्के पैरपर ठाढ़ भए हुनकर वंदना करए लगलाह। पता नहि शक्तिस्वरुपा कोन चमत्कार केने छलीह जे ई दृश्य आश्रमवासी लोकनि नहि देखि रहल छलीह। मैथिलीपुत्र किछु बजितथि ताहिसँ पहिने जानकीधुजावाहिनी एकस्वरमे बाजि उठलाह-

“जय जानकी!जय जनकनंदिनी! हमसभ धन्य भेलहुँ। आब कोनो चिंता नहि। जानकीकेँ देखि हमरसभक आधा कष्ट बिला गेल।”

“आब अहाँसभ शिविरमे चलि जाउ।हमहूँ ओतहि आबि रहल छी। आगूक कार्यक्रमक बारेमे ओतहि चर्चा कएल जाएत।

२८

जानकीकेँ वाल्मीकि आश्रममे आश्रमवासी स्त्री लोकनिक संगे देखि जानकीधुजावाहिनी बहुत प्रसन्न भेल रहथि। हुनका सभक इच्छा रहनि जे हुनकासँ सद्यः संवाद करी,हुनका आग्रह करिअनि जे यदि कोनो कारणवश अखन अयोध्या वापस नहि जा सकैत छथि तँ ओ नैहरे चलथि। नैहर जेबाक अधिकार तँ बेटीकेँ सदिखन रहिते छैक। जानकीधुजावाहिनी सभ ई बात मैथिलीपुत्रक माध्यमसँ हुनका धरि पहुँचा देबाक आग्रह केलनि। ताहि बातपर मैथिलीपुत्र कहैत छथिन-

"अहाँसभ अगुताउ नहि। हमसभ एहिठाम जानकीक कष्ट निवारण लेल आएल छी । रहल बात अयोध्या जेबाक,से तँ ओ जेबे करतीह,मुदा भीखमंगनी जकाँ नहि जेतीह। ओ रानी छथि रानीए जकाँ अयोध्या जेतीह आ ओतए रहतीह।आब जखन ओ वाल्मीकि मुनिक शरणमे पहुँचि गेलीह अछि तखन उचित अछि जे किछु करएसँ पहिने हमरालोकनि हुनको परामर्श ली। निश्चित रूपसँ ओ हमरासभकेँ सही मार्गदर्शन करताह आ करबे करताह। ओ त्रिकालदर्शी छथि,सर्वज्ञानी छथि आ सभसँ ऊपर जानकीक आ राजा रामोक शुभचिंतक छथि।"

"तखन हमसभ की करू?केमहर जाउ? बिना जानकीकेँ मिथिला वापस कोन मुँहे जाएब? लोकसभ हँसत नहि?अहीं कहू।"

"अहाँसभक चिंता उचित अछि। मुदा ई बात बुझबा जरूरी अछि जे युद्ध ककरो लेल नीक नहि होइत अछि। परिणाम चाहे जे होइक,विजेता केओ होअए, एहिमे सभक निश्चित क्षति होइत अछि।फेर अयोध्याक संगे हमरा लोकनिक प्रेमक संबंध अछि। हमसभ तकर निर्वाह करैत अएलहुँ अछि। मुदा हुनको लोकनिकेँ अपन कर्तव्यक पालन करबाक चाहिअनि। ओहिमे कोताही भेल अछि। तकर प्रतिवाद हमसभ करब। अबस्स करब।अखन अहाँसभ शिविरमे चलू। ओतहि भविष्यक कार्ययोजनाक रूपरेखा तैयार कएल जाएत।"

"ठीक छैक।हमसभ उचित अवसरक प्रतीक्षा ओतहि करब।"

वाल्मीकि आश्रमसँ दस कोस फटकी बीच जंगलमे जानकीधुजावाहिनीक अड्डा तैयार कएल गेल। शक्तिवाहिनीक एक इसारापर ओहिठाम रहबाक लेल सभ आवश्यक समान उपलब्ध भए गेल। एहन जंगलमे एतेक ब्यवस्था भए जाएब बहुत आश्चर्यक बात छल। बाहरी लोककेँ किछु पता नहि रहैक जे ओतए की भए रहल अछि? एतेक लोकसभ ओहिठाम की करए आएल छथि? मुदा वाल्मीकि मुनिकेँ अपन योगबलसँ सभ किछु पता चलि गेल रहनि।मोने-मोन ओ बहुत प्रसन्न छलाह। एहि बातसँ पूर्णतः आश्वस्त छलाह जे जानकीक संग न्याय हेबे करतनि। हुनकर भावी संतानसभ पुरुषार्थी आ बीर हेताह। सभसँ आवश्यक छल जे जानकी स्वस्थ रहथु। हुनकर मनोदशा नीक रहनि जाहिसँ हुनकर भावी संतान मानसिक आ शारीरिक रूपसँ स्वस्थ होनि। तकर प्रयासमे आश्रममे सभ केओ दिन-राति लागल रहथि।

जंगलमे बनल जानकीधुजावाहिनीक अड्डाक चारूकात विशेष प्रकारक चहरदिबारी बनाओल गेल छल जाहि कारण भीतरमे घठित भए रहल कोनो घटना बाहरसँ नहि देखल जा सकैत छल। चहरदेबारी सेहो अदृश्य छल। ओकर भीतरेमे सभ किछुक ओरीआन कएल गेल छल। शक्तिवाहिनी समय-समयपर मैथिलीपुत्रसँ संपर्कमे रहथि जाहिसँ ओहिठाम रहि रहल सैकड़ों जानकीधुजावाहिनीकेँ कोनो दिक्कति नहि होनि। ओकरासभके नाना प्रकारक अस्त्र-शस्त्रक प्रशिक्षण देबाक ब्यवस्था सेहो कएल गेल छल। भोरे उठि-सुठि ओ सभ अपन काजमे लागि जाथि आ दिन-भरि किछु-ने-किछु होइते रहैत छल। सायं काल भजन-कीर्तन होइत छल।जानकीकेँ स्मरण कएल जाइत छल। संगे आगूक कार्यक्रमक चर्चा सेहो कएल जाइत छल। एहि तरहेँ जानकीधुजावाहिनी एकटा प्रशिक्षित आ अनुशासित संगठन बनि गेल छल जकर एकमात्र उद्येश्य जानकीक सम्मानक रक्षा करबाक छल। हुनका अयोध्यामे फेरसँ स्थापित करबाक छल।

वनदेबी आश्रमवासीसभक संगे लगपासक जंगल देखबाक लेल निकलल रहथि। चारूकातक मनोरम दृश्य देखि हुनकर मोन हल्लुक होइत छनि। संयोगसँ मौसम सेहो बहुत अनुकूल भए गेल छल। जंगल,पहाड़,नदीक कात आ चारू कात हरिअर कंचन गाछ-बिरिछ सभ मिलि कए अद्भुत आनन्द उत्पन्न कए रहल छल। आश्रमवासी स्त्री लोकनि वनदेबीकेँ आसपासक स्थान आ ओकर विशेषतासँ परिचित करा रहल छलाह। ओहिठाम शुलभ अनेक प्रकारक औषधीय जड़ी-बुटीसभक जानकारी दए रहल छलखिन। वनदेबी बहुत प्रसन्न छलीह। हुनका जंगलसँ आश्रम वापस जेबाक मोने नहि होनि। ओ बड़ी कालधरि नदीक कातमे बैसल रहि गेलीह। हुनकर संगीसभ सेहो लगेमे बैसि गेलथि। एहि तरहेँ बहुत समय बीति गेल। तखन आश्रमसँ शिष्यलोकनि हुनकासभकेँ बजबए आबि गेलखिन।

“जलखै तैयार छैक। अहाँसभ चलिऔक।”

वनदेबी आश्रमवासीलोकनिक संगे वापस आश्रम दिस बिदा भए गेलीह।

वयोबृद्ध वाल्मीकि मुनिक सानिध्यमे आश्रमवासी संस्कार संपन्न बनैत छलाह। हुनकर मार्गदर्शनमे निरंतर धर्मकार्यमे लागल रहैत छलाह। आश्रममे वनदेबीक आबि गेलाक बाद ओहिठामक हबे बदलि गेल। सभ केओ हुनकर सेवामे दिन-राति लागल रहैत छल। वाल्मीकि मुनि स्वयं नित्य प्रातः काल हुनकर दर्शन करैत छलाह,हुनका नमस्कार करैत छलाह। तकर बादे आश्रमक काज शुरू करैत छलाह।

वनदेबी!वनदेबी! कहि कए आश्रमवासी हुनका कतेको बेर बजबैत रहैत छलखिन।आश्रममे कोनो छोटसँ-पैघ काज होइत तँ वनदेबी ओहिठाम रहबे करतीह,बेसीकाल हुनकर रुचिक अनुसार आश्रमक गतिविधि निर्धारित कएल जाइत छल। एहि तरहेँ वनदेबी वाल्मीकि आश्रममे रहि कए बहुत आनन्दमे समय बितबैत छलीह। कखनो काल दुपहर रातिमे हुनकर निन्न टूटि जानि। तखन एकान्तमे हुनकर ध्यान बलात राजारामपर चलि जानि, अपन गर्भस्थ संतानसभपर चलि जानि। मोनेमे चिंता होमए लागनि-

“कहि नहि एकर की भविष्य हेतैक? ई जीबिओ सकत की नहि?हमरा लग तँ किछु साधन नहि अछि। एकर शिक्षा-दीक्षा कोना हेतैक?”

एकदिन एहिना पटिआपर पड़ल हुनकर आँखि लागि गेलनि।
वनदेबी सपनाइत रहैत छथि
अपन भावी संतानक लेल
जकर पूर्वज एहन प्रतापी
तकर संतान जन्मत जंगलमे
के करत ओकर छठिहार
के करत ओकर पालन-पोषण
शिक्षा-दीक्षाक नामपर
एहिठाम हम की करब ओरिआन
राज सिंहासनक बात छोड़ू
ओकरा तँ अपन पिताक दुलारो नहि भेटि सकतै
व्यर्थ अछि हमर जीनाइ
नहि,नहि

एना नहि सोची
वाल्मीकि मुनिक बातपर भरोसा करू
ओ छथि सर्वज्ञानी
देखि चुकल छथि दिव्यदृष्टिसँ सभ किछु
जे वनदेबीक संतान
होएताह यशस्वी
करताह राज रामे जकाँ
हुनकोसँ बेसी शक्तिसंपन्न
एही बोल-भरोसपर
हम सहि रहल छी
रामक वियोगसँ उत्पन्न असह्य कष्ट
अयोध्यासँ निर्वासित हेबाक अपमान
मोनमे अछि एकटा विश्वास
जे समय पलटी लेत
हमरा संग भए सकत न्याय
हमर संतान पाबि सकताह अपन अधिकार

वनदेबी सपनेमे देखैत छथि जे एक्के संगे दूटा संतानक जन्म होइत छनि। दुनू अनमन राजाराम सन छथि। वाल्मीकि मुनि ओहि संतानसभक शिक्षाक व्यवस्था करैत छथि। ओ सभ बेर-बेर अपन पितासँ भेंट करेबाक आग्रह करैत छथि।एहि बातसँ जानकी बहुत दुखी भए जाइत छथि। बच्चासभपर तमसाइत छथि।एतबेमे हुनकर निन्न टूटि जाइत छनि । ताबत भोर भए गेल छल। जानकी बाहर होइत छथि। कनीके फटकी वाल्मीकि मुनि ठाढ़ देखेलखिन। वाल्मीकि हुनकर मोनक बात बुझि गेलखिन। ओ कहैत छथिन-

“वनदेबी अहाँ व्यर्थ चिंता करैत रहैत छी। हम भविष्यमे घटित होमए बला सभ बात रामायणमे लिखि चुकल छी।सभ किछु ओहिना होएत। जे भावी थिक सएह होएत।”

“की हम ओ रामायण देखि सकैत छी।”

“सभ किछुक समय होइत छैक। अखन तकर उपयुक्त समय नहि आएल अछि। समय अएलापर सभ किछु ओहिना प्रकट होमए लागत जेना

कमलक पातसभ स्फुटित होइत अछि। अहाँकेँ प्रतीक्षा करबाक चाही।”-से कहि वाल्मीकि ओहुठामसँ बिदा भए गेलाह । वनदेबी बहुत प्रसन्न रहथि।वाल्मीकि मुनिक संदेश बहुत स्पष्ट छलनि। हुनकर कहबाक तात्पर्य छलनि जे वनदेबीक संतानक भविष्य उज्ज्वल हेतनि। एहि बातसँ कोनो माए प्रसन्न भए सकैत अछि। से ओ रहथि।

वनदेबीक मोनमे रहि-रहि कए अपन भविष्य,अपन संतानक भविष्य लए कए चिंता होइत रहैत छलनि। ओ कैक बेर रातिमे चेहा उठैत छलीह। हुनका एना डराइत देखि आश्रममे हुनका संगे रहैत स्त्री लोकनि हुनका घेरि कए बैसो जाइत छलखिन। नीक-नीक खिस्सासभ सुनबैत छलखिन। ईहो बुझबैत छलखिन जे हुनका बेसी चिंता नहि करबाक चाहिअनि । कारण तकर दुष्प्रभाव हुनकर भावी संतानपर पड़तनि। वनदेबीकेँ बुझा-सुजा कए सभ सुति जाइत छलीह। वनदेबी कैकबेर मातृत्वक संभावित सुखमे आनन्दित रहैत छलीह,कैक बेर चिंतामग्न भए जाइत छलीह।मुदा जखन कखनहु ओ जंगल दिस जइतथि,नदीक कातमे टहलितथि,तखन हुनकर मोन प्रफुल्लित भए जाइत छलनि। ओ नवऊर्जाक संगे आश्रम वापस वापस अबैत छलीह।

एहि तरहँ वाल्मीकि आश्रममे वनदेबीक समय सुख-दुखमे बितैत छलनि।ओना आश्रमवासी अपना भरि हुनकर सेवामे जान लगओने रहैत छलथि। मुदा गुड़क मारि धोकड़े जनैत अछि। रहि-रहि कए हुनकर ध्यान राजारामपर चलि जाइत छलनि। चाहिओ कए ओ एक्को क्षण लेल हुनका नहि बिसरि पाबथि।हुनकर मोन ई कदापि मानबाक लेल तैयार नहि रहनि जे राजाराम हुनका छोड़ि देथिन। मुदा सत्य तँ ओएह छल। ओ राज-पाटसँ फराक जंगल-झाड़मे जीवन बितेबाक लेल विवश छलीह। ई तँ संयोगे कही जे लक्ष्मण हुनका वाल्मीकि आश्रम लग छोड़लथि आ वाल्मीकि मुनि हुनका प्रतिष्ठापूर्वक अपन आश्रममे शरण देलनि। मुदा एतेक पैघ राजक रानीकेँ एहन दिन देखए पड़लनि सएह ने बड़का अन्याय भेल। कैक बेर वनदेबीक मोनमे होनि जे लक्ष्मण राजारामक आज्ञा किएक मानलथि?कम सँ कम हमरा पहिने कहि दितथि? एना गुप्त रूपसँ किएक अनलथि आ जंगलमे छोड़ि कए चलि गेलथि? यदि ओ हमरा पहिने कहि देने रहितथि तँ हम रामकेँ अबस्स पुछितिअनि-

“हे रघुकुल तिलक राजाराम !

अहाँसभ तँ अपन वचनक पक्का छलहुँ,वचनेक कारण चौदह वर्ष वनबासमे रहलहुँ,तखन हमरा देल गेल वचन किएक ने पालन कए सकलहुँ? अछि किछु उत्तर अपने लग?जखन बिआहक समयमे सपथ खेलहुँ जे हम दुनूगोटे संगे रहब,संगे सभ किछु करब,हमर सभक सुख-दुख एक रहत,तखन एना किएक केलहुँ? यदि राजाक कर्तव्य बाधा बनि गेल छल तखन छोड़ि दितहुँ राज,मुदा रखितहुँ हमरा अपना संगे। मुदा अहूँ लोकक संगे भसिआ गेलहुँ। जे लोक बाजल से भए गेल ब्रह्म बाक,हम भए गेलहुँ अयोध्यासँ निर्वासित।तखन रहिए की गेल?"

ई सभ सोचिते रहतथि कि दोसरे क्षण मोनमे अबितनि-

"शांत वनदेबी,शांत। अहाँक कोखिमे जे संतान अछि से सभ किछु बुझि रहल अछि। ओकरा बाहर अएबाक अवसर तँ दिऔक। ओ अहाँक दुख अबस्स दूर होएत।"

कैक राति इएहसब सोचैत ओ भोर कए देथि। कैक दिन गुम-सुम रहि जाथि। वाल्मीकि मुनिकेँ ई सभ पता लागनि। ओ तुरंत दौड़ल अबितथि,कहितथि-

"वनदेबी धैर्य राखू। अहाँक कल्याण अबस्स होएत।"

३०

चिरञ्जीवी निरंतर वनदेबीक सेवामे लागल रहथि। हुनकर अद्भुत सेवा भाव देखि ओ बहुत प्रभावित रहथि। हुनका कैकबेर पुछबो करथिन- "अहाँ एतेक मेहनति किएक कए रहल छी? अपनो ध्यान राखू।"

"हे वनदेबी!

हम तँ अहींक लेल एहिठाम आएल छी। अहाँक कष्टक निवारण होअए,अहाँक भावी संतान स्वस्थ आ सुखी रहथि सएह हमर मनोकामना अछि।"

"मुदा अहाँ छी के? अहाँकेँ एहिठाम के पठओलक?"

"वाल्मीकि आश्रममे हुनकर इच्छा आ आज्ञा बिना के रहि सकैत अछि?"एहिसँ बेसी ओ किछु नहि बाजथि। बस भोरसँ साँझ धरि वनदेबीक सेवामे लागल रहथि। जखन हुनका जाहि वस्तुक प्रयोजन होनि से आनि

देथि। वनदेबी हुनकर सेवासँ बहुत प्रसन्न रहथि। बेर-बेर हुनका आशीर्वाद देथि।

आश्रमवासी स्त्रीसभ आने दिन जेना ओहि दिन पूजा-पाठ कए वनदेबी लग आबि रहल छलीह कि चिरञ्जीवी रस्तेमे भेटि गेलखिन। हुनकासभकेँ देखितहि चिरञ्जीवी चिकरि उठलाह-

“जल्दी जाउ, वनदेबी बहुत कष्टमे बुझाइत छथि।”

“की भेलनि हुनका?”

“हमरा किछु नहि कहलनि,मुदा ओ बहुत परेसानी मे बुझेलथि।”

आश्रमवासी स्त्रीसभ जल्दीसँ वनदेबी लग पहुँचैत छथि। ओ प्रसवपीड़ासँ परेसान छलीह। जाबे ओ सभ किछु करितथि ताबे वनदेबी बेरा-बेरी दूटा संतानक जन्म देलनि। एक्के संगे दूटा बच्चाक जन्मसँ आश्रमवासीसभ बहुत प्रसन्न रहथि। वाल्मीकि मुनिकेँ तुरंत सूचना देल गेलनि। ओ कहैत छथिन-

“हम तँ जनिते रही जे आइ कुश आ लव नामक दूटा बालक वनदेबीकेँ जन्म लेथिन। अहाँसभ ओतहि जाउ आ हुनकर नीकसँ देख-रेख करू।”

वनदेबीकेँ जौआँ बच्चा जन्मलेलाक बाद समस्त वाल्मीकि आश्रममे हर्षक माहौल छल।आश्रमवासी स्त्रीसभ सोहर गाबि रहल छलीह। केओ लड्डू बाँटि रहल छलीह। वाल्मीकि स्वयं अपन रामायणक अगिला दृश्यकेँ भूतलपर स्पष्ट होइत देखि अतिशय प्रसन्न छलाह। ओ फटकीएसँ वनदेबी आ हुनकर दुनू संतानकेँ बेर-बेर आशीर्वाद दए रहल छलाह। ऊपर आकाशसँ देवतालोकनि से पुष्पवर्षा कए रहल छलाह। ओमहर अयोध्यामे आइ भोरेसँ राजारामक दहिना आँखि बेर-बेर फरकि रहल छनि।

“किछु शुभ जरूर होमए बला अछि।“

“हमर जीवनमे आब तकर उम्मीद बाँकी अछि की?” -ई प्रश्न स्वयं सँ ओ बेर-बेर पुछैत छलाह।

अपन कोरामे दुनू पुत्रकेँ देखि वनदेबीक प्रसन्नताकेँ तँ अंते नहि छलनि। ओ एकटक दुनूबच्चाकेँ देखि रहल छलीह। बेरा-बेरी दुनू बच्चाकेँ दूध पिआ रहल छलीह। हुनका लागि रहल छलनि जे एहि पृथ्वीक सभ सुख भेटि गेल। दुनू बालक अनमन राजाराम सन लागि रहल छल।

“राजाराम तँ अपन संतानसभकेँ देखिते बहुत प्रसन्न हेताह। सौंसे अयोध्यामे आनन्दक वर्षा होमए लागत। जकरा जे चाही से भेटतैक।मुदा हुनका पता कोना चलतनि?”-वनदेबी इएहसभ सोचैत रहैत छलीह। मुदा जखने बच्चासभपर ध्यान जानि सभ किछु बिसरा जानि।

जनमौटी बच्चाक लेल नव वस्त्र कीनबाक हेतु चिरञ्जीवी जा रहल छलाह कि मैथिलीपुत्र भेटि गेलखिन।

“की बात छैक? आइ बहुत प्रसन्न लागि रहल छी।”

“प्रसन्नताकेँ तँ बाते छैक।”

“की भेलैक?”

“कोन दुनिआँमे रहैत छी अपने? सौंसे आनन्द मंगल भए रहल अछि। आश्रममे रसनचौकी बाजि रहल अछि आ अहाँकेँ किछु बुझले नहि अछि?”

“कहबैक तखन ने बुझबैक।”

“वनदेबीकेँ दूटा पुत्रक जन्म भेलनि अछि।”

“बहुत सुखद समाचार। सभ गोटे स्वस्थ छथि ने?”

“आनन्द,आनन्द।”

“बहुत प्रसन्नताक बात कहलहुँ। बहुत दिनक बाद जानकीक जीवनमे किछु शुभ घटित भेलनि अछि। हमरो लोकनिक लेल ई बहुत प्रसन्नताक बात थिक।”

चिरञ्जीवी जल्दीमे छलाह, चलि जाइत रहलाह। एमहर मैथिलीपुत्र जानकीकेँ दूटा पुत्र जन्मक समाचार जानकीधुजावाहिनीकेँ शिविरमे जा कए देलनि। कहि नहि सकैत छी जे ओसभ एहि समाचार पाबि कए कतेक प्रसन्न भेलथि। तुरंत गीतनाद शुरू भए गेल।

वाल्मीकि आश्रममे बच्चासभक जन्मसँ छठिहार दिन धरि उत्सवक माहौल छल। वाल्मीकि मुनि बेर-बेर बाजथि-

“वनदेबीक दुनू संतान बहुत प्रतिभाशाली हेताह। ओ सभ इतिहास रचताह आ वनदेबीक प्रतिष्ठाकेँ फेरसँ अयोध्यामे स्थापित करबामे सफल हेताह।“

वनदेबीक जेठ पुत्रक नाम कुश आ छोटक नाम लव राखल गेल। वनदेबी भोरेसँ दुनू संतानक सुश्रुखामे लागि जाथि।हुनकासभकेँ दुग्धपान

कराबथि। हुनका संगे आश्रमवासी सेहो बच्चासभक सेवामे लागल रहथि। दुनू बच्चाक जन्मक बाद वनदेबीकेँ एकटा लक्ष्य भेटि गेल छलनि । ओ सभ किछु बिसरि अपनाकेँ ओहीमे लगा देलनि।

३१

वनदेबीकेँ जौंआ बच्चा जन्म लेलकनि। वाल्मीकि मुनिक आश्रममे बच्चासभक जन्मसँ छठिहार धरि उत्सव मनाओल गेल।बच्चासभक कुश आ लव नाम राखल गेल। सभ किछु भेल। मुदा ने अयोध्यासँ केओ आएल ने जनकपुरसँ । पता नहि राजारामकेँ बच्चासभक जन्मक सूचना भेटलनि कि नहि? जखन बच्चासभक जन्म भेल तखन शत्रुघ्न वाल्मीकि आश्रमेमे ठहरल रहथि। ओ रातिएमे बच्चासभकेँ देखबो केलनि। प्रातःकाल ओ वाल्मीकि आश्रमसँ लबण बध करबाक हेतु बिदा भए गेलाह।

वनदेबीकेँ रहि-रहि कए एहि बातक बहुत कचोट होनि। रामसन प्रतापी राजाक संतानक जन्म भेल होअए आ तकर उत्सव अयोध्यामे नहि होइ से कतहुसँ सही नहि कहल जा सकत। मुदा वनदेबी की करथि? हुनका तँ चारूकात अनेक प्रश्नचिन्हसभ ठाढ़ छलनि। पहिने तँ स्वयंकेँ निर्दोष सिद्ध करथि। फेर अपन संतानकेँ सही सिद्ध करथि। एही बातपर तँ हुनका अयोध्यासँ बाहर कए देल गेलनि। कोन-कोन कष्ट ने ओ सहलनि। कोखिमे संतान छलनि तखनो अपन घरसँ निर्वासित कएल गेलीह। जंगलमे वाल्मीकि आश्रममे रहि कहुना कए अपन जीवनक रक्षा केलीह। जाहिसँ हुनकर संतान बाँचि जाथि आ राजारामकेँ अपन उत्तराधिकारी भेटनि। आब जखन दुनू संतानक जन्म भए गेलनि अछि तखन ओ की करथि?कोना हुनकासभक रक्षा करथि,कोना शिक्षा-दीक्षाक जोगार करथि?

वाल्मीकि मुनि निरंतर वनदेबीक मनोबल बढ़बैत रहैत छलाह। वनदेबीकेँ चिंतित देखि कहबो करथिन-

“अहाँ बहुत चिंतित रहैत छी।एकर किछु फएदा नहि अछि। जे हेबाक अछि से हेबे करत। सभ किछु ओहिना भए रहल अछि जे हम रामायणमे लिखि चुकल छी। अहाँक संतान प्रतापी हेताह,अपन वंशक कीर्तिकेँ अबस्स आगू बढ़ेताह। मनुक्ख अपन भाग्य लिखा कए अबैत अछि। तेँ ओहि विषयसभपर बेसी घमरथन उचित नहि। फेर हम स्वयं एहि परिस्थितिसभकेँ देखि रहल छी। अहाँक मनोकामना अबस्स पूर्ण होएत

वनदेबी। तेँ हमर आराधना स्वीकार करू आ निश्चिन्त भए अपन संतानक पालन-पोषण करू। माएक लेल एहिसँ सुखकर की भए सकैत अछि?”

वनदेबी वाल्मीकि मुनिक आश्वासन सुनि कए प्रफुल्लित भए जाथि। अपन संतानसभक सुरक्षित भविष्यक बात सुनि मोनमे बहुत उसास होनि। ओ मोने-मोन सोचथि-

“ कोनो बात नहि। हमरा जे लिखल छल से भेल। कम सँ कम हमर संतानसभ तँ सुखी रहताह। वाल्मीकि मुनिक वचन व्यर्थ नहि जा सकैत अछि। तेँ हमरा सभ किछु बिसरि दुनू बच्चाक पालन-पोषणपर ध्यान देबाक चाही।“

ओमहर जानकीधुजावाहिनी शिविरमे जानकीक चर्चा निरंतर होइत रहैत छल। हुनकर दुनू संतानक जन्मक बाद ओ सभ कैकदिन भरि उत्सव मनओने रहथि। गीत-नाद गओने रहथि। मुदा ओ सभ एहिसभसँ संतुष्ट नहि छलाह। छठिहारक प्राते मैथिलीपुत्र हुनका लोकनिसँ भेंट करए गेल रहथिन। तखन ओ सभ अपन मोनक बात हुनका सामनेमे खोलि कए राखि देलथि-

“हमसभ जानकीक संतानक जन्मक उत्सव तँ मनओलहुँ,मुदा हुनका लोकनिक भविष्यक की हेतनि?की राजारामकेँ बच्चासभक जन्मक बारेमे जानकारी छनि कि नहि? यदि नहि छनि तकर जिम्मेबार के अछि?जखन हुनका बुझल छलनि जे जानकी गर्भिणी छथि, तखनहु हुनका जंगल पठा देलनि।केओ हुनका संगे नहि रहलनि। तकर बादो ओ कहिओ हुनकर खोज-खबरि नहि लेलनि। अयोध्यावासी की बजलाह,हुनका की पता लगलनि ताहिसँ हमरासभकेँ की लेना-देना?”

“जहिना अहाँ छी,तहिना हम छी। अयोध्यामे की भेल वा अखन की भए रहल अछि तकर हमरा कोनो जानकारी नहि अछि। ने हम हुनका लोकनिकेँ कोनो आदेश दए सकैत छिअनि।हमसभ मिथिलावासी छी,जानकीक शुभचिंतक छी,हुनके लेल अपन गाम-घर छोड़ि एहिठाम धरि आएल छी ।”

“यदि सएह हालति थिक तखन कथीक बाट ताकि रहल छी? हमसभ शीघ्र अयोध्या चली आ हुनका लोकनिकेँ सही रस्तापर आनी ।”

“एतेक अगुताउ नहि। एहि बातकेँ नहि बिसरू जे जानकी आब वाल्मीकि मुनिक आश्रममे छथि। ओ अपार शक्तिसंपन्न छथि। भूत,वर्तमान आ भविष्यक जानकारी रखने छथि। ओ रामायण लिखि चुकल छथि । जानकीकेँ वाल्मीकि आश्रम अएबासँ पहिने ओ अपन रामायणक रचना पूर्ण कए चुकल छथि। कहबाक माने जे हुनका भविष्यक घटनाक जनतब छनि। अस्तु, जरूरी थिक जे हमसभ हुनकासँ संपर्क करी। हुनकर मार्गदर्शनक बादे आगूक रस्ता निर्धारित करी।”

“बात तँ उचित कहि रहल छी अपने। मुदा जनक की कए रहल छथि? की हुनकर कर्तव्य नहि छनि जे जानकीकेँ मदति करथि?”

“से जानकी चाहथिन तखन ने?”

ई चर्चासभ भइए रहल छल कि शक्तिस्वरुपा ओतए प्रकट भए गेलथि।

३२

शक्तिस्वरुपाकेँ सामने अबितहि लागल जेना सैकड़ों बाटकेँ बिजली चमकि गेल होइक। हुनकर ओज फटकीएसँ देखा रहल छल।आत्मविश्वास आ शक्तिसँ परिपूर्ण ओ बाजि उठलीह-

“अहाँसभ जानकीकेँ जनैत छिअनि। हुनकर शक्तिसँ पूर्ण परिचित छी। अहाँसभकेँ ई बात बहुत नीकसँ बुझल अछि जे जानकी जे चाहतीह से कए लेतीह। यदि चाहितथि जे अयोध्येमे रही तँ हुनका के मना कए दैत?के हुनकर विरुद्ध जाइत? मुदा ओ सभ किछु सहि रहल छथि?सोचियौक किएक?अपन दुनू संतानक लेल,अपन आत्मसम्मानक लेल।अहाँ शक्तिसँ एहि दुनिआपर राज तँ कए सकैत छी,मुदा ककरो हृदयपर राज नहि कए सकैत छी।जानकी अयोध्यामे रहथु कि नहि ,मुदा ओ अखनहु राजारामक हृदयपर राज कए रहल छथि। जानकीकेँ जंगल पठा राजारामक की हाल छनि?की ओ सुखी छथि?की ओ दोसर कनिआँ ताकि लेने छथि?की हुनकर मोनमे केओ आर बसि रहल छनि? नहि,नहि,नहि।तखन तँ ई बुझबाक काज अछि जे जानकीक असल शत्रु केओ आर छथि। ओ के छथि? पहिने तकर पहिचान होअए,तखने ने हमसभ हुनका परास्त करबाक बात सोचि सकब।”

"शक्तिस्वरुपा!

हमसभ अहाँक बातसँ अभिभूत छी। हमसभ कहाँ कहि रहल छी जे राजारामकेँ जानकीसँ सिनेह नहि छलनि कि नहि छनि। समस्या तँ ई अछि जे राजारामक जानकीसँ एतेक अथाह प्रेम रहितहुँ ओ हुनकर रक्षा नहि कए सकलाह। हुनका अपना संगे नहि राखि सकलाह। आइ जे कष्ट जानकी भोगि रहल छथि से किएक?एकर कोन औचित्य छल?ओ राजारामक राजमहलमे अपन संतानसभक संग निचेन रहितथि। राजाराम अपन राज-काज करितथि। अपन परिवारक उचित देख-रेख करबो तँ हुनके कर्तव्य छलनि। यदि परिस्थिति एहने भए गेल जे ओ हुनका संग राखि राजकाज नहि कए सकैत छलाह,तखन तँ हुनका जानकीकेँ संग देबाक चाहैक छलनि।छोड़ि दितथि राजाक पद। इएह अन्याय ओ केलनि जाहि कारण आइ जानकी रने-बने बऔ रहल छथि।सभ किछु अछैतो बेलल्ल भेल छथि।"

"खबरदार! जे बजलहुँ से बजलहुँ। जानकी कखनहु बेलल्ल नहि छथि, ओ सर्वशक्तिमान छथि।एक क्षणमे संसारक विनाश कए सकैत छथि। इतिहास बताओत जे जानकी एहि दुखद परिस्थितिकेँ केना आ किएक सहलथि?केना हुनकर दुनू तेजस्वी संतान अपन शौर्यसँ जानकीक सम्मानकेँ पुनर्स्थापित केलथि।"

"हमहूसभ तँ ओही लेल परेसान छी। आब अहीं कहू जे वर्तमान परिस्थितिमे हमसभ की करू?"

"युद्ध कोनो समस्याक समाधान नहि अछि। युद्धमे विजेता आ पराजित,दुनू पक्षकेँ क्षति निश्चित अछि। फेर अयोध्या होअए कि मिथिला,समाजमे मतान्तर सभ ठाम अछि। नीक-बेजाए लोक सभ ठाम अछि। समाजमे बहुत तरहक विकृतिक प्रसार भए गेल अछि। परिणामतः नीको लोककेँ परेसानी होइत छैक। घुन संगे सातुओ पिसाइत अछि। असल युद्ध तँ लोकक मोनमे लड़ल जाइत अछि। यदि मोनकेँ शुद्ध कएल जाए,विचार सात्विक होअए तँ बहुत रास समस्या हेबे नहि करत आ यदि किछु बात भइए जाएत तँ ओकर समाधानो निकलबे करत।

अखन समस्या जानकीकेँ भेलनि अछि। काल्हि जा कए अनको भए सकैत छैक। अस्तु,जरूरी अछि जे लोकक संस्कार बदलैक,सोचबाक

तरीका बदलैक। तखने जा कए न्याय भए सकैत अछि। हमर अपेक्षा रहत जे जानकीधुजा वाहिनी वाल्मीकि आश्रमक लगीच रहि कए एहि काजमे नीकसँ प्रशिक्षित होथि आ समाजमे सद्विचारकेँ विकीर्ण करथि। हुनकर एहि प्रयासक जुग-जुग धरि मोन राखल जाएत । रहल जानकीक बात तँ ई नीकसँ बुझि लिअ जे वाल्मीकि मुनि स्वयं एकर चिंता कए रहल छथि। राजारामक जीवनमे भविष्यमे की होएत से ओ लिखि चुकल छथि। जखन बीज बाओग कएल गेल अछि तँ फसिल हेबे करत। उचित समयक प्रतीक्षा कएल जाए।

अहाँसभ अपन प्रयासमे धैर्यपूर्वक लागल रहू। कखनहु उदास नहि होउ। लव-कुशकेँ बढ़ए दिअनु। अहाँसभक मनोकामना अबस्स पूर्ण होएत।”-एतेक बाजि शक्तिस्वरुपा लुप्त भए गेलीह। मैथिलीपुत्र सहित जानकीधुजावाहिनीक ध्यान अचानक वाल्मीकि आश्रमसँ आबि रहल मधुर संगीतपर चलि गेलनि।

वाल्मीकि आश्रममे भोर-साँझमे संकीर्तन होइत छल। जहिआसँ लव-कुशक जन्म भेलनि ,आश्रमक माहौल आनन्दमय रहैत छल। समस्त आश्रमवासी दिन-राति वनदेबी आ हुनकर दुनू संतानक सेवामे लागल रहैत छलाह। वाल्मीकि मुनि दैनिक पूजा-पाठक बाद स्वलिखित रामायणक गायन सुनैत छलाह। आश्रमवासी लोकनि ओकर गायनमे प्रबीण भए गेल रहथि।क्रमशः लव-कुश पैघ होइत गेलाह। जेना-जेना ओ सभ बढ़थि तेना-तेना हुनकरसभक शिक्षा-दीक्षाक प्रति वाल्मीकि मुनि सजग होइत गेलाह। आश्रमवासी बहुत छगुन्तामे छलाह जे ई बालकसभ एतेक जल्दी केना सभ किछु सिखने जा रहल छथि। नित्य नित्य सायंकालक वाल्मीकि लिखित रामायणक सस्वर गायन होइत छल।लव-कुश नियमित तकर अभ्यास करैत छलाह।हुनका लोकनिकेँ एतेक नीक रामायण गायन करैत देखि वनदेबीक प्रसन्नताक अंते नहि छल।

“जुग-जुग जीबथु लव-कुश। हमर सम्मानक रक्षा ओ सभ कए सकताह एहिमे कोनो सक नहि।”-वनदेबी मोने-मोन सोचथि।

वाल्मीकि आश्रमसँ दस कोस फटकी बनल अड्डामे जानकीधुजावाहिनी अपन संघर्षमे लागल रहैत छलाह। बीच-बीचमे शक्तिस्वरुपा हुनका लोकनिक मनोबल बढ़बैत रहैत छलखिन। जखन ओ सामने आबि जइतथि तखन के उदास रहि सकैत छल? सभ गोटेमे शक्तिक

अपार संचार होइत छल।सभ फेरसँ उत्साहित भए जाइत छल।जाबे जानकी सुखी नहि हेतीह,अपन राजधानीमे फेरसँ ससम्मान वापस नहि जेतीह ताबे ओ सभ निचेन कोना हेताह?ओ सभ सभ तरहेँ तैयार रहथि। बस आदेशक काज छल। देखा चाही ओ समय कहिआ अबैत अछि,अबितो अछि कि नहि।

समय-समयपर जानकीधुजावाहिनीक सदस्यसभ जरूरी काजसँ मिथिला जाइत रहैत छलाह। ओहिठामक हाल-चाल लैत रहैत छलाह। यदि ओ सभ ओमहर जइतथि तँ जनकपुर अबस्से जइतथि,जानकीधाम सेहो जेबे करितथि। ओहिठामक लोकक जानकीक जिज्ञासा देखि ओ सभ चकित भए जाइत छलाह।

"एतेक दिन बीति गेल। मुदा अखनहु मिथिलावासी जानकीकेँ नहि बिसरि सकलाह।"

33

जानकीक वर्तमान परिस्थितिसँ जनक नीकसँ परिचित छलाह। परंतु ओ किछु कए नहि सकलाह। जखन रामकेँ वनबास भेलनि तखन तँ ओ सेना सहित चित्रकुट धरि चलि गेल रहथि। मुदा एहि बेर जखन जानकीकेँ वनबास भेलनि तँ ओ मूकदर्शक बनल रहि गेलाह। साइत ओ सोचने हेताह जे राजाराम स्वयं जानकीकेँ हुनका लग पठा सकैत छलाह,किंवा जानकी अपने नैहर आबि सकैत छलीह। मुदा से सभ किछु नहि भेल। ने राजाराम जानकीकेँ नैहर पठओलखिन ,ने जानकी स्वयं ताहि लेल किछु प्रयास केलथि।असलमे ओ मिथिलाक कन्या छलीह जतए परंपरा रहल अछि जे विवाहित बेटी एक बेर सासुर गेल तँ गेल। सासुरे ओकर सभ किछु भए जाइत छलैक। जानकीधुजावाहिनीक सदस्यसभ जखन कखनहु अपन गाम घर लौटथि तँ जानकीक समाद सेहो अपना संगे लेने जाथि। लोकसभ बहुत उत्सुकतासँ जानकीक हाल-चाल पुछनि। एहि तरहेँ मिथिलामे घर-घर सभकेँ पता चलि गेल रहैक जे जानकीकेँ जौआँ पुत्र जन्म लेलकनि अछि आ ओ सभ स्वस्थ छथि आ वाल्मीकि आश्रममे मे शिक्षा प्राप्त कए रहल अछि।

लोक तँ लोके होइत अछि चाहे अयोध्याक होइक वा मिथिलाक। गाहे-बगाहे ओ सभ आपसमे चर्च करबे करए-“सएह कहू। हे राम एहन भए गेलाह जे ककरो कहलापर जानकीकेँ घरसँ निकालि देलनि ,परंतु जनक तँ हुनकर पिता छलखिन,सभ तरहेँ संपन्न छलखिन। ओ किएक ने हुनका अपना संगे राखि लेलखिन।”

“राखि कोना लितथिन। हमरा तँ केओ कहलक जे जनक एहि लेल बहुत प्रयास केलथि,अपन दूत वाल्मीकि आश्रमोमे पठओलनि। मुदा जानकी अड़ि गेलखिन। कोनो हालतिमे नैहर जेबाक लेल तैयार नहि भेलखिन।”

“से अहाँ कोना जनैत छी?”

“एहिसभ बातक की प्रमाण देल जा सकैत अछि। जनक कोनो मामूली आदमी तँ छथि नहि। एहिठामक राजा थिकाह,प्रकांड विद्वान थिकाह। ओ यदि किछु केनहु हेताह तँ मर्यादापूर्वके । लोककेँ ढोल बजा कए की कहितथिन?”

“से जे बात होइक,मुदा जानकी संगे तँ भेलनि अन्याये। ने राजाराम सन प्रतापी पति काज देलखिन ,ने राजा जनक सन पिता। भए सकैत अछि जे ओहि समयमे राजा सभक छिज्जा एहने रहल होएत।”

“राजाराम चाहे जे करथु,राजा जनकक विचार जे रहल होनि,मुदा हमसभ जानकीकेँ अपन घरमे रखबाक लेल तैयार छी। मिथिलाक सैकड़ों घर हुनकर अपन घर छनि।ओ निःसंकोच आबथु, हमरासभकेँ जुड़ाबथु।”

“जानकीधुजावाहिनी गेले अछि। मैथिलीपुत्र हुनकासभक नायक छथि। हुनकर सभक इएह संकल्प छनि। देखा चाही जे ओ सभ कहिआ धरि अपन लक्ष्यमे सफल होइत छथि।”

एहि तरहेँ जानकी प्रसंगक मिथिलावासीसभ आपसमे चर्च करैत रहैत छलाह।

ओमहर वाल्मीकि आश्रममे जानकी लव-कुश संगे रमि गेलथि। दुनू बच्चाकेँ पालन-पोषणमे अपन समस्त शक्तिकेँ लगा देने रहथि। मुदा कैक बेर दुपहर रातिमे हुनकर निन्न टूटि जानि। ओतेक रातिमे केओ आर हुनका लग तँ छल नहि जकरा संगे अपन दुख-सुख बँटितथि। ओ अपन दुनू संतानकेँ निहारितथि,किछि-किछु बड़बड़इतथि-

राजाराम भेलथि केहन कठोर

जे अपन संतानक जन्मो पर
उत्सव नहि मनाओलाह
नहि देखलनि जनमौटी बच्चाक मुँह
कहू तँ ओकरसभक कोन दोष छल
ओ सभ तँ राजकुलक संतान अछि
अयोध्याक उत्तराधिकारी अछि
आइ समस्त अयोध्यामे बजैत रसनचौकी
घर-घर होइत नाच-गान
मुदा किछु नहि भेल।
केओ पुछारी नहि केलक
हमर नैहरसँ जरूर आएल समाद
आबि जाउ हमर दुलारी बेटी
रहू हमरे राजमे
कोनो कमी नहि होएत
लव-कुश रहताह राजा जकाँ
मुदा हमरे साहस नहि भेल
मिथिलाक लोकक मुँह कहिआ धरि बंद रहतनि
की पता ?
आइ ने काल्हि
ओहोसभ अलापथि ओएह राग
ओ तँ आओर अपमानजनक होएत
एहिसभसँ बहुत नीक अछि
वाल्मीकि आश्रम
जतए नहि अछि केओ अपन
बेसक हम एहिठाम अपरिचित छी
वनदेबी कहाइत छी
मुदा हम एतए सम्मानित छी
वाल्मीकि स्वयं रखै छथि आदर भाव
नित्य करैत छथि प्रणाम
तखने करैत छथि पूजा-पाठ

लव-कुश सेहो पाबि रहल छथि
उत्तम संस्कार
हुनके सानिध्यमे
समय-समयक बात छैक
हमरो दिन पलटतै
लव-कुश अबस्स प्राप्त करताह
अपन जन्मसिद्ध अधिकार
जेना सिंघक संतान
ककरो दयापर नहि
अपितु, अपन पुरषार्थसँ छिनि लैत अछि
अपन अधिकार
आ करैत अछि राज
तहिना लव-कुश जरूर बनताह
सामर्थय संपन्न
आर अंत होएत हमर यंत्रणाक
हमहूँ जीबि सकब
गरिमामय जीवन
अपन समाजमे।

एहि तरहेँ जानकीकेँ कैक राति टकटकी लागि जानि। ओ ओछाओनपर एहि करोटसँ ओहि करोट करैत रहि जाथि,हारि कए कुर्सीपर बैसि जाथि,दुनू संतानकेँ देखैत भोर कए लेथि।

३४

अपन दुनू संतानक प्रतिभा आ तेजस्विता देखि जानकीक प्रसन्नताक अंते नहि छल। कोना भोर होइक साँझ भए जाइक से ओ नहि बुझि नहि पाबथि। राजाराम द्वारा लंका विजयक बाद ओ किछु दिन सुखसँ बितओलीह।लगलनि जे ओ सचमुचकेँ राजपरिवारमे बिआहल गेल छथि। मुदा ओ समय बेसी दिन नहि ठहरि सकल। जानकी फेर दुखमय जीवन जेबाक लेल विवश भए गेलथि। मुदा अधलाह संगे किछु-ने-किछु नीको नुकाएल रहिते छैक। सएह भेलनि हुनका संगे वाल्मीकि आश्रममे। एक तँ वाल्मीकि मुनि दोसर पिता भए ठाढ़ भए गेलखिन। ओ शुरूएमे अपन

योगबलसँ हुनका नीकसँ चिन्हि गेल रहथिन,बुझि गेल रहथिन जे जानकी सभ तरहेँ निर्दोष छथि,हुनका अनेरे अयोध्यावासीसभ परेसान केलकनि अछि । यद्यपि राजाराम सेहो ई बात जनैत छलाह।

दू-दूटा संतानक संग जानकी आश्रममे समय बिता रहल छथि। हुनकर संतानसभ अपन-अपन प्रतिभासँ हुनका आनन्दित केने रहैत छनि। जे किछु वाल्मीकि मुनि सिखबैत छथिन से ओ सभ तुरंत सिखि लैत छथि।नान्हिटा बच्चासभ बहुत तेजीसँ शक्तिसंपन्न भेल जा रहल छल,ताहि बातसँ जानकीक करेजा मजगूत भेल जा रहल छलनि। कोनो माएकेँ एहन संतानपर गर्व हेबे करितैक,हेबेक चाही।

जानकी भोरे उठितथि। दुनू बच्चाकेँ पराती सुनबितथि। हुनका सभकेँ नीक-नीक भजन सभ सुनबितथि। तकर बाद स्नान कए दुनू बच्चा वाल्मीकि मुनि लग पठा दितथि। ओहिठाम अनेक प्रकारक शास्त्र आ शस्त्रक शिक्षा वाल्मीकि मुनि हुनकासभकेँ देथि। ओहिठामसँ थाकल-झमारल लव-कुश जानकी लग अबितथि। जानकी अपना हाथे हुनकासभकेँ भोजन करबितथि। फेर दुनू बच्चा आपसमे खेलैतथि। बीच-बीचमे जानकी संगे किछु-किछु चौलो करितथि।

जेना-जेना ओ सभ छेटगर होइत गेलाह,तेना-तेना हुनकासभकेँ अपन पिताक प्रति जिज्ञासा बढ़ैत गेलनि। असलमे आश्रममे हुनकालोकनिक संगे पढ़ि रहल अन्य विद्यार्थीसभ अपन परिचयमे पिताक नाम लेथि,मुदा जखन लव-कुशक बेर अबैत तखन ओ सभ चुप रहि जइतथि।

“हमसभ वाल्मीकि मुनिक शिष्य छी,वनदेबीक संतान छी। इएह थिक हमर परिचय।“- ओ सभ ई बात बेर-बेर दोहरबितथि।

मुदा मोनमे कचोट तँ भइए जानि। आश्चर्य होनि जे माता हमरासभकेँ पिताक परिचय किएक नहि कहैत छथि,किएक ने हमरासभकेँ अपन परिवारक बारेमे बताओल जाइत अछि? एहन कोनो अवसर भेलापर जानकी एतबे कहितथिन-

“अहाँसभकेँ पिता अबस्स भेटताह। पहिने अपन शिक्षा तँ पूर्ण कए लिअ।”

जानकीक बात मानि लव-कुश अपन काजमे लागि जाथि। मुदा समयक संग हुनकर सभक जिज्ञासा बढ़िते गेलनि। आखिर एकिदन ओ सभ वाल्मीकि मुनिसँ पुछिए देलखिन-

"गुरुजी एकटा प्रश्न पुछू।"

"की?"

"आश्रमवासी सभ शिष्यसभ अपन-अपन परिचयमे पिताक नाम बताबैत छथि। मुदा हमदुनू भाइ किछु नहि कहि पबैत छी।"

"अहाँ सभ हमर लिखल रामायणक नियमित गायन करैत रहू। अहाँसभक प्रश्नक उत्तर भेटि जाएत।"

"जे आज्ञा गुरुवर!"

तकर बाद लव-कुश भोर साँझ वाल्मीकि रचित रामायणक नियमित गायन करए लगलाह। हुनकर सभक रामायण गायन अद्भुत छल। जे सुनैत से सुनिते रहि जाइत।लगपासमे लोकसभक मेला लागि जाइत। वाल्मीकि स्वयं सभ किछु छोड़ि हुनकरसभक रामायण गायन सुनैत रहितथि। एहिमे हुनका अपन प्रयासक सफलता देखाइत छलनि। जानकीकक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल।

जानकीक मार्गदर्शनमे लव-कुश उत्तम शिक्षा प्राप्त कए रहल छलाह। नीकसँ नीक संस्कार हुनका प्राप्त भए रहल छलनि। जानकी हुनका लोकनिक आत्मसम्मानकेँ सदति जगओने रहबाक प्रेरणा दैत रहैत छलीह। लव-कुश शक्ति संपन्न होथि,आत्मनिर्भर होथि, ताहि लेल जानकी दिन-राति तत्पर रहैत छलीह। निस्सन्देह ओ सभ बच्चा छलाह मुदा हुनकरसभक उपलब्धि अतुलनीय छलनि।दुनू बच्चा ओजसँ भरल छलाह। वाल्मीकि रचित रामायणकेँ ओ सभ कंठाग्र कए चुकल छलाह। एहि तरहेँ जानकीक जीवन वाल्मीकि आश्रममे बहुत नीकसँ कटि रहल छलनि। जेना-जेना लव-कुश पैघ होइत गेलाह,तेना-तेना हुनकर आनन्द बढ़ैत गेलनि। आब हुनका कोनो बातक चिंता नहि होनि।

एकदिन शिविरमे जानकीधुजावाहिनी आपसमे चर्चा कए रहल छलाह कि शक्तिस्वरुपा मैथिलीपुत्रकेँ बजओलखिन।

"किछु सुनि रहल छिऐक?"

"हँ,हँ केओ बहुत मधुर संगीत गाबि रहल अछि।"

“ओ केओ आर नहि अछि। जानकीक संतान लव-कुश छथि। ओ सभ वाल्मीकि मुनिक रामायण गाबि रहल छथि।”

“ई तँ बहुत आनन्दक बात अछि।”

“एकदिन हुनकासभक कार्यक्रम अपन शिविरोमे राखल जाए।”

“सही विचार अछि। आखिर हमहूँसभ तँ हुनकेसभक प्रतीक्षामे छी।”

“बढ़िआँ होएत जे चिरञ्जीवीकेँ एहि लेल संपर्क कएल जाए।”

“अबस्स।”

३५

जानकीधुजावाहिनी अपन प्रतिज्ञापर अड़ल छल।मैथिलीपुत्र निरंतर हुनका लोकनिक मार्गदर्शन करथि। बीच-बीचमे शक्तिस्वरुपा सेहो ओतए आबथि । हुनका अबितहि जानकीधुजावाहिनीमे प्रबल शक्तिसंचार भए जाइत छल। ओ सभ उत्साहमे किछु करबाक लेल उत्तेजित भए जाइत छलाह। ओ सभ भावुक भए जाइत छलाह-

कखनो-कखनो जानकीक मोनमे
उठै छनि लहरि
होइत छनि जे करी विद्रोह
अन्याय सहबोक होइत छैक सीमान
एक बेर दू बेर
नहि सहल जा सकैत अछि
बेर-बेर पक्षपातपूर्ण व्यवहार
केओ कहाँ कहलकनि रामकेँ
जे ओ देथि अपन निष्ठाक प्रमाण
बेसक जानकी रहलीह वनबास
मोन मे जे भेलनि
से करैत गेलाह
सोनाक जानकी गढ़ि लेलनि
अश्वमेध यज्ञ करबाक छलनि

जाहिसँ बनि सकताह महाप्रतापी राजा
हद भए गेल
केहन छल बेदर्द अयोध्याक लोक-वेद
केओ तँ कहितनि
जखन जानकी जीवित छथिहे
हुनका मानिते छिअनि अर्धाङ्गिनी
तखन ई की कए रहल छी?
किएक जीवित जानकीकेँ छोड़ि
मुरुतकेँ पुजि रहल छी?
कहू ई कोन बात भेलैक
ओ मुरुत ने बाजि सकैत अछि
ने कानि सकैत अछि
नहि कहि सकैत अछि
अपन मोनक बात
ने अहाँक संग
बाँटि सकैत अछि सुख-दुख
तथापि ओ पसिंद अछि
सद्यः जानकी नहि चाही
हुनका देने छी वनबास
से किएक?
मुदा अहाँ राजा छी
पुरुष छी
के टोकारा देत?
एकतरफा जानकी सहथु सभटा अन्याय
यौ पाहुन!
ई मिथिला छै
हमसभ तँ अहाँक
आदर करबाक लेल
प्रतिवद्ध छी
अपन संस्कारसँ
परंपरासँ बान्हल छी

मुदा नीक जकाँ सुनि लिअ
आब कोनो जानकी
नहि देतीह फेरसँ अग्निपरीक्षा
नहि सहतीह अन्याय एकतरफा
हे मिथिलावासी उठू
जानकीक कष्ट हरबाक लेल
हुनकर प्रतिष्ठाक लेल
कतेक दिन मौन रहब
आब बहुत भए गेल
किछु करहि पड़त
जाहिसँ बाँचि सकत
जानकीक आत्मसम्मान

तखन मैथिलीपुत्र हुनका सभक भाव बुझि कहलखिन-

"अहाँसभ जानकीक सिनेहमे अपन सभ किछु त्यागि एहिठाम धरि पहुँचि गेल छी। ई कोनो मामूली बात नहि अछि । मुदा सभ किछुक समय होइत छैक। अहाँसभ धैर्य बनओने रहू। जानकीक विजय अबस्स हेतनि हेबे करतनि।"

हुनकर बात सुनितहि केओ बाजल-

"असलमे राम केबो केलनि बहुत अन्याय । अन्याय कोनो जानकीएटासँ भेलनि से बात नहि छैक। ई तँ समस्त मिथिलाक अपमान भेल,मिथिलाक संस्कृतिक अपमान भेल।एहन तँ कहिओ नहि सुनल गेल जे अछैत पतिकेँ ओकर स्त्री एकांतबास लेल विवश कएल जाए सेहो ओकरे द्वारा। ई तँ हद भए गेल। जानकीकेँ कम सँ कम संतान हेबा धरि तँ मोहलति देबेक चाहैत छलनि। कोनो मान्यता मनुष्यतासँ ऊपर नहि भए सकैत अछि। हमसभ पहिने मनुक्ख छी तखन किछु आर। मुदा से ने राम बुझलनि ने अयोध्यावासी। जकरा जे फुरेलनि से बजैत रहलाह। जे मोन भेलनि से करैत रहलाह।"

उपरोक्त कथनकेँ जानकीधुजावाहिनी कस्वरसँ समर्थन केलनि।

हुनकालोकनिकेँ उत्तेजित देखि मैथिलीपुत्र कहैत छथि –

"शांत होइत जाउ। देखिऔ के आबि रहल छथि।"

सामनेसँ वाल्मीकि मुनि जानकी,हुनकर दुनू संतान लव-कुश आ चिरञ्जीवी आबि रहल छथि। वाल्मीकि मुनिकेँ संगे जानकीकेँ सद्यः देखि जानकीधुजावाहिनी अत्यन्त प्रफुल्लित रहथि। जानकी लव-कुशक आंगुर पकड़ने बीचमे चलि रहल छथि।ओसभ एकस्वरसँ बाजि उठलथि-

"जानकीक जय होअए!

लव-कुश अमर रहथु!

अमर रहथु वाल्मीकि मुनि!"

वाल्मीकि मुनि इसारासँ हुनका लोकनिक अभिवादनक उत्तर दैत छथि।जानकीक प्रसन्नताक तँ अंते नहि अछि। ओ पुछैत छथिन-

"ई सभ के छथि? एहि जंगलमे ई सभ की कए रहल छथि?"

"माते! ई सभ अहींक बंधु छथि। अहाँक कष्टक समाचार सुनितहि मिथिलासँ सभ किछु छोड़ि एहिठाम धरि आबि गेल छथि। मैथिलीपुत्र हिनकर सभक नायक छथि। ई सभ अहाँक समाचार सुनि अहाँक जन्मस्थान जानकीधाममे उपस्थित भेल रहथि ओतहि संकल्प केलनि जे अयोध्या जेताह आ अहाँकेँ वापस नैहर लेने अएताह। मुदा नियतिवश ई सभ एतए आबि गेलाह आ तखनसँ एतहि छथि।"- चिरञ्जीवी बजलाह।

"से किएक?"

"हिनकर सभक कहब छनि जे जाधरि अहाँ अयोध्यामे अपन राजपर नहि लौटब,जाधरि अहाँक सम्मान नहि वापस होएत,ताधरि सभ निचेन नहि हेताह। ।"

से सुनितहि जानकी जोरसँ अट्टहास केलनि। फेर बजैत छथि-

"अहाँसभ दिनेमे सूर्यकेँ डिबिआ देखाबए लेल आतुर छी। अहाँकेँ बुझबाक चाही जे हम अपन सम्मानक रक्षाक लेल स्वयं शक्तिसंपन्न छी। हमर दुनू संतान वाल्मीकि मुनिसँ उत्तम शिक्षा प्राप्त कए रहल छथि। ओ सभ निश्चित रूपसँ हमर स्वप्नकेँ साकार करताह। अपन जन्मसिद्ध अधिकारकेँ अबस्स प्राप्त करताह। हमरा आर चाही की?किछू नहि।हम तँ ओही दिनक प्रतीक्षामे जीबि रहल छी।"

जानकीकेँ एना बजैत देखि वाल्मीकि मुनि बजैत छथि-

"हे मिथिलावासी!

अहाँसभ धन्य छी। अहाँसभक जानकीक प्रति अनुराग देखि हम आह्लादित छी।हम तँ सभ किछु पहिने लिखि चुकल छी। लव-कुश ओहि

रामायणकेँ सस्वर गाएब सिखि चुकल छथि। जल्दीए ओ एहि मधुर संगीतक माध्यमसँ जानकीक बात जन-जन धरि पहुँचेबामे सफल हेताह। ई युद्ध अस्त्रसँ नहि शास्त्रसँ जितल जाएत। एहिमे ककरो कनीको सक नहि हेबाक चाही जे जानकी हुनकर दुनू संतान राजारामक विचारमे परिवर्तन करबामे सक्षम हेताह।हुनकर विजय हेबे करतनि।"

एतबा बाजि वाल्मीकि मुनि ओहिठामसँ प्रस्थान कए गेलाह।हुनका पाछू लागल जानकी,लव-कुश आ चिरञ्जीवी सेहो चलि गेलाह।

३६

ओहिदिन जंगलमे जानकीधुजावाहिनीक उत्साह देखि जानकी अचंभित रहथि। हुनकर नैहरक लोकक हुनका प्रतिए सिनेह देखि बहुत प्रसन्नता भेलनि । धन्य छथि मिथिला ,धन्य अछि ओकर संस्कृति।

जानकी अपन मोनोभाव चिरञ्जीवीकेँ कहलखिन-

"हमरा एहि बातक बहुत प्रसन्नता अछि जे हमर नैहरक सैकड़ों युवक हमरा लेल अपन गाम-घर छोड़ि कए एहिठाम धरि आबि गेल छथि। हुनका लोकनिक हमरा प्रति सिनेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए ततेक कम। मुदा कतबो व्यक्ति मिलि कए हमर भाग्य नहि बदलि सकैत छथि।हमरा की नहि छल? राजाराम सन पति,अयोध्याक राज,दसरथ सन ससुर,कौशल्या सन सासु। मुदा किछु काज आएल? नहि आएल। ई ककर दोष?हमर नियतिए इएह छल।नहि तँ हम राजाराम संग जंगल की करए जइतहुँ। यदि ओतए गेबो केलहुँ तखन लक्ष्मण सन दिओरक ऊपर अनेरे सक कए हुनका अपन रक्षासँ नहि हटबितहुँ। हमरे कहलापर सोनक हरिणक सिकार लेल जेबासँ पहिने राजाराम तँ अपना भरि सभ ओरिआन कए गेल रहथि। हमही हुनका सोनक मृगाकेँ पकड़ि अनबाक लेल वाध्य केने रहिअनि। ओ तँ मना करैत छलाह। आखिर हमरा रावण हरि लेलक। तकर बाद तँ जे भेल से इतिहास थिक। दोष हमर तँ छलहे। तेँ बहुत विचारक प्रश्न अछि। एहि ठामक माहौल बहुत गड़बड़ लागि रहल अछि। अहाँ जाउ,मैथिलीपुत्रसँ गप्प करू जाहिसँ जानकीधुजावाहिनी सीमाक अधीन रहथि,मर्यादाक पालन करथि। हमर सम्मानक आब कोन चिंता अछि। लव-कुश अपन अधिकार

पाबि जाथि। हमरा लेल तँ माता पृथ्वी छथिहे। हमर मोन आब फाटि गेल अछि। कतबो केओ प्रयास करत हमर जीवनमे आब ओ भाव नहि आबि सकैत अछि। हमरा लेल ने अयोध्याक राज कोनो माने रखैत अछि ने मिथिला। हमर स्थान पूर्वनिर्धारित अछि। से वाल्मीकि अपन रामायणमे लिखि चुकल छथि।”

“चिंतामे तँ हमहूँ छी। हमरा लेल तँ दूध आ माछ दुनू बाँतर अछि। हम ने रामक विरुद्ध जा सकैत छी ने अहाँक। हम तँ अहाँ दुनूक चाकर छी। ऊपरसँ चिरञ्जीवी हेबाक आशीर्वाद सेहो अहाँसँ भेटि चुकल अछि। हम की समाद देबनि भविष्यक पीढ़ीकेँ। सभ तँ पुछबे करताह -अहाँ की केलहुँ? किएक ने रोकि सकलहुँ ई अनर्थ। एहन हालतिमे अहीं कहू जे हम की करू?”

“अहाँ बेसी नहि सोचू। जे हम कहैत छी से करू। हिनकासभकेँ अपना संगे अयोध्या लेने जइअनु। ओहिठामक हालति एक बेर अपने आँखिए देखि लेताह ने तखन अपने सही रस्ता पकड़ि लेताह।समाधान एहन नहि हेबाक चाही जे समस्या आर गहींर भए जाए। अपितु,विचारशील व्यक्तिक कर्तव्य थिक जे ओ अपन आचरणसँ एकटा सुंदर भविष्यक रचना करए। भावी पीढ़ीक जीवन सुगम करए। एकटा बात नीकसँ बुझि लिअ जे युद्ध कोनो समाधान नहि अनैत अछि,अपितु,ओ नव-नव समस्या उत्पन्न कए दैत अछि।”

“जे आदेश माते!

हम तुरंत मैथिलीपुत्रसँ एकांतमे भेंट करैत छी अहाँक मनोभावसँ हुनका अवगत करबैत छी। सत्य पुछैत छी तँ हमहूँ बहुत दुबिधामे छी।कखनो काल होइत अछि जे दीर्घजीवन एकटा अभिशापे थिक। बहुत नीक होइत जे राम राज्याभिषेकक बाद हमहूँ चलि गेल रहितहुँ।”

“फेर ओएह बात। कालक गति महान अछि। जे हेबाक छैक से हेबे करतैक। ओकरा केओ बदलि नहि सकैत अछि,टारि नहि सकैत अछि। अहाँ वा हम निमित्त मात्र छी। मुदा मनुक्खकेँ अपन कर्तव्य तँ करबेक छैक।अहाँ आगू बढ़ू जाहिसँ कोनो नव अनर्थ नहि भए जाए से सुनिश्चित करू।”

जानकीक आज्ञा पाबि चिरञ्जीवी मैथिलीपुत्रसँ भेंट करबाक लेल बिदा भए गेलाह।

वाल्मीकि आश्रमसँ कनीके फटकी तमसा नदीक कातमे चिरञ्जीवीक मैथिलीपुत्रसँ भेंट होइत छनि। शक्तिस्वरुपा सेहो हुनका लोकनिक चर्चामे सामिल भए जाइत छथि। जानकीधुजावाहिनीक आब की करए? अचानक हुनका लोकनिकेँ मिथिला वापस गेनाइ संभव नहि अछि। ओ सभ सालक-साल ओहि दिनक प्रतिक्षामे कष्ट सहि रहल छथि,शक्ति संचय कए रहल छथि जाहिसँ जानकीक रक्षा होनि,हुनकर ससम्मान अपन घर वापसी होनि। मुदा जानकीसँ मुखापेक्षी भेलाक बाद ओ सभ चिंतामे पड़ि गेल छथि। जानकीसँ भेल चर्चक अनुसार चिरञ्जीवी कहलखिन-

"जानकीधुजावाहिनीक ऊर्जाकेँ सकारात्मक दिशा देब जरूरी अछि। ओ सभ युद्ध-युद्ध चिचिआ रहल छथि। मुदा युद्ध करताह ककरासँ? एहिठाम तँ विचारक युद्ध अछि। खराप के छथि? केओ नहि। राजाराम स्वयं एहि घटनासभसँ बहुत दुखी छथि। सुनैत छी जे ओ जानकीक वियोगमे राति-राति भरि जगले रहि जाइत छथि,माटिपर पटिआपर पड़ल औनाइत रहैत छथि। हुनकर व्यक्तिगत जीवन नितांत दुखमय भए गेल छनि। ओ दिन-राति पश्चातापक आगिमे जरि रहल छथि। आब अहीं कहू जे हुनकासँ की कहल जा सकैत अछि। रहल बात अयोध्याक नागरिकक । से तँ कोनो एक गोटेक बात तँ छैक नहि। ओतहु पक्ष-विपक्ष अछि। समाजमे तरह-तरहक विचार चलि रहल अछि। सुनैत छी जे ओ सभ जानकीक प्रश्नपर आपसेमे लड़ि जेबाक क्रममे छलाह। बहुत मोसकिलसँ हुनका लोकनिकेँ रोकल जा सकल। अयोध्यामे व्यक्ति-व्यक्तिक विचार अलग अछि। ओहिठामक समाजमे अखनहु राजारामक बहुत आदर छनि। तकर माने ई नहि जे हुनका सभक मोनमे जानकीक प्रतिए अनुराग नहि छनि। मुदा कोनो समाजमे सर्वसम्मति होएब संभव नहि अछि। मुदा राजाराम तँ सर्वजन हितायक सिद्धांतक पक्षधर छथि। तेँ एहन घटना भेल। जानकी स्वयं अयोध्या वापस जेबाक लेल उत्सुक नहि छथि। अखन हुनकर एकमात्र प्राथमिकता लव-कुशक पालन करब छनि। ओ सभ स्वस्थ रहथु, योग्य

बनथु,शक्तिवान होथि,सएह हुनकर एकमात्र उद्येश्य छनि। ओ एहि लक्ष्यसँ कनीको एमहर-ओमहर जेबाक लेल तैयार नहि छथि। बुझलिऐक ने।”

“तखन कएल की जाए?”

“जानकीधुजावाहिनीकेँ अयोध्या लेने जइअनु। ओ सभ अपने राजारामक हालति देखताह,ओहिठामक समाजसँ,लोक-वेदसँ मुखातिब हेताह। ओहिठामक परिस्थिति देखलाक बाद हुनकर सभक तामस अपने कम भए जेतनि। तखन ओ सभ समस्याक भाग नहि बनताह,अपितु समाधान लेल प्रयास करताह।”

“एहिमे समाधान की हेतैक?जखन जानकी ओतए वापस जेबे नहि करतीह तखन केओ की कए लेत?”

“सभ किछु अखने किएक सोचि रहल छी? वाल्मीकि मुनि रामायणमे सभ किछु लिखि चुकल छथि,भविष्यमे जे घटित होमए बला अछि तकरो वर्णन कए चुकल छथि। हमसभ अनेरे परेसान नहि रही। लव-कुश ओएह रामायणक गायन करए निकलि रहल छथि। हमहूँसभ ओहि रामायणक गायन सुनब। सभ किछु अपने स्पष्ट भए जाएत।”

चिरञ्जीवी मैथिलीपुत्रकेँ आपसी चर्च शक्तिस्वरुपा बहुत ध्यानसँ सुनि रहल छलीह। ओ हिनका लोकनिक मार्गदर्शन करैत कहैत छथि-

“मिथिलावासीक भावनाक हम आदर करैत छी। हुनका लोकनिक भावनाक सम्मान होनि से हमहूँ चाहैत छी,मुदा ताहि लेल धैर्य जरूरी अछि। कारण एक गलती दोसर गलतीक औचित्य नहि भए सकैत अछि। अस्तु,सभ किछु बिसरि अहाँसभ हिनका लोकनिकेँ अयोध्या लए चलू।“

“मुदा एतेक गोटे जेताह कोना?”

“हम सदति अहाँसभक संगे रहब। कोनो प्रकारक दिक्कति नहि होएत।”

“अखन धरि जे किछु भेल अछि से अहींक बले भेल अछि। आगूओ अहींक उम्मीद अछि ।”

“अहाँसभ निश्चिन्त भए आगू बढ़ू। हम छी ने।”

शक्तिस्वरुपाक आश्वासन पाबि मैथिलीपुत्र बहुत आश्वस्त रहथि। समस्त मुक्तिवाहिमीक संगे ओ सभ ब्राह्मी मुहुर्तमे अयोध्याक लेल प्रस्थान कए देलनि। ओहिठामसँ बिदा होएबासँ पूर्व ओ सभ जानकीक सम्मानमे

प्रार्थना केलनि,वाल्मीकि मुनिकेँ स्मरण केलनि। बिदा होएबासँ पूर्व सभ गोटे एकस्वरसँ बाजि उठलाह-

"जयति जानकी!"

" जय मिथिला!"

सैकड़ों जानकीधुजावाहिनीक काफिला चलि पड़ल। ओ सभ बहुत उत्साहमे छलाह। तरह-तरहक गीत-नाद कए रहल छलाह। ओहि गीतसभक प्रतिध्वनि जानकीक कान धरि पहुँचलनि-

"एतेक भोरे एतेक मधुर गीत के गाबि रहल अछि? एहिमे हमर नाम,राजारामक नाम बेर-बेर लेल जा रहल अछि।"

"ई सभ अहींक नैहरक लोक छथि । सालोंसँ एहि जंगलमे बाट ताकि रहल छलथि ओहि शुभ क्षणक जखन अहाँ फेर अयोध्याक रानी बनब। लव-कुश से अपन अधिकार प्राप्त करताह।"

"हम फेर रानी बनब? "- से बाजि जानकी जोरसँ अट्टहास करए लगलीह। ओ कहैत छथि-

" लव कुश ककरो मदतिक मुखापेक्षी नहि छथि। ओ सभ अपन अधिकार प्राप्त करबामे सक्षम छथि। फेर वाल्मीकि मुनिक आशीर्वाद हुनका संगे छनिहे।"

"अबस्स,अबस्स।लव-कुश जे चाहताह से कए लेताह। एहिमे कोनो सक नहि।"-चिरञ्जीवी बजलाह।

ओमहर जानकीधुजावाहिनी अपन यात्रामे आगू बढ़ैत रहलाह। अयोध्या जेबाक क्रममे ओ सभ फेर गोमतीक कातमे आबि गेल रहथि जाही बाटे ओसभ गेल रहथि। साँझ पड़ि रहल छल। अस्तु,मैथिलीपुत्र कहलखिन-

"आजुक राति हमसभ एतहि विश्राम करब।"

३८

मैथिलीपुत्रक नेतृत्वमे सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी भोरे गोमती नदीमे स्नान केलथि,पूजा-पाठ केलथि,किछु जलखै केलथि आ भजन-कीर्तन करैत अयोध्या दिस बिदा भेलाह । ओसभ आनन्दमे छलाह जे अयोध्यामे राजारामसँ भेंट हेतनि । हुनका तँ एक्के बेरमे मना लेथिन ,

जानकी जल्दीए वापस अयोध्या लौटि जेतीह। राजाराम तँ हुनकर अपने छथिन तखन समस्या कथीक? अयोध्यासँ दस कोस फटकीए ओ सभ छलाह कि लोकक अपार भीड़ देखेलनि। सौंसे रस्ता लोकेसभ भरल छल। नाना प्रकारक वाहनसभमे लोकसभ नचैत-गबैत जा रहल छलाह। जकरे देखू सएह राजारामक प्रशंसामे जयगान कए रहल छलाह। मैथिलीपुत्रकेँ बुझेबे नहि करनि जे बात की छैक? एतेकगोटे सड़कपर कतएसँ आबि रहल छथि , कतए जा रहल छथि? ओना ओ सड़क तँ अयोध्ये जा रहल छल। मुदा अयोध्यामे एहन कोन बात भेल जे ओकर आसपास एतेक लोक उपस्थित भए रहल छथि?की राजाराम दोसर बिआह कए रहल छथि? कोन ठेकान?आखिर राजा थिकाह । राज चलेबाक हेतु शांत मोन चाही,जीवनमे स्थिरता चाही। दिन-राति अशांत परिवेशमे रहनिहार राजा अपन जनताकेँ की सुख देत? भए सकैत अछि जे सलाहकारलोकनि हुनकापर हाबी भए गेल होनि। अन्यथा,राजाराम तँ एहन नहि छथि।अछैत जानकीकेँ ओ दोसर बिआह करताह से विश्वास नहि भए रहल अछि। तखन समयक कोन ठेकान?ककर मोन कोन दिशामे पलटी लेत के जनैत अछि?

मैथिलीपुत्र चिरञ्जीवी संगे विचार-विमर्श करैत छथि-

“की बुझा रहल अछि?अयोध्याक लगपासमे एतेक भीड़ किएक अछि?”

“बात तँ सही कहि रहल छी। मुदा एहि प्रश्नक सही उत्तर के देत?”

“ओएहसभ कहि सकैत अछि।”

“सभ तँ नाच-गानमे मस्त अछि।ककरो होस छैक जे किछु बाजत,कोनो प्रश्नक उत्तर देत?”

“सभटा अपने किएक सोचि लैत छी?एक बेर पुछि कए तँ देखिऔक।”

“सही कहलहुँ।”

मैथिलीपुत्र सामनेसँ जा रहल लोकसभकेँ प्रणाम करैत छथि । फेर विनयपूर्वक पुछैत छथिन-

“अहाँसभ कतए जा रहल छिऐक?”

“सएह कहू। अहाँकेँ एतबो नहि बुझल अछि?एकर माने अहाँसभ अयोध्याक नहि छी।”

“सही अनुमान लगओलहुँ।हमसभ मिथिलावासी थिकहुँ,जानकीक नैहरसँ आबि रहल छी।”

“ओह तखन तँ अहाँसभ अत्यन्त आदरणीय पाहुन थिकहुँ। हमसभ अपनेलोकनिक कोन तरहेँ स्वागत करी से नहि बुझा रहल अछि?”

“पहिने ई तँ बुझिऐक जे बात की छैक?हमसभ तँ घरबैए छी। स्वागतक कोन बात भेलैक।हमरसभक बहिनोइकेँ पता लगतनि तँ ओ अपने दौड़ि जेताह।”

“अहाँ हमरालोकमनिकेँ लज्जित नहि करू।हमसभ एहिठाम छी तखन राजारामकेँ किएक परेसानी हेतनि।हमहीसभ अपनेकेँ हुनका लग लए चलब। मुदा ओ तँ ...,”

“कहू,कहू ।ओ की कए रहल छथि,कतए छथि?इएह तँ हमसभ जानए चाहैत छी।”

“राजाराम अपन अनुजलोकनिक संगे अश्वमेध यज्ञ कए रहल छथि। हमहूँसभ ओतहि जा रहल छी।सड़कपर जे असंख्य जनसमुदाय अपनेसभ देखि रहल छी से सभ ओमहरे जा रहल अछि।”

“मुदा हमसभ ओहि स्थानपर केना पहुँचि सकब? हमसभ छीहो बहुतगोटे । प्रहरीसभ अनठिआ बुझि कहीं रस्तेमे ने रोकि लिअए।”

“अहाँसभ तकर चिंता नहि करू। बस हमरासभक संग भए जाउ।”

“बहुत नीक बात कहलहुँ।”

तकर बाद मैथिलीपुत्र आ चिरञ्जीवी जानकीधुजावाहिनीक संगे अश्वमेध यज्ञ मण्डप दिस बिदा भेलाह। मोने-मोन आश्चर्य होनि जे अयोध्याक लोकसभमे जानकीक प्रतिए एतेक अनुराग अखनहु छनि।तेँ ने हमरासभकेँ एतेक आदर कए रहल छथि। हमसभ अनेरे अनुरंजित छलहुँ। की की ने सोचि रहल छलहुँ। नीके भेल जे हमसभ अयोध्या आबि गेलहुँ। एहिठामक तँ हबे बदलल लगैत अछि।

अयोध्यासँ थोड़बे फटकी विशाल पण्डाल लागल छल। पण्डाल की छल ,अपना-आपमे ओ एकटा नगर छल। अनेक द्वारसँ तरह-तरहक लोकसभक आवागमनक सुविधा छल। ऋषिलोकनिक लेल फराके एकटा विशाल पण्डाल लगाओल गेल छल। सभकेँ सुविधा संपन्न अलग-अलग

कोठरी देल गेल छल। ऋषिलोकनि ब्राह्मी मुहुर्तमे उठि कए वेदमंत्रोच्चार करए लगैत छलाह। ओहिठामक वातावरण संस्कार आ भक्तिसँ भरल छल। अनेक देशक राजालोकनि अपन-अपन आबासमे सुव्यवस्थित छलाह।

व्यवस्थापकलोकनिकेँ जखने पता लगलनि जे मिथिलासँ सैकड़ों लोकसभ अश्वमेध यज्ञस्थलीपर उपस्थित छथि तँ हुनका लोकनिक बहुत स्वागत केलकनि। सभ गोटे के रहबाक लेल पृथक पण्डाल लगाओल गेल। ओहिठामसँ मुख्य यज्ञस्थली ठीक सामनेमे छल।

यज्ञमण्डप लग पहुँचि जानकीधुजावाहिनी चिंतामे पड़ि जाइत छथि-

हो रामा!
ई की देखि रहल छी?
चारूकात सजल-धजल अयोध्या नगरिआ
नचैत-गबैत लोक-वेद
नगरमे चारूकात बजैत अछि बधैआ
अश्वमेध यज्ञ कए रहल छथि
चक्रवर्ती राजाराम
मुदा जानकी बना देल गेल छथि
सोनाक मुरुत
हाय हो राम
ई की देखि रहल छी
किए केने छी
एहन अन्याय हे राजाराम
छगुन्तामे अछि प्राण
हमसभ मिथिलासँ
ई देखबा लेल
नहि आएल छलहुँ
मोनमे आशा छल
जे कतहु ने कतहु प्रेमक विजय होएत
राजारामक हृदयमे सदति विराजित छथि जानकी
से अश्वमेध यज्ञोमे

बामाँ दिस रहतीह विद्यमान
हे विधाता !
नहि बुझि सकलहुँ
अहाँक विधान
जानकी जीविते बनल छथि
मुरुत समान

“ई की देखि रहल छी? जानकीक सोनाक मुर्ति राजारामक बामाँ भागमे लगाओल गेल अछि। की जानकी यज्ञोमे नहि बजाओल जेतीह ?-मैथिलीपुत्र पुछलखिन।”

“देखैत रहिऔक ने ,आगू की की होइत छैक। सामने दहिना कातक पण्डालमे वाल्मीकि मुनि देखा रहल छथि। देखा चाही ओ की करैत छथि?”

“वाल्मीकि मुनि सेहो आएल छथि?”

“हँ यौ। ऊपर दिस आउ ने।अपने देखबनि।”

“आ जानकी,लव-कुश?की ओहोसभ आएल छथि?”

“धैर्य राखू।अखन बहुत किछु देखबाक अवसर भेटत।”

३९

जानकीकेँ वाल्मीकि आश्रममे रहैत बारह वर्ष बीति गेलनि।लव-कुश आब छेटगर भए गेल छथि। वाल्मीकि मुनिक असीम कृपासँ ओ सभ सभ तरहक विद्यामे निपुण भए गेल छथि। संगीत गायनमे सेहो हुनकालोकनिकेँ महारत प्राप्त भए गेल छनि। वाल्मीकि मुनि स्वयं दुनू भाइकेँ साँझमे रामायण गायनक प्रशिक्षण दैत छलाह।परिणामतः संपूर्ण वाल्मीकि रामायण हुनकासभकेँ कंठाग्र भए गेल छनि। ओ सभ जखने रामायण गायन शुरू करैत छथि कि चारूकातक लोकसभ निःशब्द भए ओकरा सुनैत छथि। सभक आँखिसँ धाराप्रवाह अश्रु प्रवाह होमए लगैत छनि। केओ अपना वशमे नहि रहि जाइत छथि। वाल्मीकि रामायणमे रामक भविष्यक जीवनक वर्णन सेहो कएल गेल अछि। वाल्मीकि मुनि अपन दिव्यशक्तिसँ तकरा अपन शब्दमे रामायणमे उतारि देने छथि। अस्तु,जानकीक जीवनमे जे किछु घटित भए रहल छनि,किंवा राजारामक

संगे भविष्यमे जे किछु होमए बला छनि से वाल्मीकि मुनि बुझि रहल छथि। आब बस लोकसभकेँ ओकरा बुझबाक छैक। तेँ ने वाल्मीकि मुनि दुनू बालककेँ रामायण गायनमे निपुण केलनि अछि।

वाल्मीकि मुनिकेँ राजाराम द्वारा आयोजित अश्वमेध यज्ञक निमंत्रण भेटि चुकल छनि। ओ एहि अवसरक उपयोग किछु विशेष रुपमे करबाक योजना बना चुकल छथि। एहि विषयमे वाल्मीकि मुनि वनदेबीकेँ सूचना दैत छथि।परंतु,हुनका एहि यज्ञमे जेबाक कनीको मोन नहि होइत छनि।ओ वाल्मीकि मुनिसँ कहैत छथि-

"जखन राजाराम स्वयं हमरा नहि बजओलथि तखन हम ओहिठाम आर अपमानित हेबाक लेल किएक जाउ?"

"आब प्रश्न अहाँक मान-सम्मानक नहि अछि वनदेबी। लव-कुश छेटगर भए चुकल छथि। सभ तरहेँ सुयोग्य छथि। उचित अछि जे राजाराम हुनका अपन संतानक रुपमे स्वीकार करथि आ हुनकासभकेँ अपन अधिकार देथि। ताहि लेल हमरा जनैत ई बहुत उपयुक्त अवसर अछि। ओहिठाम अनेक ऋषि-मुनि आएल छथि। वशिष्ठ मुनि सहित अनेक विद्वान लोकनि सेहो उपस्थित छथि। हमरो निमंत्रण भेटि चुकल अछि। हम जेबो करब। उचित अछि जे लव-कुश अहाँ संगे ओतए चलथि।"

"मुदा यदि हमरा संगे सम्मानजनक व्यवहार नहि भेल तखन?"

"हम छी ने अहाँक संगे। हमरा रहैत अहाँकेँ के किछु कहि सकत?"

"तखन अहाँ जे कही।"

"हमरा जे कहबाक छल से कहि चुकल छी।काल्हि भोरे हमसभ यज्ञस्थली लेल बिदा होएब। लव-कुश रस्ते-रस्ते रामायणक गायन करैत रहताह। देखबैक की हाल रहैत छैक। हिनकर सभक रामायण गायनमे से जादू अछि जे समस्त अयोध्याक लोक अहाँक दंडवत भए जेताह।"

"यद्यपि अपनेक विचार उत्तम अछि,अपने हमरसभक कल्याण चाहैत छी,मुदा हमर मोन अखन अयोध्या जेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि। अहाँ लव-कुश संगे जाउ। यदि ओतए गेलाक बाद हमर अएनाइ उचित बुझाए तखन हमरा समाद पठा देब। हम चिरञ्जीवीक संगे ओतए आबि जाएब।"

वाल्मीकि मुनि लव-कुशकेँ आदेश करैत छथि-

"अहाँ दुनू भाइ यज्ञस्थलीपर जाउ आ राजारामकेँ हमर रामायण सुनाउ।"

"जे आज्ञा आचार्यवर!"

४०

वाल्मीकि मुनि लव-कुशक संग यज्ञमे भाग लेबाक लेल अपन आश्रमसँ प्रस्थान कए चुकल छथि। जानकी हुनकासभक संगे नहि गेलीह,नीक नहि लगलनि अयोध्या जाएब ,ओहो एहि हालतिमे। आइ ओ महारानी बनि राजारामक बामाँ भागमे विराजित रहितथि। से जानकी कोन मुँहे ओतए जेतीह। ओ तँ ओहिठामसँ निर्वासित कए देल गेल छथि। जानकीक अयोध्या छोड़ला बारह वर्ष बीति गेल। तकर बाद सँ केओ ओहिठामसँ हुनकर हाल-चाल नहि लेलक। एहन परिस्थितिमे जानकी ओहिठाम कोना जइतथि। बितल बातसभ सोचि-सोचि जानकी अखरे चौकीपर पड़ल-पड़ल कानि रहल छथि। चौकी नोरसँ भिजि गेल अछि। हुनकर ई दशा देखि आश्रमवासी स्त्री लोकनि परेसान भए गेलथि। की करथि से बुझेबे नहि करनि।लव-कुश लगमे रहथिन तखन तँ ओ दिन-राति हुनकेसभमे लागल रहैत छलीह। मुदा ओहोसभ चलि गेल छथिन। वाल्मीकि मुनि से चलि गेल छथि। अन्यथा भोर-साँझ हुनकर आश्रमक आरती आ तकर बाद होमए बला भजन-कीर्तनमे जानकीक मोन बहटि जाइत छलनि। मुदा अखन तँ हुनका एकदम सुन्न लागि रहल छनि। स्वाभाविक रुपसँ ओ आत्मलीन भए गेल छथि। बिसरल बात सभ एक-एक कए मोन पड़ि रहल छनि।

"केना राम संगे प्रथमे दृष्टिमे हुनका प्रेम भए गेलनि। कतेक नीक हुनकर व्यवहार छलनि। केना ओ स्वयंवरमे देखिते-देखिते शिव धनुषकेँ तोड़ि देलनि। जे धनुष रावण सन प्रतापी राजा उठा तक नहि सकल छल तकरा राम तर दए खंड-खंड कए देलनि। इएह तँ ईर्ष्याक कारण बनि गेल छल। रावण अवसर भेटितहि तकर बदला लेलक आ पंचवटीसँ जानकीकेँ छलपूर्वक हरि लेलक। तहिआसँ रावणक मृत्यु पर्यंत जानकी ओकर अधीन रहलीह। कुल एगारह महिना चौदह दिन लंकामे बिताओल गेल समय हुनका लेल सैकड़ों साल लगैत छलनि। एक-एक दिन बिताएब मोसकिल भए गेल

रहनि। रावण हुनकर मनोबल तोड़बाक कोनो कसरि नहि छोड़ने छल। ओ साफे कहि देने रहनि-

“नीकसँ सुनि लएह। यदि साल भरिक भीतर सहर्ष हमरा संगे बिआह नहि करबह तँ ई राक्ष्सीसभ तोरा खंड-खंड कए तोहर माउसकेँ उसनि कए खाएत। कोनो हालतिमे तूँ बचि नहि सकबह। तेँ यदि अपन नीक चाहैत छह तँ यथाशीघ्र हमरासँ बिआह कए लएह आ लंकाक रानी बनि जेबाक सौभाग्य प्राप्त करह।”

मुदा जानकी तँ जानकी छलीह। ने जानक परिबाह छलनि ने रावणक राजक। हुनकर तँ बस एकमात्र आराध्य कही,प्रेमी कही,पति कही सभ राजा रामे छलाह आ छथिहो। ओ अपन विचारपर अड़ल रहलीह । आखिर रावण मारल गेल। ओकर समस्त परिवार नष्ट भए गेल। राजारामक सहयोगी रहबाक कारण मात्र विभीषण बाँचि सकलाह। राजाराम द्वारा लंका विजयक बाद ओएह राजा भेलाह। जानकीकेँ ई शुभ समाचार भेटलनि। हुनकर प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल। आखिर राजारामसँ भेंट हेबाक समय आबि गेल। जानकीकेँ मोन पड़ रहल छनि ओ बात सभ।ओ फेर जोर-जोरसँ कानए लगैत छथि। लगपासमे ठाढ़ आश्रमवासी स्त्री लोकनि गुम्म छथि। की करथि की नहि से फुरा नहि रहल छनि। ओ सभ जानकीकेँ थोड़े काल एकांतमे छोड़ि देलनि जाहिसँ ओ शांत भए सकथि।

जानकीकेँ मोन पड़लनि ओ क्षण जखन विभीषण अनेक सहयोगीक संगे हुनका सजा-धजा कए रामक सामने रथ सँ लए जेबाक ओरिआन केने छलाह मुदा राजाराम कहलखिन-

“जानकीकेँ हमरा लग पैरे अनिअनु जाहिसँ अधिक सँ अधिक लोक हुनका देखि सकनि। ओ सभ हुनकर दर्शन लेल व्याकुल छथि।”

राजारामक इच्छानुसार सभ तरहेँ सजल-धजल जानकी पैरे-पैरे राजारामक लगीच पहुँचैत छथि। जानकीक प्रसन्नता अवर्णीय छल। हुनका एक-एक क्षण बिताएब मोसकिल भए रहल छलनि। आब राजाराम बहुत लगीच आबि गेल छलखिन कि ओ कहैत छथिन-

“हम ई युदध अहाँ लेल नहि केलहुँ। अपितु,हमर लक्ष्य छल अपन आत्मसम्मान आ रघुकुलक प्रतिष्ठाक पुनर्स्थापित करब। रावणक मृत्यु आ लंका विजयक संग से हम प्राप्त कए चुकलहुँ। आब अहाँ स्वतंत्र छी। अहाँ जतए चाही जा सकैत छी।”

सोचिऔ, हमरा लेल राजारामक ओ शब्दसभ केहन घातक लागल छल। होअए जे तुरंत जहर-माहुर खा ली। आब जीबिए कए की करब,ककरा लेल जिअब? हम जिनका लेल एतेक दिनसँ सभ तरहक कष्ट सहलहुँ सएह राजाराम की कहि रहल छथि? खैर! ओहिठाम उपस्थित सभ गण-मान्य लोकनि राजारामकेँ मनओलखिन । तथापि,ओ हमर अग्निपरीक्षाक लेल अड़ि गेलथि। हम सेहो मानि लेलहुँ। हम सभ तरहेँ सही रही,सभ दिन राजारामकेँ समर्पित रही ,तेँ हम ओहि परीक्षोमे सफल भेलहुँ। हम सभ अपमान सहि गेलहुँ। भेल जे राजाराम सहज मानवीय त्रुटिक सिकार भए गेल छथि,कालांतरमे ताहि भावसँ उबरि जेताह। हुनका एकटा अवसर देल जेबाक चाही। बात यदि एतबे सँ बनि जाइक तँ हमरा मानि लेबाक चाही।“

अग्निपरीक्षामे सभ तरहेँ शुद्ध घोषित भेलाक बादे हम राजारामक संग वापस अयोध्या अएलहुँ। हुनकर राज्याभिषेकक बाद हुनकर रानी बनलहुँ। मुदा दुर्भाग्य फेर हमर पछोड़ केलक। तकर बाद तँ जे भेल से देखिए रहल छी।“

४१

अयोध्या सहर आइ नवकनिआँ जकाँ सजल अछि । चारूकात अनेक प्रकारक सामिआना लगाओल गेल अछि। सामिआनासभमे तरह-तरहक चित्र सभ उकेरल गेल अछि। यज्ञस्थल दिस जा रहल मार्गसभपर गलैचा ओछाओल गेल अछि। रस्ताक दुनू दिस सुंदर सुगंधित फूलसभ मह-मह कए रहल छल। अयोध्या आ लगपासक वातावरण राममय भए गेल अछि। जतहि देखू,जकरे देखू से राजारामक प्रशंसामे गीत गाबि रहल अछि,हुनकर जयगान कए रहल अछि। ऋषि,मुनि लोकनि मंत्रोच्चार कए रहल छथि। राजाराम अपन तीनू भाइ,गुरु वशिष्ठ आ अन्य वरिष्ठ ज्ञानीलोकनिक संग यज्ञस्थलीमे विद्यमान छथि। ओही समयमे दूटा बालक वाल्मीकि रामायणक सस्वर पाठ करैत यज्ञस्थलीमे प्रवेश करैत छथि। हुनकर सभक गायन ततेक मधुर छनि,ततेक अर्थपूर्ण छनि जे यज्ञस्थलीमे उपस्थित लोकसभक ध्यान तुरंत घिचि लैत छनि। ओहि समयमे चारूकात शांति पसरि जाइत अछि। जे जतहि अछि ओतहि मुरुत जकाँ ठहरि जाइत

अछि। राजाराम स्वयं बहुत ध्यानसँ ओहि गीतकेँ सुनैत छथि। गीत सुनैत-सुनैत ओ मोनमे विचारैत छथि-

"एहि गीतमे तँ हमरे जीवनक कथा कहल गेल लगैत अछि?"

"ई बालकसभ के छथि?हिनका ई सभ के सिखओलकनि?"

"ई सभ तँ हमर जीवनकेँ अक्षरसः उकेरि कए राखि रहल छथि।"

"अहाँसभ के छी?एहिठाम कोना अएलहुँ?एहि गीतक रचनाकार के छथि?हमरा से सभ विस्तारपूर्वक बताउ।"-राजाराम पुछलखिन।

"मान्यवर! अपनेक जय होअए। हमसभ वाल्मीकि मुनिक शिष्य छी। वनदेबी हमर माता छथि। हमर इएह परिचय थिक । आर किछु नहि। हम जे गीत गबैत छी तकर रचयिता गुरुदेव वाल्मीकि स्वयं छथि। ओएह हमरासभकेँ एकरा गेबाक अभ्यास करओलनि। हुनके आज्ञासँ हमसभ आइ अपनेक सामने एकरा गाबि रहल छी।"

"हम अहाँसभक गायनकलासँ,अहाँक प्रतिभासँ बहुत प्रभावित भेलहुँ । हम अहाँसभकेँ किछु पुरस्कार देबए चाहैत छी। अहाँ एकरा सहर्ष स्वीकार करू।"

राजारामक इसारा पाबि सोनासँ भरल झोरा हुनकासभक हाथमे देल जाइत छनि। मुदा लव-कुश ओहि झोराकेँ छुबितो नहि छथि।

"नहि,नहि। हमसभ तँ जंगलमे रहैत छी,ओहीठामक फल-फूलपर जीबैत छी। हमरा सभकेँ एकर कोन काज?अपने एकरा वापस लेल जाओ।"

लव-कुशकेँ एना बजैत सुनि राजाराम चकित छलाह। हुनका बुझबामे देरी नहि भेलनि जे वाल्मीकि रामायण हुनके जीवन प्रसंगपर आधारित अछि। एहिमे हुनकर जानकीक सेहो चर्च अछि। एहिसभ बातपर विचार कए ओ वाल्मीकि मुनिकेँ समाद पठबैत छथि। समदिआ वाल्मीकि मुनिकेँ हुनकर पण्डालमे भेंट करैत छथि आ विनयपूर्वक राजारामक समाद कहैत छथि-

"ऋषिवर!

सादर प्रणाम!

यज्ञस्थलीमे लव-कुशक रामायण गायनसँ राजाराम बहुत प्रभावित छथि। अपनेक रचित रामायणक मर्म बुझि गेल छथि। ओ जानि गेल छथि जे रामायण वस्तुतः हुनके जीवनीपर आधारित अछि। जानकी लेल हुनका

मोनमे बहुत आदर छनि। मुदा लोकलाजोक किछु महत्व होइत छैक। अयोध्यावासीक आपत्ति उठओलेपर राजाराम जानकीकेँ निर्वासित करबापर विवश भेल रहथि। ताहि बातक दुख हुनका मोनमे बहुत छनि। ओ तहिआसँ पश्चातापक आगिमे जरि रहल छथि। हुनका लगैत छनि जे ओहि निर्णयक समीक्षाक लेल उपयुक्त समय आबि गेल अछि। राजारामक इच्छा छनि जे जानकी यज्ञशालामे आबथि आ सभक सामनेमे अपन सुचिताक लेल सपथ खाथि जाहिसँ ओ हुनका फेरसँ स्वीकार कए सकथि।"

"कोनो हरजा नहि। पतिक इच्छाक सम्मान करब पत्नीक धर्म थिक। जानकी राजारामक आज्ञाक अनुसार काल्हि भरल सभामे उपस्थित हेतीह।"-वाल्मीकि मुनि बजलाह।

समदिआ हुनका प्रणाम कए चलि जाइत रहल। ओ सोझे राजाराम लग पहुँचैत अछि। ओ हुनका वाल्मीकि मुनिसँ भेल सभटा बात हुनका एकांतमे कहैत छनि। ओ समदिआक बात सुनि कए बहुत प्रसन्न छथि।

यज्ञशालामे लव-कुशक वाल्मीकि रामायणक मधुर गायन सुनि राजाराम विचार मग्न भए गेलथि। ओ वाल्मीकि मुनिकेँ निस्संदेह समाद पठा देलखिन ,लव-कुशकेँ अपना भरि प्रोत्साहितो केलखिन,मुदा बात ने एतबे रहैक ने राजाराम ओतहि रुकल छलाह। ओ राति भरि जगले रहि गेलाह,करोट बदलैत रहि गेलाह,जेना हुनकर इएह नियति होनि। ओ बुझि गेल छलाह जे लव-कुश के छथि,मुदा जानकीकेँ कोना मनाओल जा सकत से मूल प्रश्न छल। कारण जाहि तरहेँ हुनका बिना विश्वासमे लेने जंगल पठा देल गेलनि से ओ कोना बिसरि सकैत छलीह? ओहो कोनो मामूली स्त्री नहि रहथि। जनकक बेटी मिथिलाक सम्मानित बेटी छलीह। फेर हुनकर कोनो दोष नहि छलनि। ओ तँ सभदिन राजारामकेँ मोनसँ चाहैत रहलथि,हुनकेटा मानलथि। मुदा परिस्थिति कहिओ संग नहि देलकनि। पराधीन रहितहुँ ओ अपन निष्ठा आ आत्मसम्मानकेँ बचओने रहलथि। मुदा लोक के की कहि रहल अछि तकर ओ की करितथि? राजारामक निर्णय कतहुसँ न्यायपूर्ण नहि लगैत छलनि। तखन कोन मुँहे जानकीसँ निवेदन करितथि?

ओमहर वाल्मीकि मुनि चिरञ्जीवीकेँ सभ बात बुझा कए वनदेबी लग आश्रम पठबैत छथि। चिरञ्जीवी वाल्मीकि मुनिक समाद लए जानकी लग पहुँचैत छथि। ओ जानकीकेँ वाल्मीकि मुनिक समाद कहैत छथिन।

मोनमे हुनको यज्ञ देखबाक इच्छा रहबे करनि । ओहिठाम लव-कुश द्वारा गाओल गेल रामायणक बारेमे नीकसँ बुझबाक उत्सुकता रहबे करनि। ऊपरसँ ओ आश्रममे एसगरि बहुत परेसान भए गेल रहथि। ओ वाल्मीकि मुनिक आदेश मानि लेबेमे उचित बुझलनि।

वाल्मीकि मुनिक आग्रहपर जानकी अहल भोरे चिरञ्जीवीक संग राजारामक यज्ञस्थली लेल बिदा भेलथि। जानकी आइ बहुत दिनक बाद एतेक नीकसँ सजल छथि। बहुत दिनसँ पेटीमे राखल गहनासभ पहिरि लेने छथि। लंकासँ अयोध्या अएलाक बाद जे साड़ी पहिरने रहथि सएह आइओ पहिरि लेने छथि। यज्ञस्थलीसँ कनीके फटकी बनल पण्डालमे वाल्मीकि मुनि ठहरल छलाह। जानकी चिरञ्जीवी संगे ओतए पहुँचैत छथि। वाल्मीकि मुनि जनाकीकेँ एहि-तरहेँ सजल-धजल देखि प्रसन्न होइत छथि। ओ जानकीकेँ सादर प्रणाम करैत छथि।

जानकी वाल्मीकि मुनि संग हुनकर पण्डालमे रहैत छथि। हुनकर एतए आगमनक जनतब ककरो नहि देल जाइत छनि। वाल्मीकि मुनिक पण्डालमे जानकी चुपचाप बैसल छथि। एहन परिस्थितिमे एकांतमे जानकीक मोनमे तरह-तरहक प्रश्न-प्रतिप्रश्न उठि रहल छनि।

“आइ हमरा एहि यज्ञमे राजारामक बगलमे बैसल रहबाक छल। मुदा हमरा बदलामे हमर सोनाक मुरुत बना कए राखल गेल अछि। कहू ई केहन बात भेल? जीबैत आदमीक बदला ओकर मुरुतक पूजा कएल जाएत? ई तँ घोर अन्याय थिक।”

“हमरा एहिठाम अएबेक नहि चाहैत छल। भने पड़ल छलहुँ जंगल-झारमे। मुदा वाल्मीकि मुनि हमरा एहिठाम बजा लेलनि। हमहूँ अपन संतानक मोहमे मना नहि कए सकलिअनि। जानकीक आब की बाँचले रहि गेल छनि। तखनतँ लव-कुशकेँ हुनकर न्यायोचित स्थान भेटि जानि। बस हमर दायित्व समाप्त भए जाइत। सएह सोचि सभ बातकेँ बिसरि बाल्मीकी मुनि बात मानि हम एहिठाम धरि आबि गेल छी। देखा चाही नियति की चाहैत अछि।”

यज्ञशालाक मध्यभागमे बनल मंचपर राजाराम अपन तीनू भाइलोकनिक संग विराजमान छथि। हुनकालोकनिक दुनूकात प्रतिष्ठित ऋषि मुनि लोकनि आसन ग्रहण केने छथि। मुनि वशिष्ठ,विश्वामित्र सहित रघुकुलसँ जुड़ल अनेक संत-महात्मा अपन-अपन स्थानपर बैसि गेल छथि। मिथिलासँ आएल सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी मैथिलीपुत्रक संगे मंचक ठीक सामने बनल पण्डालमे बैसि गेल छथि। राजारामक सामने कनीके फटकी छोटसन मंच बनाओल गेल अछि जाहिठाम ठाढ़ भए लव-कुश रामायण गायन करताह। हुनकर पाछू वाल्मीकि मुनि ठाढ़ छथि। वाल्मीकि मुनिक पाछू जनकनन्दिनी जानकी मुँह नीचाँ केने ठाढ़ि छथि। सभ गोटे कैँ एहि तरहेँ आएल देखि राजारामक सचिव हुनकासँ आज्ञा लैत छथि-

"अपनेक आज्ञा होअए तँ आजुक कार्यक्रम प्रारंभ कएल जाए।"

"आज्ञा अछि।"

सभामे सभक सहमति देखि वाल्मीकि मुनि वक्तव्य प्रारंभ केलनि-

"मंचपर विराजमान राजाराम,हुनकर भाइ लोकनि, ऋषि,मुनि सहित एतए उपस्थित समस्त श्रोतालोकनि ध्यानसँ सुनथि। हम अपन जीवन भरिक तपस्यासँ अर्जित पुण्यकेँ साक्षी मानि सपथपूर्वक कहैत छी जे जीवनमे हम कहिओ झूठ नहि बजलहुँ,जे हम जे किछु कहए जा रहल छी से परम सत्य अछि । एहि तरहेँ सपथपूर्वक हम कहैत छी जे लव-कुश राजारामक संतान छथि। ओ सभ हुनकर उत्तराधिकारी छथि। राजाराम हुनका एहि तरहेँ सहर्ष स्वीकार करथि।

हम ईहो स्पष्ट करैत छी जे जनकनन्दिनी जानकी परम पवित्र छथि। हम अपन दिव्यशक्तिसँ सभ तरहेँ जाँचि लेलाक बाद आ ई आश्वस्त भेलाक बादे जे जानकी सभ तरहेँ पवित्र आ निष्कलंक छथि,हुनका अपन आश्रममे रखने छलिअनि। ओ सभ तरहेँ राजारामकेँ समर्पित रहलीह आ छथिहो। हुनकर राजारामक प्रतिए निष्ठा अक्षुण छनि।राजाराम निश्चित रुपसँ हुनका अपन पत्नीक रुपमे ग्रहण करथि।"

वाल्मीकि मुनिकेँ एहि तरहेँ स्पष्ट रुपसँ जानकीक आ लव-कुशक समर्थनमे अपन बात रखलाक बाद सौंसे सभागार जय जानकी ! जय जानकी!क नारा लगबए लागल। जानकीधुजावाहिनी एकस्वरमे बाजि उठलाह-

“जानकीक सम्मानक रक्षा कएल जाए। हुनका ससम्मान सोनाक जानकीक मुरुतकेँ हटा कए राजारामक बामाँ भागमे मंचपर बैसाओल जाए। तखनहि ई यज्ञ सफल मानल जाएत।”

यज्ञस्थलीमे उपस्थित अयोध्यावासी सेहो जानकीक समर्थनमे उच्च स्वरसँ बाजि उठलाह-

“हमसभ सेहो जानकीक ससम्मान अयोध्या वापसी चाहैत छी। ओ हमरसभक रानी थिकीह । जहिना राजाराम तहिना जानकी सेहो आदरणीया छथि। हुनका तुरंत अपन स्थान भेटनि। लव-कुश हमरसभक युवराज बनथु। आब बहुत भए गेल। हुनकासभकेँ आर कष्ट देब कतहुसँ उचित नहि होएत। जानकी संगे बहुत अन्याय केलथि अयोध्यावासी। अपन व्यवहार आ विचारमे उचित परिवर्तन आनि ओ सभ जल्दीसँ एहि कलंकसँ मुक्ति होथु।”

राजाराम सभक बात सुनलनि। बहुत गंभीरतासँ ओहि बातसभपर विचार केलनि। कखनहु अपन भाइसभ दिस देखथि तँ कखनहु मंचपर विराजमान ऋषि-मुनि दिस । मुदा किछु बाजि नहि पाबथि।

ओमहर जानकीक मनोदशा बहुत चिंताजनक भेल जा रहल छलनि। जखनसँ ओ यज्ञस्थलीमे पैर धेलीह आ राजारामकेँ सामने देखलीह तखनेसँ हुनका जेना लकबा मारि देलकनि। ओ आश्चर्यचकित छलीह जे राजाराम हुनका देखिओ कए मौन किएक छथि,किएक ने मंचसँ उतरि हुनका संगे लेने जाइत छथि। हुनकर मोनमे कतेक प्रश्नसभ हिलकोर दैत रहलनि ,मुदा उत्तर हुनका लग नहि रहनि,ने राजाराम किछु समाधान करथि। चारूकात जकरा जे मोन होइक से बजने जा रहल छल। निस्संदेह बेसी लोकसभ जानकीक पक्षधरे बुझाइत छलाह। मुदा ई विवादे व्यर्थ छल,अनावश्यक छल। अश्वमेध यज्ञ कएले गेल छल रघुकुलक प्रतिष्ठाक लेल। से प्रतिष्ठा माटिमे मिलि रहल छल। भरल सभामे जानकी लज्जित,अपमानित ठाढ़ि छलीह,राजारामक आदेशक प्रतीक्षा कए रहल छलीह। हुनकर यंत्रणाक तँ अंते नहि छल।

सभाक बीचमे सैकड़ों लोकक समक्ष ऋषि वाल्मीकि द्वारा सपथपूर्वक लव-कुशकेँ राजारामक संतान घोषित केलाक बाद आ जानकीकेँ सभ तरहेँ निर्दोष,निष्कलंक प्रमाणित केलाक बादो राजारामकेँ चुप देखि यज्ञशालामे उपस्थित लोकसँ चकित छलाह। वशिष्ठ मुनि समेत अनेक श्रेष्ठ मुनिकेँ फुरेबे नहि करनि जे ओ की करथि। सभक मोनमे एक्के बात उचरैत छलनि-

"जखन वाल्मीकि मुनि सन अंतर्यामी,रामायणक रचनाकार सद्यःसपथपूर्वक कहि रहल छथि तखनहु राजाराम की चाहैत छथि?किछु बाजि किएक नहि रहल छथि?"

सभामध्य वाल्मीकि मुनिक पाछू ठाढ़ि जानकीकेँ तँ हाल-बेहाल छलनि। ओ ने किछु सुनि रहल छलीह ने सोचि पाबि रहल छलीह । जानकीक सोनाक मुरुत मंचपर राजारामक बामाँ दिस विराजमान छल आ दोसर जीबैत मुरुत सभामध्य ठाढ़ि छलीह। ककरो किछु नहि फुराइक,केओ किछु नहि बाजए। राजाराम तँ जेना बौक भए गेल रहथि। एहन परिस्थितिमे लक्ष्मणकेँ नहि रहल गेलनि । ओ एकाएक जोरसँ चिकरि उठलाह-

"आदरणीय भैया!

यज्ञशालामे एतेक महापुरुषलोकनिक उपस्थितिमे बहुत अनर्थ भए रहल अछि। जे किछु भए रहल अछि से कोनो तरहेँ रघुकुलक मर्यादाक अनुकूल नहि अछि। वाल्मीकि मुनि अत्यंत आदरणीय छथि,सत्य आ धर्मक प्रतीक छथि। ओ जे किछु कहलनि अछि से स्वयं प्रमाण अछि। तकरा तुरंत स्वीकार कएल जेबाक चाही। हम आब जानकीकेँ एहि हालमे एक्को क्षण नहि देखि सकैत छी। हमरा लगैत अछि जे अहाँ उचित निर्णयमे विलंब कए सर्वनाशकेँ आमंत्रित कए रहल छी।"

मंचपर विराजमान भरत,शत्रुघ्न सहित अनेक ऋषि,मुनि लोकनि लक्ष्मणकेँ शांत करैत छथि-

"अहाँ अगुताउ नहि। राजाराम सभ किछु सुनि लेने छथि। ओ स्वयं भुक्तभोगी छथि। जानकीक कष्टसँ हुनका बेसी कष्ट छनि। हुनका विचार करबाक उचित समय देल जानि।"

ओमहर मंचक ठीक सामने बैसल सैकड़ों जानकीधुजावाहिनी तनतना रहल छलाह। ओ सभ मैथिलीपुत्र दिस इसारा कए रहल छलाह।

तात्पर्य जे अहाँ आदेश करू तँ अखने हिसाब-किताब भए जाएत। आब बात बरदास्तसँ बाहर भए रहल अछि। परंतु परिस्थितिए तेहन छल जे मैथिलीपुत्रो की करितथि? राजारामक निर्णयक प्रतीक्षा करब उचित बुझेलनि। अस्तु,हुनकालोकनिकेँ शांत रहबाक हेतु इसारा केलखिन। माहौल अत्यन्त उत्तेजित लागि रहल छल। लगैत छल जे कखनहु किछु भए जाएत।

४३

जनाकीक मनोदशा देखि जानकीधुजावाहिनी उत्तेजनामे अपन-अपन स्थानपर सँ उठि गेलाह। ओ सभ मंच दिस बढ़बाक प्रयास करए लगलाह। मैथिलीपुत्र हुनका सभकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास करथि,मुदा ओ सफल नहि भए रहल छलाह। ओ दौड़लाह चिरञ्जीवी लग। मुदा ई की भेल? ओ जतेक जोरसँ हुनकर लगीच जेबाक प्रयास करथि,ओ ततेक फटकी चलि जा रहल छथि। अंततः चिरञ्जीवी ठामहि बिला गेलाह। अखने तँ ओतहि छलाह। मैथिलीपुत्र चारूकात दृष्टि घुमबैत छथि,मुदा ओ कतहु देखा नहि रहल छथिन। अचानक ओ जानकीक पाछू दिस तकैत छथि।

“ई की देखि रहल छी?

चिरञ्जीवीकक तँ रंग-ढ़गे बदलि गेल छनि। हुनकर एहन रौद्र रूप तँ कहिओ नहि देखने छलहुँ? हुनका हाथमे एतेकटा गदा कतएसँ आएल? की ओ...? ओ तँ कहिओ कोनो प्रकारक अनुभव नहि होमए देलनि।सभ दिन सामान्य व्यवहार करैत रहि गेलाह। आइ पहिल बेर हुनकर एहन विकट,बिकराल रूप देखि रहल छी।

“हे भगवान! पता नहि की होमए जा रहलअछि? हमर बामाँ आँखि एतेक किएक फड़कि रहल अछि?”

चिरञ्जीवी इएहसभ सोचिते रहथि कि शक्तिस्वरुपाकेँ भयाओन रूप बनओने देखलथि। ओ राजारामक मंचक ठीक पाछू दुर्गाक अवतार लगैत छलीह। हाथमे चमकैत तरुआरि ,भाला ,बरछी आ कहि ने की की छलनि? लगैत छलैक जे ओ कखनहु ककरो छोपि देथिन। मैथिलीपुत्रकेँ तँ चारूकात प्रलयक दृश्य देखा रहल छलनि। ओ जोर-जोरसँ चिचिआ रहल छथि-

“जानकीधुजावाहिनी !

शांत होउ। अहाँसभकेँ अखन बहुत किछु करबाक अछि। जानकीक स्मृतिकेँ हुनकर संघर्ष गाथाकेँ, जुग-जुग धरि मिथिलाक घर-घर पहुँचेबाक अछि। अखन अहाँ सभ नियतिकेँ अपन काज करए दिऔक,अनेरे अयशक भागी नहि बनू। ई राजारामक दरबार छनि। यदि ओ न्याय नहि कए सकताह,ओहो अपन धर्मपत्नीक संगे, तखन आर के की करत?

लव-कुश रामायण गायन केने जा रहल छथि। मंचपर राजाराम सुनैत जा रहल छथि। ओहिमे जानकीक भविष्य तँ कहि देल गेल । आब राजारामक भविष्य गाओल जाएत। सभ चुपचाप ओहि गीतकेँ सुनैत जा रहल छथि। गीतक मर्म बुझि राजारामकेँ तँ ठकबिदोर लागल छनि। की करथि?की बाजथि?

अचानक लागल जेना ठनका खसि रहल अछि। भयाओन अन्हड़ उठि गेल अछि। राजारामक मंच कोनो क्षण धारासायी भए जाएत। लव-कुशक गायन एहन प्रलयंकारी सिद्ध होएत से संभवतः वाल्मीकि सेहो नहो सोचने रहल हेताह।

४४

यज्ञस्थलीमे सैकड़ों संत,महात्मा,विद्वानलोकनिक उपस्थितिमे राजाराम अपन मौन तोड़ि कहैत छथि-

“एहि ठाम उपस्थित समस्त महानुभावलोकनि सुनथु। अपने सभ गोटे लव-कुशक वाल्मीकि रचित रामायणक गायन सुनलहुँ। वाल्मीकि मुनिक लव-कुश आ जानकीक संबंधमे देल गेल स्पष्टीकरण सेहो सुनलहुँ। एहि बातमे कोनो सक नहि रहि गेल अछि जे लव-कुश हमर संतान छथि। हुनका लोकनिक स्वागत छनि। ओ सभ निश्चय रघुकुलक भविष्य छथि,हमर उत्तराधिकारी छथि । रहल जानकीक बात से हम स्वयं जनैत छी जे ओ निष्कलंक छथि,हमरासँ बेसी हुनका के चिन्हि सकैत छनि। हम हुनका चलि गेलाक बाद जे कष्ट सहलहुँ,जेहन नारकीय जीवन जीलहुँ तकर की वर्णन करू?तखन अहाँ कहब जे हम एना किएक केलहुँ?ई जनितहुँ जे जानकी निर्दोष छथि,हुनकर हमरा प्रतिए निष्ठापर कोनो प्रश्नचिन्ह नहि

लगाओल जा सकैत अछि,तथापि हम एकटा धोबीक बातपर हुनका वनबास दए देलिअनि। मुदा हम की करितहु?हम तँ एहि राज्यक नीति आ नियमसँ बान्हल छी। हम मात्र तकर अनुसरण केलहुँ। हम नीकसँ जनैत छी जे आबए बला पीढ़ी हमरासँ पुछबे करत?हमरा जे से कहत। मुदा ओकरा तत्कालीन समाजक जनतब रहतैक तखन हमरो विवशतापर सोचत?एहि सभ बातपर बहुत विमर्श भेल अछि आ होइत रहत। हम व्यक्तिगत रूपसँ कहिओ जानकीक विरुद्ध ने छलहुँ ने अखनो छी। प्रश्न तँ अयोध्यावासी उठओने छलाह।एकर समाधानो ओएह करताह। जानकी एहि सभामे सभक सामने अपन निष्ठाक सपथ खाथु जाहिसँ ओ सभ हुनका बारेमे अपन मंतव्य बदलबाक लेल विवश होथि।”

राजारामकेँ एना बजैत देखि जानकीक देहमे आगि लागि गेलनि। हुनकर क्रोधक अंत नहि छल।ई तँ हुनकर अपमानक पराकाष्ठा भए गेल । ओ एक बेर लव-कुश दिस देखलनि जरूर,मुदा मोन वितृष्णा भावसँ भरि गेल छलनि। भेलनि जे आब एहि दुनिआँमे रहिए कए की करब?व्यर्थ थिक एहन अपमानित जीवन जिअब। एक्के आदमी एक्के बातपर बेर-बेर यंत्रणा सहए,अपनाकेँ सही सिद्ध करैत रहए,ई कोन न्याय थिक? राजाराम सम्हारथु अपन राजगद्दी,पोषथु अपन संतानकेँ। हम आब चलब।

हे शक्तिस्वरुपे! हमरा क्षमा करब। हमर देह आब नहि रहत। मुदा राजारामक प्रतिए हमर प्रेम भाव बनले अछि ,हुनका प्रतिए हमर सिनेह ओहिना अछि। अस्तु, हमर प्रार्थना अछि जे अहाँ फेरसँ हुनकामे समाहित भए जाउ ,हुनका शक्तिवान बनल रहए दिअनु जाहिसँ ओ यशस्वी होथि, एहन यज्ञ बेर-बेर करैत रहथि।“

जानकीकेँ झहरि रहल छनि नोर
केहन अभागलि भेलहुँ
सभ किछु रहितहुँ
छी अनाथ
एहि यज्ञशालामे
के नहि छथि
वशिष्ठ मुनि जे छथि
रघुकुलक सभदिनसँ

माननीय आचार्य
सेहो छथि गुमसुम
वाल्मीकि कहि गेलाह
सभटा खेरहा
सपथ पर्यन्त खेलथि
जे लव-कुश छथि
निस्सन्देह अहींक संतान
हे श्री राम सुनू
जानकी छथि परमपवित्र
निष्ठावान
छथि अहींक समर्पित
करिअनु हुनकर सम्मान
कहि ने
विवशता की रहनि
राजाराम नहि कए सकलाह न्याय
लव-कुश गबैत रहि गेलाह
वाल्मीकि रामायण
जाहिमे लिखल छल
रामक भविष्य
से सुनैत रहि गेलाह
हुनका अखने चाहिअनि
जानकीक सपथ
सभहक सामनेमे ओ गछथु
कहथु जे ओ छथि निर्दोष
जानकी नहि सहि सकलथि
 एतेक अपमान
एहन अन्याय
सोचै छथि
लव-कुश छलाह हमर भार
ओ कहुना बाँचि गेलथि

भए गेलथि शक्तिसंपन्न
आब की?
बहुत भए गेल
आब चली
छोड़ी एहि कुटिल संसारकेँ
फाटह हे धरती
अंत होअए हमर त्रासदीक

ई सभ सोचैत-सोचैत जानकी आँखि मुनि लैत छथि। माता पृथ्वीकेँ स्मरण करैत छथि । मोने-मोन कहैत छथि-

“हे माता पृथ्वी! हमर असली माए तँ अहीं छी। हम अहींक कोरमे जन्मल रही। हम सभदिन रामक प्रतिए निष्ठावान रहलहुँ। हुनका छोड़ि कहिओ ककरो क्षणो भरि अपन मोनमे स्थान नहि देलहुँ । यदि ई सत्य होइक तखन हमरा फेरसँ अपन कोरामे बैसबाक अवसर प्रदान करू। हमरा अपनेमे समाहित कए सभ दुखसँ मुक्त करू।“

जानकीकेँ एतेक बजितहि भयंकर विस्फोट भेल। चारूकात पृथ्वी काँपि रहल छल। लगैत छल जेना भयाओन भूकंप भए रहल अछि। जानकी जतए ठाढ़ि छलीह ताहिठाम दरारि फाटि गेल। देखिते-देखिते जानकी ओहि दरारिमे विलीन भए गेलीह। जानकीकेँ ओहि पृथ्वीमे प्रवेश करितहि ओ स्थान फेरसँ ओहिना भरि गेल जेना किछु भेले नहि होइक। तकर बाद जानकीक किछु अता-पता नहि रहि गेलनि।

लव-कुश गबैत रहथि रामायण
ताबतमे भेल हाहाकार
फाटि गेल धरती
पता नहि कतए आ कोना
 बिला गेलीह जानकी
सभ देखितहि रहि गेलाह
अत्यन्त दुखी राजाराम
मुरी नीचाँ केने
कनैत रहि गेलाह
जानकी बेसक चलि गेलीह
मुदा अखनहु

मिथिलाक समस्त नर-नारी
छथि हतप्रभ
गाबि रहल छथि
दुखसँ भरल गीत
जानकीक वियोगमे
हुनकर स्मृतिमे
बनल अछि गामे-गाम
जानकी स्थान
हे जनकसुता क्षमा करू
हमसभ की कए सकब प्रतिकार
से की कहू
मुदा नहि करब बिआह अगहनमे
अपन कोनो बेटीक
नहि करबै ककरो बिआह ओमहर
अहाँक स्मृति
समस्त नारीक आत्मसम्मानक लेल
बनि जाएत दृष्टान्त
जुग-जुग धरि।

४५

जानकीक रसातल गमनक पश्चात राजाराम,लव-कुश,वाल्मीकि,वशिष्ठ आ ओहिठाम उपस्थित अनेक श्रेष्ठलोकनि जानकी दिस दौड़लाह। राजाराम चिचिआ उठलाह-

“हे जानकी! एना नहि करू । हमरा क्षमा करू। हम अपन वचन वापस लैत छी। अहाँ वापस आबि जाउ। “

राजाराम बड़बड़ाइत रहि गेलाह। जानकी आब अपन माएक कोरामे समाहित भए गेल छलीह। ओ मुक्त भए गेल छलीह समस्त कष्टसँ, दुबिधासँ आ अयोध्यावासीक छल-प्रपंचसँ।

मीथिलीपुत्र चिरञ्जीवीक संगे जानकीधुजावाहिनी लग जाइत छथि। ओ सभ हतप्रभ रहथि,बहुत उदास रहथि। हुनकर सभक मनोरथ

माटिमे मिलि गेल छलनि। हुनकासभकेँ होनि जेना जानकी असगरे नहि अपितु समस्त मीथिलावासीक संगे रसातलमे विलीन भए गेलथि। एतेक दिनसँ सभ किछु छोड़ि ओ सभ जानकीक चिंतामे लागल रहथि। हुनकर सभक प्रयास व्यर्थ भए गेल छलनि। मोन टूटि गेल छलनि। आब की करताह? हुनकर सभक मनःस्थितिकेँ बुझैत मैथिलीपुत्र कहैत छथिन-

"वंधुगण!

हमरा सभक आब एहिठाम रहब अर्थहीन भए गेल अछि । जानकी अपन नश्वर शरीर छोड़ि चुकल छथि। मुदा तेँ की? हम सभ चैनसँ नहि बैसब। आत्मसम्मान आ निष्ठासँ जीबाक हुनकर सनेसकेँ आबए बला पीढ़ीकेँ पहुँचबैत रहब। ताहि लेल हमसभ जानकी धाम वापस चली। ओतए जानकीक स्मृतिमे भव्य मंदिरक निर्माण करी जाहिसँ भावी पीढ़ी हुनकर त्याग आ निष्ठासँ प्रेरणा लए सकत। जानकीधुजावाहिनी हुनकर बात मानि जानकीधाम वापस आबि जाइत छथि ।

कहल जाइत अछि जे अखनहु माता जानकी मिथिलावासीक हृदयस्थलीमे ओहिना विद्यमान छथि आ हुनका लोकनिक प्रेरणा श्रोत बनल छथि। जानकी सन केओ ने भेल ने होएत । ओ मिथिलाक नारीक आत्मसम्मानक प्रतीक छथि। सभ तरहेँ पूजनीया छथि।

४६

अचानक एहन घटना घटि जाएत,देखिते-देखिते जानकी एना पृथ्वीमे समाहित भए जेतीह से के सोचि सकैत छल? भावी प्रबल होइत अछि सएह मानए पड़त। कालक प्रभावसँ के बाँचल अछि,राजा रामो नहि। ओ तँ स्वयं जानकीक हालतिसँ बहुत दुखी छलाह। जहिआसँ जानकी वनबास गेलीह ,हुनकर हृदय खंड-खंड भए गेल रहनि। तकर बाद सालक-साल ओ सुति नहि सकलाह, नहि भोगि सकलाह राज सुख। ओ मात्र अपन कर्तव्यक निर्वाह करैत रहि गेलाह। तीस वर्ष छओ मास धरि अयोध्याक राज केलाक बाद आब सभ किछु जबाब दए देलकनि। माथ-हाथ सभ किछु बैसि गेलनि। काल से आबि कए कानमे किछु कहि गेलनि-

“आब कतेक कष्ट सहब एहि देहमे। अहाँक काज पूर्ण भए गेल अछि । चलू अपन धाम । विष्णुलोक अहाँक स्वागत करबाक लेल आतुर अछि।“

लक्ष्मण द्वारिपर रखबारी कए रहल छलाह। राजारामक आदेश रहनि – “अखन केओ भीतर नहि आएत,यदि से भेल तखन अहाँकेँ मृत्युदंड होएत।“ओही समयमे दुर्वासा मुनिक आगमन भेलनि। ओ तुरंत राजाराम लग जेबाक लेल अड़ि गेलाह,अन्यथा श्राप देथिन, रघुकुलकेँ बरबादीक। लक्ष्मण सोचलाह-“दुर्वासाक श्रापसँ रघुकुलकेँ बचाएब बेसी जरुरी थिक,भने हमरा मृत्युदंड भए जाए।“ ओ राजारामक आदेशक विरुद्ध दुर्वासाकेँ राजाराम लग जेबाक अनुमति दए देलखिन। तकर स्वाभाविक परिणाम भेल लक्ष्मणकेँ राजाराम द्वारा मृत्युदंड। राजाराम एहि घटनाक्रमसँ बहुत परेसान भए गेलाह। ओ परामर्श लेल वशिष्ठ मुनि लग जाइत छथि।

“राजाराम लक्ष्मणसँ फराक रहताह। आब नहि हेतनि हुनका लोकनिक आपसी भेंट। तकरे मृत्युदंड मानल जाएत।“-वशिष्ठ कहलखिन। तकर बाद राजाराम लक्ष्मणक त्याग कए देलनि।

“रामसँ पृथक रहि हमर जीवनक कोनो अर्थ नहि अछि।”- लक्ष्मण सोचलाह । तकर बाद ओ सरयू कातमे प्राणायाम कए अपन प्राणत्याग कए देलनि। राजारामकेँ लक्ष्मणक मृत्यु असह भए गेलनि। ओ तँ पहिनेसँ परेसान रहबे करथि। तकर बाद जे भेल से की कहू?राजाराम, भरत आ शत्रुघ्न समस्त अयोध्यावासी समेत सरयू नदीमे समाहित भए गेलाह। गाछ-बिरछी,पशु-पक्षी,सभ किछु राजारामक अनुसरण करैत सरयूमे विलीन भए गेल। नहि रहल अयोध्यामे किछू बाँचल। राजारामक दुनू पुत्र आ भातिज सभ अपन-अपन राजधानी अयोध्या छोड़ि अन्यत्र बनओलथि। अयोध्यामे रहि की गेल?मात्र एकटा दुखद स्मृति।”

राजारामक दुखान्त जीवनमे सुखद मोड़ आएल हुनकर मृत्योपरांत। विष्णुलोकमे राम विष्णुक अवतारमे रहथि। ओतहि जानकी लक्ष्मीक रुपमे भेटलखिन-प्रफुल्लित,प्रसन्न आ सभ तरहेँ संतुष्ट।

जयतु जानकी!

(समाप्त)